वर्तनी-व्यवस्था

(Spelling System)

हम अपने विचारों का आदान-प्रदान दो प्रकार से करते हैं– बोलकर और लिखकर। बोलने के लिए हम अपने मुख से निकली ध्वनियों का प्रयोग करते हैं और लिखने के लिए लिपि का। इस प्रकार भाषा की दोनों पद्धतियाँ स्वतंत्र रूप से कार्य करती हैं, किंतु लिखित रूप की एक विशेषता यह है कि यह भाषा के मौखिक रूप को सुरक्षित रखता है।

उच्चारित शब्द के लेखन में प्रयुक्त लिपि चिह्नों के व्यवस्थित रूप को वर्तनी कहते हैं।

हिंदी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता, उच्चारण और वर्तनी की एकरूपता है। हिंदी में, जो मुँह से बोला जाता है, वही लिखा जाता है। जो लिखा जाता है, वही पढ़ा जाता है। हिंदी के उच्चारित और लिखित रूप में कोई भेद नहीं है। शुद्ध उच्चारण न करने के कारण वर्तनी की अशुद्धियाँ हो जाती हैं। शब्दों में ध्वनियों की निश्चित व्यवस्था होती है। इसी निश्चित व्यवस्था के अनुसार वर्णों को लिखने से वर्तनी की अशुद्धियाँ नहीं होंगी।

कुछ शब्दों को लिखते समय हम यांत्रिक रूप से अशुद्ध लिखते चले जाते हैं। किसी शब्द की वर्तनी मस्तिष्क में बैठ जाने पर, बिना सोचे-समझे उसे उसी रूप में लिखना यांत्रिक कहलाता है। जब तक वर्तनी की उस अशुद्धता की ओर कोई हमारा ध्यान आकर्षित न करे, तब तक हम उसके शुद्ध रूप को नहीं जान पाते।

आइए, सामान्य रूप से होने वाली कुछ अशुद्धियों के शुद्ध रूप देखें।

मात्रा-संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अवश्यक	आवश्यक	सामिग्री	सामग्री	कठनाई	कठिनाई
व्यवहारिक	व्यावहारिक	निरोग	नीरोग	हिंदूस्तान	हिंदुस्तान
अहार	आहार	बिमारी	बीमारी	गुरू	गुरु
नराज़	नाराज़	परचित	परिचित	छूआछूत	छुआछूत
अज़ाद	आज़ाद	अतिथी	अतिथि	वधु	वधू
बारात	बरात	पत्नि	पत्नी	नुपूर	नूपुर
एक्य	ऐक्य	ओद्योगिक	औद्योगिक	रितु	ऋतु
एच्छिक	ऐच्छिक	ऐसा	ऐसा	क्रिपण	कृपण
ऐनक	ऐनक	अलोकिक	अलौकिक	द्रिष्टि	दृष्टि
महिलाऐं	महिलाएँ	भोगौलिक	भौगोलिक	त्रितीय	तृतीय
दृष्टव्य	द्रष्टव्य	ग्रहणी	गृहिणी	स्रिष्टी	सृष्टि
आधीन	अधीन	ऐकिक	ऐकिक	खिलोना	खिलौना
अभीमान	अभिमान	एशवर्य	ऐश्वर्य	रुप	रूप
कुटम्ब	कुटुंब	लोकिक	लौकिक	प्रथक	पृथक

व्यंजन-संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
प्रगट	प्रकट	कोष्टक	कोष्ठक	प्रमान	प्रमाण
सुराक	सुराग	धोका	धोखा	प्रनाम	प्रणाम
शकुन	शगुन	पथ्थर	पत्थर	कल्यान	कल्याण
नचदीक	नज़दीक	झूट	झूठ	करुना	करुणा
सीदा-साधा	सीधा-सादा	ज्येष्ट	ज्येष्ठ	रामायन	रामायण
भूक	भूख	रावन	रावण	वर्नन	वर्णन
ठण्ढा	ठंडा	पुन्य	पुण्य	परिनाम	परिणाम
चिठ्ठी	चिट्ठी	किरन	किरण	प्रसंशा	प्रशंसा
बसंत	वसंत	बबंडर	बवंडर	कुसल	कुशल
बलबान	बलवान	नबाब	नवाब	विशेशण	विशेषण
नमश्कार	नमस्कार	वृहत	बृहत	विभीशन	विभीषण
जबाब	जवाब	बिबाह	विवाह	त्रिसूल	त्रिशूल
बाणी	वाणी	अनुसंशा	अनुशंसा	मुसकिल	मुश्किल
विधालय	विद्यालय	उधोग	उद्योग	धोतक	द्योतक
प्राथना	प्रार्थना	मूरती	मूर्ति	आर्शीवाद	आशीर्वाद
ब्रत	व्रत	सहस्त्र	सहस्र	आर्दश	आदर्श
अंतराष्ट्रीय	अंतर्राष्ट्रीय	कार्यकर्म	कार्यक्रम	छण	क्षण

संयुक्ताक्षर संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
उज्वल	उज्ज्वल	उपलक्ष	उपलक्ष्य	मध्यान्ह	मध्याह्न
बुद्धवार	बुधवार	व्यंग	व्यंग्य	कवियत्री	कवयित्री
कलपना	कल्पना	अध्यन	अध्ययन	द्वन्द	द्वंद्व
सन्यासी	संन्यासी	सन्मुख	सम्मुख	मँहगाई	महँगाई
संमान	सम्मान	शमशान	श्मशान	अतिश्योक्ति	अतिशयोक्ति
भ्रकुटि	भृकुटि	आन्नद	आनंद	प्रज्जवलित	प्रज्वलित
स्वास्थ	स्वास्थ्य	ज्योत्सना	ज्योत्स्ना	स्वालंबन	स्वावलंबन
निसंतान	निस्संतान	निर्दय	निर्दय	अदि्वतिय	अद्वितीय

समझ की परख

क. अशुद्ध शब्दों को ठीक करके वाक्यों को फिर से लिखिए–

1. आईये, अब घर चलें। ....
2. श्रीकृष्ण और सुदामा घनिष्ट मित्र थे। ....
3. आपकी कृपा के लिए मैं आपका अभारी हूँ। ....
4. महादेवी वर्मा प्रसिद्ध कवियात्री थीं। ....
5. मैं तुम्हारी गीदड़ भबकी से डरने वाला नहीं। ....
6. वह अपनी पत्नि के साथ आया है। ....

ख. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कीजिए–

पूंज्यनीय	....	ज्योत्सना	....	प्रीक्षा	....
कवियित्री	....	विषेश	....	स्वास्थ	....
आर्शीवाद	....	छण	....	सामिग्री	....
मृत्यू	....	प्रसंशा	....	जिग्यासु	....
प्रमात्मा	....	ज्योती	....	सौन्दर्यता	....
ब्राम्हन	....	अत्याधिक	....	श्रंगार	....

ग. अशुद्ध शब्दों को ठीक करके अनुच्छेद फिर से लिखिए–

उन्नती के पथ पर चलने वाला क्षात्र, प्रातकाल सूर्यदय से पूर्व ही उठ जाता है। नित्यक्रम से निवृत होकर वह अस्नान करता है। तत्पशचात् भगवान से प्राथना करता है कि वह सदा उसका पथपदर्शक रहे। इसके बाद व्यायाम करना उत्तम छार्त के लिए अवश्यक है। व्यायाम के बाद थोड़ा जलपन करना हितकार होता है। उसके बाद देनिक समाचार–पर्त भी देखन चाहीए ताकी सन्सार, देश, नगर तथा पडोस की गतीविधियों का परिचेय मिल जाए। इसका ग्यान न होने से कबी–कबी बड़ी हानी होती है।

घ. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप को सामने लिखिए–

1.	पूजनीय	पूज्यनीय	पुजनीय	पुज्यनीय	....
2.	कवयित्री	कवियित्री	कवियत्री	कवियित्रि	....
3.	श्रंगार	शृंगार	श्रृंगार	श्रिंगार	....
4.	जयोत्सना	ज्योत्सना	ज्योत्स्ना	ज्योतस्ना	....
5.	स्वास्थ्य	सवास्थ्य	स्वासथ्य	स्वास्थ्य	....
6.	प्रज्वलित	प्रज्ज्वलित	प्रजज्वलित	परज्ज्वलित	....
7.	अविष्कार	आविष्कार	आविषकार	आविश्कार	....
8.	सन्नयासी	संयासा	सन्यासी	संन्यासी	....

शब्द-विचार
(Morphology)

हम सभी अपने दैनिक जीवन में अपने भावों को बोलकर अथवा लिखकर प्रकट करते हैं। बोलते समय हमारे मुख से कुछ ध्वनियाँ निकलती हैं, जिन्हें 'वर्ण' कहते हैं। इन ध्वनियों के मेल से जो सार्थक इकाई बनती है उसके द्वारा ही हम अपनी बात दूसरों को समझा पाते हैं। यह सार्थक इकाई ही शब्द कहलाती है; जैसे–

र् + ए + ल् + अ + ग् + आ + ड़् + ई = रेलगाड़ी

प्रत्येक शब्द का अपना अर्थ होता है। व्याकरण में केवल सार्थक शब्दों का ही महत्व होता है। निरर्थक शब्दों या ध्वनियों के मेल द्वारा अपनी बात नहीं समझाई जा सकती। परंतु कई बार सार्थक शब्द के साथ निरर्थक शब्द जुड़कर अर्थ में विशेषता ला देते हैं; जैसे–

कुछ चाय-वाय हो जाए। — अटकल-पच्चु से काम नहीं होगा।

गलत-शलत मत बताओ। — जरा रूमाल-शुमाल पकड़ा दो।

शब्दों का वर्गीकरण

हिंदी भाषा का शब्द-भंडार विशाल सागर के समान है, जिसमें अन्य भाषाओं की शब्द रूपी नदियाँ आकर मिलती रहती हैं और इसे समृद्ध बनाती रहती हैं। भाषा कुछ शब्द स्वयं बनाती है तो कुछ शब्द अन्य भाषाओं से ग्रहण करती है। इसी आधार पर शब्दों का वर्गीकरण पाँच भागों में किया गया है–

1. स्रोत/उत्पत्ति के आधार पर शब्द
2. रचना/बनावट के आधार पर शब्द
3. प्रयोग के आधार पर शब्द
4. अर्थ के आधार पर शब्द
5. व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर शब्द

1. स्रोत/उत्पत्ति के आधार पर शब्द (Words based on Origin)

स्रोत/उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के पाँच भेद हैं– तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज और संकर शब्द।

(क) तत्सम शब्द (Sanskrit Words)– संस्कृत से हिंदी में आए वे शब्द जो हिंदी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे–

अक्षर	अंकुर	अधीन	अध्यक्ष	आक्रमण	आरंभ
आश्चर्य	ईर्ष्या	उत्सव	ऋतु	कनिष्ठ	कवि
कार्य	केश	गति	चंचल	चतुर	चिन्ता
ज्वर	जन्म	जीवन	ताप	दक्षिण	दया
दान	देवता	धन्यवाद	धर्म	धातु	नगर
नियम	प्राण	प्रातः	पिता	बंधु	बुद्धि
भक्ति	मन	मस्तक	मस्तिष्क	महिला	मुक्ति
योग	रक्षा	वसंत	विचार	विज्ञान	विद्या
विवेक	विश्वास	शिक्षा	संध्या	सत्य	समुद्र

(ख) तद्भव शब्द (Modified Words)— संस्कृत के वे शब्द जिनका हिंदी तक आते-आते रूप परिवर्तित हो जाता है तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे–

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अगम्य	अगम	अंधकार	अँधेरा	आश्चर्य	अचरज
अट्टालिका	अटारी	अमूल्य	अमोल	अंगुष्ठ	अँगूठा
आम्रचूर्ण	अमचूर	अक्षि	आँख	अश्रु	आँसू
अग्नि	आग	अर्ध	आधा	उत्थान	उठान
आम्र	आम	एकत्र	इकट्ठा	उज्ज्वल	उजला
अंगुली	उँगली	उच्च	ऊँचा	कर्ण	कान
कार्य	काज	कुंभकार	कुम्हार	काक	कौआ
कूप	कुआँ	कोकिल	कोयल	क्षीर	खीर
क्षेत्र	खेत	ग्रंथि	गाँठ	क्षत्रिय	खत्री
ग्राम	गाँव	घृत	घी	ग्राहक	गाहक
चंद्र	चाँद	चंद्रिका	चाँदनी	गृह	घर
चूर्ण	चून	ज्येष्ठ	जेठ	चर्म	चाम
जिह्वा	जीभ	दक्षिण	दक्खिन	छिद्र	छेद
तृण	तिनका	दुर्बल	दुबला	योगी	जोगी

(ग) देशज शब्द (Native Words)— जो शब्द भारत की विभिन्न बोलियों से हिंदी में आए हैं या आवश्यकता पड़ने पर गढ़ लिए हैं, उन्हें देशज शब्द कहते हैं; जैसे–

कपास	परवल	बाजरा	भिंडी	मिर्च	चिकना
चूड़ी	ताला	मुकुट	डोसा	इडली	साँभर
खचाखच	खटपट	चिड़चिड़ा	खलबली	चटपटा	चाट
चुटकी	छिछला	पटाखा	पापड़	भोंपू	घुड़की
खुरचन	कटकटाना	ठठेरा	झंकार	टंकार	धमक

(घ) विदेशी शब्द (Foreign Words)— जो शब्द विदेशी भाषाओं से हिंदी में आए हैं, उन्हें विदेशी शब्द कहते हैं; जैसे–

(i) अरबी शब्द– असर, इरादा, इशारा, ईमान, किताब, एहसान, खत्म, जिला, तहसील, नकद, बुनियाद, मज़हब, मुसलमान, मुल्ला, साफ़, हकीम, हलवाई आदि।

(ii) फ़ारसी शब्द– अगर, आबरू, आराम, आफ़त, आमदनी, आवारा, आसमान, आईना, उस्ताद, कारीगर, कुरता, खुश, गंदा, गवाह, चालाक, जुकाम, तेज़, दफ़्तर, दवा, दरवाज़ा, दीवार, दलाल, पाजामा, बुखार, बदहज़मी, बरामदा, बेकार, मकान, मेहनत, मज़दूर, मुश्किल, साल, समोसा आदि।

(iii) तुर्की शब्द– काबू, कैंची, खंजर, चाकू, चेचक, चिक, चम्मच, तोप, दरोगा, बारूद, बहादुर, लाश, सराय आदि।

(iv) अंग्रेज़ी शब्द– अपील, ऑफ़िसर, ऑपरेशन, इंजन, कोट, कोर्ट, जज, पैंट, पेंट, पैंसिल, वोट, नोट, पैन, कॉपी, पेपर, स्कूल, कॉलेज, डॉक्टर, नर्स, हॉस्पिटल, वार्ड, टैक्स, पेंशन, ब्लाउज, बिस्कुट, टॉफ़ी, केक, टोस्ट, चॉकलेट, ट्रेन, बस, मोटर, बैटरी, पुलिस, टेलीफ़ोन, कैमरा, टाई, सीमेंट, टायर, आलपिन, कप, प्लेट, थर्मस, जूस, टिकट, कर्फ़्यू, कॉलर, कूपन, बोर्ड , टैक्सी, कार, बटन, फ़ाइल, स्विच, प्लग, लैंप, मशीन आदि।

(v) अन्य भाषाओं के शब्द–बम (डच): मिग, स्पूतनिक (रूसी); चाय, लीची (चीनी); रिक्शा (जापानी) अंग्रेज़, काजू, कारतूस (फ्रेंच); अलमारी, कमरा, कनस्तर, कप्तान, गमला, गोदाम, चाबी, तौलिया, बालटी, संतरा, साबुन (पुर्तगाली)।

विशेष– हिंदी में दो भाषाओं से बने कुछ शब्दों का प्रयोग भी किया जा रहा है। ऐसे शब्दों को संकर शब्द कहते हैं।

(ङ) संकर शब्द (Combined Words)– ऐसे शब्द जो दो भाषाओं के मेल से बने हों, संकर शब्द कहलाते हैं। उदाहरण–

फ़ारसी	+	हिंदी	–	बे	+	डौल	=	बेडौल
हिंदी	+	अंग्रेज़ी	–	लाठी	+	चार्ज	=	लाठीचार्ज
अरबी	+	अंग्रेज़ी	–	बीमा	+	पॉलिसी	=	बीमा पॉलिसी
संस्कृत	+	हिंदी	–	वर्ष	+	गाँठ	=	वर्षगाँठ
अंग्रेज़ी	+	हिंदी	–	टिकट	+	घर	=	टिकटघर
हिंदी	+	फ़ारसी	–	छाया	+	दार	=	छायादार
अरबी	+	फ़ारसी	–	तहसील	+	दार	=	तहसीलदार
जापानी	+	हिंदी	–	रिक्शा	+	चालक	=	रिक्शाचालक
हिंदी	+	संस्कृत	–	माँग	+	पत्र	=	माँगपत्र

2. रचना/बनावट के आधार पर शब्द (Words based on Structure)

रचना/बनावट के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं– रूढ़ शब्द, यौगिक शब्द और योगरूढ़ शब्द।

(क) रूढ़ शब्द (Original Words)– वे शब्द जिनके सार्थक खंड नहीं किए जा सकते, रूढ़ शब्द कहलाते हैं; जैसे– हाथी, घोड़ा, चाँद, मेज़, छत, द्वार, सेवा, फल आदि।

(ख) यौगिक शब्द (Compound Words)– जब रूढ़ शब्द में कोई अन्य सार्थक शब्द या शब्द खंड जुड़ जाता है तो इस प्रकार बने शब्द को यौगिक शब्द कहते हैं; जैसे–

सह	+	पाठी	=	सहपाठी	राज	+	पुरुष	=	राजपुरुष
कृपा	+	आलु	=	कृपालु	स्नान	+	गृह	=	स्नानगृह
आराम	+	घर	=	आरामघर	पुस्तक	+	आलय	=	पुस्तकालय

(ग) योगरूढ़ शब्द (Conventional Compound Words)– जो यौगिक शब्द किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाते हैं, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं; जैसे–

योगरूढ़ शब्द	शाब्दिक अर्थ	विशेष अर्थ
जलज	जल में पैदा होने वाला	कमल
दिनकर	दिन करने वाला	सूरज
चारपाई	चार पैरों वाली	खाट
निशाचर	रात में घूमने वाला	राक्षस

3. **प्रयोग के आधार पर शब्द (Words based on Uses)**

भाषा में प्रयोग के आधार पर शब्दों को दो भागों में विभाजित किया गया है– (क) सामान्य शब्द (ख) तकनीकी शब्द।

(क) सामान्य शब्द (Normal Words)– वे शब्द जिनको हम सभी दैनिक जीवन में आम बोलचाल के लिए प्रयोग में लाते हैं, सामान्य शब्द कहलाते हैं। इनका अर्थ कोई भी आसानी से समझ लेता है; जैसे– घर, कपड़ा, रोटी, किताब, खाना, पानी, कमरा, नदी आदि।

(ख) तकनीकी शब्द (Technical Words)– वे शब्द जिनका संबंध विभिन्न विषयों, व्यवसायों, विज्ञान आदि से होता है, वे तकनीकी शब्द कहलाते हैं; जैसे–

विषय	प्रशासन	विज्ञान
संज्ञा, सर्वनाम	सचिव (Secretary)	रसायन (Chemical)
विशेषण, क्रिया	कनिष्ठ (Junior)	कोशिका (Cell)
लिंग, वचन	वरिष्ठ (Senior)	जीवाश्म (Fossil)
समुच्चयबोधक	निदेशालय (Directorate)	जीव विज्ञान (Biology)
विराम-चिह्न	प्रभाग (Unit)	संश्लेषण (Synthesis)

4. **अर्थ के आधार पर शब्द (Words based on Meaning)**

अर्थ के आधार पर शब्दों के कई भेद होते हैं, जिनमें से मुख्य इस प्रकार हैं–

- पर्यायवाची शब्द
- अनेकार्थक शब्द
- समरूप भिन्नार्थक शब्द
- शब्द-युग्म
- विविध शब्द
- विलोम शब्द
- एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द
- वाक्यांश के लिए एक शब्द
- समूहवाची एवं ध्वनिबोधक शब्द

5. **व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर शब्द (Words based on Grammatical Functions)**

व्याकरण की दृष्टि से भाषा में प्रयोग किए जाने वाले शब्दों को दो भागों में बाँटा गया है– विकारी शब्द और अविकारी शब्द।

(क) विकारी शब्द (Declinable Words)– विकार या परिवर्तन। जो शब्द वाक्य में प्रयोग किए जाने पर लिंग, वचन, कारक, काल के कारण अपना रूप बदल लेते हैं, वे विकारी शब्द कहलाते हैं।

इनके चार भेद हैं–

- संज्ञा– बच्चा, बच्चे, बच्चों आदि।
- सर्वनाम– वह, वे, उनका, उन्होंने आदि।
- विशेषण– मोटा-मोटी, ऊँचा-ऊँची आदि।
- क्रिया– आता है, आते हैं, आएँगे, आए थे आदि।

(ख) अविकारी शब्द (Indeclinable Words)– अ + विकारी यानी जिसमें परिवर्तन न हो। जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता, वे अविकारी शब्द कहलाते हैं। ये मूल रूप में ही प्रयोग किए जाते हैं। इनके पाँच भेद होते हैं–

- क्रियाविशेषण–धीरे-धीरे, बाहर, जल्दी आदि।
- संबंधबोधक– से पहले, के बाद, के साथ आदि।
- समुच्चयबोधक– किंतु, परंतु, अथवा, और आदि।
- विस्मयादिबोधक– अरे! ओह! वाह! क्या! आदि।

मुख्य बातें–

- ध्वनियों के मेल से बनी सार्थक इकाई शब्द कहलाती है।
- शब्दों का वर्गीकरण पाँच भागों में किया जाता है।
  (I) स्रोत/उत्पत्ति के आधार पर
  (ii) रचना/बनावट के आधार पर
  (iii) प्रयोग के आधार पर
  (iv) अर्थ के आधार पर
  (v) व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर

समझ की परख

क. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. तकनीकी शब्द किन्हें कहते हैं?
2. विकारी शब्द कौन-से हैं?
3. अविकारी शब्द किन्हें कहते हैं?
4. देशज शब्द किन्हें कहते हैं?
5. शब्दों का वर्गीकरण किन आधारों पर किया जाता है?
6. यौगिक और योगरूढ़ शब्दों में क्या अंतर है?

ख. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्दों से कीजिए–

1. जो यौगिक शब्द विशेष अर्थ का बोध कराते हैं, उन्हें .... कहते हैं। (रूढ़, योगरूढ़)
2. विद्यालय .... शब्द है। (यौगिक, रूढ़)
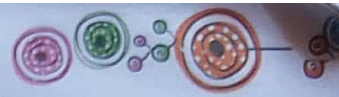
3. विकारी शब्द का रूप .... है। (बदलता, नहीं बदलता)
4. संस्कृत के वे शब्द, जिनका प्रयोग हिंदी में ज्यों का त्यों होता है, ... शब्द कहलाते हैं। (तद्भव, तत्सम)
5. .... विकारी शब्द हैं। (पुस्तक, मोहन, और, गया, धीरे-धीरे, अब, वह, अच्छा)

ग. ये शब्द किस-किस भाषा के शब्दों के मेल से बने हैं–

1. टिकटघर = ... + ...
2. रिक्शाचालक = ... + ...
3. तहसीलदार = ... + ...
4. वर्षगाँठ = ... + ...
5. लाठीचार्ज = ... + ...

घ. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्द छाँटकर उनकी अलग-अलग सूची बनाइए–

संतरा	झंकार	कोयल	उत्सव	चाट	खीर	संध्या	माँ	विज्ञान	कवि
विवेक	खेत	ठठेरा	चम्मच	मज़दूर	इडली	दूध	प्राण	शिक्षा	माथा
मिर्च	किताब	आग	ताला	स्टेशन	पेंसिल	चूड़ी	टिकट		

तत्सम ....

तद्भव ....

देशज ....

विदेशी ....

ङ. सही उत्तर को सामने लिखिए–

1. हिंदी भाषा में प्रयोग होने वाले वे शब्द जो संस्कृत शब्दों से बने हैं, क्या कहलाते हैं?
   अ. तत्सम ब. देशज स. तद्भव ....
2. 'दुर्बल' शब्द का तद्भव है–
   अ. कमज़ोर ब. पतला स. दुबला ....
3. हिंदी भाषा में प्रयोग होने वाले वे शब्द जो दो भाषाओं के मेल से बने हों, क्या कहलाते हैं?
   अ. देशज ब. संकर स. विदेशज ....

समानार्थी या पर्यायवाची शब्द

(Synonyms)

समानार्थी या पर्यायवाची शब्द–समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को **समानार्थी** या **पर्यायवाची** कहते हैं।

पिक, श्यामा, कोकिल, वनप्रिया, वसंत दूत

रवि, भानु, दिनेश, दिनकर, दिवाकर, प्रभाकर

पर्यायवाची शब्दों के अन्य उदाहरण निम्नलिखित हैं–

1. **अनुपम** – अपूर्व, अनोखा, निराला, अनूठा, अभूतपूर्व, अद्वितीय।
2. **अमृत** – सुधा, सोम, अमिय, पीयूष।
3. **अहंकार** – दर्प, दंभ, गर्व, घमंड, अभिमान।
4. **आकाश** – नभ, शून्य, गगन, अंबर, व्योम, अनंत, अंतरिक्ष।
5. **आँख** – दृग, नेत्र, नयन, चक्षु, अक्षि, दृष्टि, लोचन, विलोचन।
6. **ईश्वर** – प्रभु, ईश, भगवान, परमात्मा, दीनबंधु, परमेश्वर, जगदीश।
7. **इंद्र** – देवेंद्र, सुरेंद्र, सुरेश, देवेश, पुरंदर, सुरपति, देवराज।
8. **अंग** – तन, शरीर, काया।
9. **अंधकार** – तम, तिमिर, अँधेरा, तमिस्र, ध्वांत।
10. **अग्नि** – आग, अनल, पावक, कृशानु, ज्वाला, हुताशन, वह्नि, दहन।
11. **अरण्य** – वन, जंगल, कानन, विपिन।
12. **अतिथि** – पाहुना, मेहमान, आगंतुक, अभ्यागत।
13. **आनंद** – हर्ष, मोद, खुशी, प्रमोद, उल्लास, प्रसन्नता।
14. **अनुचर** – दास, भृत्य, सेवक, नौकर, परिचारक।
15. **उद्यान** – बाग, उपवन, वाटिका, बगीचा, चमन, गुलशन, बगिया, फुलवारी, कुसुमाकर।

16. उन्नति – उदय, उत्कर्ष, प्रगति, विकास, उत्थान, उन्नयन, उन्मेष, तरक्की, अभ्युदय।
17. किरण – अंशु, कर, रश्मि, मरीचि।
18. कपड़ा – पट, चीर, अंबर, वस्त्र, वसन, परिधान।
19. कामदेव – मदन, मनोज, कंदर्प, अनंग, मन्मथ, काम, पंचवाण, रतिनाथ, कंदर्प, कुसुमवाण, कुसुमधन्वा।
20. कान – कर्ण, श्रवण, श्रुतिपट, श्रवणेंद्रिय।
21. कमल – नीरज, राजीव, सरोज, पंकज, जलज, पद्‌म, अंबुज, अरविंद, शतदल, सरसिज।
22. किनारा – कूल, तट, तीर, पुलिन, कगार।
23. कुसुम – फूल, पुष्प, सुमन, प्रसून।
24. कुबेर – धनद, धनपति, यक्षराज।
25. कोयल – पिक, कोकिल, श्यामा, वसंतदूत, वनप्रिया।
26. कोष – निधि, खज़ाना, भंडार।
27. खल – धूर्त, अधम, नीच, दुष्ट, दुर्जन, कुटिल।
28. गहना – आभूषण, अलंकार।
29. चंद्रमा – इंदु, विधु, सोम, शशि, मयंक, राकेश, शशांक, हिमांशु, सुधाकर।
30. जंगल – वन, कानन, विपिन, अरण्य।
31. जन्म – उद्‌भव, उत्पत्ति, आविर्भाव।
32. तरु – वृक्ष, पेड़, द्रुम, बूटा, विटप, पादप, दरख्त।
33. तारा – नक्षत्र, तारक, तारिका।
34. तालाब – सर, ताल, तड़ाग, पोखर, मानस, सरोवर, पुष्कर, ज़लाशय, मानसरोवर।
35. देवता – सुर, देव, अमर।
36. दुर्गा – चंडी, काली, जगदंबा, कल्याणी, महागौरी, सिंहवाहिनी।
37. दुख – कष्ट, क्लेश, पीड़ा, वेदना।
38. दूध – दुग्ध, क्षीर, पय, गोरस, पीयूष, स्तन्य।
39. दुष्ट – धूर्त, शठ, दुर्जन, कुटिल।
40. धनुष – चाप, कमान, धन्वा, कोदंड, पिनाक, शरासन।
41. नारी – स्त्री, अबला, ललना, रमणी, वनिता, महिला, औरत, कामिनी।
42. पत्ता – पर्ण, पत्र, दल।

43. पर्वत – शैल, अचल, मेरु, गिरि, भूधर, नग, पहाड, महीधर।
44. पत्नी – भार्या, स्त्री, प्रिया, कांता, वामा, दारा, बीवी, औरत, गृहिणी, सहधर्मिणी, अर्द्धांगिनी।
45. पक्षी – खग, विहग, विहंग, नभचर, पखेरू, शकुनि, द्विज, विहंगम।
46. पवन – वात, वायु, हवा, बयार, समीर, मारुत, अनिल।
47. पार्वती – सती, दुर्गा, गौरी, उमा, शैलजा, गिरिजा, अंबा, भवानी, शिव-पटरानी।
48. पृथ्वी – भूमि, भू, धरा, धरती, अवनि, वसुंधरा, सुरपति, ज़मीन।
49. बिजली – चंचला, चपला, तड़ित, विद्युत, दामिनी, सौदामिनी।
50. बुद्धि – धी, मति, मेधा, प्रज्ञा, विवेक, मनीषा।
51. ब्राह्मण – विप्र, द्विज, भूदेव।
52. ब्रह्मा – विधि, स्रष्टा, विधाता, प्रजापति, चतुरानन।
53. बेटा – सुत, पुत्र, पूत, तनय, तनुज, लड़का, कुमार, आत्मज
54. मदिरा – मधु, सुरा, मद्य, शराब।
55. मछली – मीन, शफरी, मत्स्य।
56. मुक्ति – मोक्ष, निर्वाण, ब्रह्मपद, कैवल्य।
57. युद्ध – रण, समर, संघर्ष, द्वंद्व, संग्राम।
58. सूर्य – रवि, भानु, दिनेश, अरुण, सविता, मिहिर, भास्कर, दिनकर, दिवाकर, प्रभाकर।
59. राजा – नृप, भूप, नरेंद्र, महीप, भूपति।
60. रात्रि – रैन, रात, निशा, यामा, राका, रजनी, यामिनी, कादंबरी, विभावरी।
61. रावण – लंकापति, दशकंधर, दशानन।
62. राक्षस – असुर, दनुज, दैत्य, देवरिपु, निशाचर, रात्रिचर, रजनीचर।
63. लक्ष्मी – श्री, कमला, चंचला, सिंधुना, विष्णुप्रिया, इंदिरा, हरिप्रिया।
64. सरस्वती – श्री, गिरा, शारदा, भारती, वाक्, वाग्देवी, वाङ्मयी, हंसवाहिनी, वीणापाणि।
65. सिंह – शेर, केसरी, मृगराज, वनराज।
66. हाथी – कर, गज, नग, दंती, हस्ती, मतंग, कुंजर, द्विरद, रायनंद।
67. हिरण – मृग, सारंग, कुरंग, हरिण।
68. विष्णु – हरि, गोविंद, चतुर्भुज, नारायण, केशव, लक्ष्मीपति, शंखधर, रमाकांत, रमेश।
69. शिव – महेश, शंकर, त्रिनेत्र, महादेव, आशुतोष, चंद्रशेखर, गंगाधर, नटराज, नीलकंठ।
70. शरीर – देह, तन, तनु, गात, काया, जिस्म, कलेवर।

समझ की परख

क. दिए गए शब्दों के सही पर्यायवाची पहचानिए और गलत पर गोला लगाइए–

1. पृथ्वी–
   अ. भूमि　　ब. धरा　　स. ज़मीन　　द. गगन
2. पर्वत–
   अ. शैल　　ब. अचल　　स. मेरु　　द. पय
3. हाथी–
   अ. कुंजर　　ब. कुसुम　　स. गज　　द. नग
4. हिरण–
   अ. मृग　　ब. सारंग　　स. मारुत　　द. कुरंग
5. कामदेव–
   अ. मदन　　ब. मनोज　　स. कंदर्प　　द. दीनबंधु
6. तालाब–
   अ. जलाशय　　ब. पादप　　स. सरोवर　　द. तड़ाग
7. इंद्र–
   अ. सुरेश　　ब. देवेश　　स. देवेंद्र　　द. परमात्मा
8. अमृत–
   अ. सुधा　　ब. हलाहल　　स. पीयूष　　द. सोम
9. अग्नि–
   अ. अनिल　　ब. पावक　　स. ज्वाला　　द. आग
10. चंद्रमा–
   अ. सोम　　ब. शशि　　स. विधु　　द. दिवाकर

ख. दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए–

1. अतिथि – ....
2. कान – ....
3. गहना – ....
4. पार्वती – ....
5. धनुष – ....

6. शिव – ....
7. सिंह – ....
8. नारी – ....
9. पेड़ – ....
10. शरीर – ....

ग. निम्नलिखित वाक्यों में मोटे छपे शब्दों के पर्यायवाची लिखकर वाक्य दुबारा लिखिए–

1. माँ की **आँखों** में **पानी** भर आया।

   ....

2. जंगल में फलों के खूब **पेड़** थे।

   ....

3. राजा ने **ब्राह्मण** को दरबार में बुलाया।

   ....

4. **सिंह** की गर्जना से सब डर गए।

   ....

5. ठंडी-ठंडी **हवा** चल रही थी कि अचानक **बिजली** चमकने लगी।

   ....

6. **लक्ष्मी विष्णु** जी की **पत्नी** हैं।

   ....

7. **अंबर** में **खग** उड़ रहा है।

   ....

8. **उपवन** में **कोकिल** गा रही है।

   ....

अनेकार्थी शब्द
(Words with Various Meanings)

अनेकार्थी शब्द–जो शब्द एक से अधिक अर्थ प्रदान करते हैं, उन्हें **अनेकार्थी शब्द** कहते हैं।

जैसे–पत्र के अनेकार्थी हैं–पत्ता, चिट्ठी, पंख।

हिंदी के कुछ अनेकार्थी शब्द इस प्रकार हैं–

1. **अधर** – निचला होंठ, अंतरिक्ष।
2. **अलि** – भँवरा, कोयल, कुत्ता, मदिरा, बिच्छू।
3. **अमर** – देवता, शाश्वत, न मरने वाला।
4. **अंकन** – लिखना, चित्र बनाना, गिरना।
5. **अर्घ्य** – पूजनीय, बहुमूल्य, भेंट देने योग्य, पूजा में देने योग्य।
6. **अंध** – नेत्रहीन, असावधान, मूर्ख, उन्मत्त।
7. **अक्षर** – आकाश, मोक्ष, ईश्वर, अ से ह तक वर्ण।
8. **अंबर** – वस्त्र, आकाश, बादल, एक सुगंध विशेष।
9. **अर्क** – आक का पौधा, सूर्य का रस।
10. **अनंत** – विष्णु, अंतहीन, आकाश, अविनाशी, ईश्वर।
11. **अंतर** – दूरी, हृदय, व्यवधान।
12. **अर्थ** – धन, मतलब, व्याख्या, प्रयोजन, कारण।
13. **अग्नि** – आग, पाचन शक्ति, पूर्व तथा दक्षिण के बीच का कोण।
14. **अद्वैत** – एकाकी, अनुपम।
15. **आँख** – नेत्र, नज़र, विचार, परख, कृपा-दृष्टि, संतान।
16. **आकाश** – नभ, शून्य स्थान।
17. **आग** – अग्नि, जलन, प्रेम, ईर्ष्या, बहुत गरम।
18. **आदि** – प्रारंभ, परमेश्वर, वगैरह।
19. **आराम** – सुख, चैन, विश्राम, बगीचा, रोग का दूर होना।
20. **आदर्श** – व्याख्या, दर्पण, जिसका अनुकरण किया जा सके।
21. **ईश** – शिव, राजा, स्वामी, ईश्वर।

22. इष्ट – वांछित, पूजित।
23. इंद्र – ऐश्वर्यवान, श्रेष्ठ, एक देवता, सूर्य, राजा, जीव, मालिक।
24. उग्र – तेज, विष्णु, सूर्य, एक संकर जाति।
25. उत्सर्ग – दान, त्याग, समाप्ति।
26. कर्ण – कान, कुंती पुत्र कर्ण, पतवार, त्रिभुज के समकोण के सामने की भुजा।
27. कृष्ण – काला, श्यामसुंदर।
28. कनक – गेहूँ, सोना, धतूरा।
29. कर – हाथ, सूँड़, क्रिया, टैक्स, करना, किरण।
30. कल – शोर, मधुर स्वर, मशीन, बीता हुआ दिन, आने वाला दिन।
31. कलश – घड़ा, चोटी/सिरा, मंदिर आदि का शिखर।
32. काम – इच्छा, कार्य, वासना, कामदेव, व्यवसाय, कारीगरी।
33. काल – समय, मृत्यु, अवसर, अकाल, शिव का एक नाम, यमराज, व्याकरण का एक भाग।
34. कुंजर – बाल, हाथी।
35. खग – पक्षी, बाण, गंधर्व, आकाश (सूर्य, चंद्र, ग्रह, तारे आदि)।
36. खर – तेज, गधा, कौआ, सख्त, अशुभ, बगुला, खट्टा, खच्चर, तिनका, एक राक्षस का नाम।
37. खाना – जगह, घर, स्थान, भोजन, डसना, कष्ट देना, घूस लेना, सहन।
38. गति – मोक्ष, चाल, दशा।
39. ग्रहण – दोष, लेना, सूर्य-चंद्र ग्रहण।
40. गुरु – श्रेष्ठ, बड़ा, भारी, अध्यापक, दो मात्राओं वाला वर्ण।
41. गौ – पृथ्वी, गाय, इंद्रियाँ।
42. गरिमा – घमंड, गुरुत्व, भारीपन, गौरव।
43. गहना – अलंकार, ज़ेवर आभूषण।
44. घट – घड़ा, शरीर, मन, कम।
45. घोष – नाद, अहीर, आवाज़, गरजन, नारा।
46. चपला – लक्ष्मी, बिजली चंचला, विद्धत।
47. चक्र – चक्की, पहिया, चक्कर, पानी का भँवर, कुम्हार का चाक, राजकीय पदक (परमवीर चक्र)।

48. चाँद – चंद्रमा, एक गहना, खोपड़ी का मध्य भाग।
49. चित्रा – सत्ताईस नक्षत्रों में से एक, खीरा या ककड़ी।
50. चिरंतन – पुरातन, शाश्वत।
51. छंद – वेद, पद्य, बंधन, एकांत, पत्ती, छंदशास्त्र, अभिलाषा।
52. जड़ – मूर्ख, अचेतन, वृक्ष का मूल।
53. जेठ – एक महीना, पति का बड़ा भाई।
54. जगत – वायु, शिव, जंगम, संसार।
55. जन्म – आयु, जीवन, उत्पत्ति, आविर्भाव।
56. जलधर – बादल, समुद्र।
57. जलद – कपूर, जल देने वाला बादल।
58. जीवन – जल, प्राण, वायु, ज़िंदगी।
59. जेल – कारागार, बंदीगृह, जंजाल, परेशानी।
60. तात – पुत्र, भाई, मित्र, प्रिय, पिता, पूज्य।
61. तीर – तट, बाण, किनारा।
62. ताप – धूप, अग्नि, गरमी, साधना।
63. थोथा – निसार, खोखला, निकम्मा।
64. थाती – धन, धरोहर, अमानत।
65. दल – पत्र, सेना, पंखुड़ी, समूह।
66. दर्शन – नेत्र, आकृति, दर्शनशास्त्र, देखना।
67. दंड – डंडा, सज़ा, डंठल, व्यायाम का एक प्रकार।
68. दक्षिण – दाहिना, अनुकूल, दक्षिण दिशा।
69. दंडी – शिव, राजा, दंड धारण करने वाला, संन्यासी, यमराज, द्वारपाल।
70. ध्रुव – प्रसिद्ध बाल तपस्वी, स्थिर, अचल, निश्चित, ध्रुवतारा।
71. ध्वज – झंडा, चिह्न, पताका।
72. नाक – स्वर्ग, नासिका, सम्मान।
73. नाग – सर्प, हाथी।
74. नग – वृक्ष, पर्वत।
75. निशान – डंका, चिह्न, ध्वजा।

76. निशाचर – उल्लू, राक्षस।
77. पक्ष – पंख, सहायक, पंद्रह दिन (पखवाड़ा)।
78. पतंग – सूर्य, पक्षी, नौका, एक कीड़ा, आकाश में उड़ने वाला खिलौना।
79. पत्र – पंख, पत्ता, पृष्ठ, चिट्ठी।
80. पृष्ठ – पीठ, पन्ना, पीछे का भाग।
81. पूर्व – पहले, एक दिशा का नाम।
82. प्रसाद – हर्ष, कृपा, अनुग्रह।
83. पंथ – रास्ता, रीति, मत/संप्रदाय।
84. फल – लाभ, प्रभाव, नतीजा, परिणाम, अस्त्र की धार।
85. ब्रह्म – वेद, तपस्या, ईश्वर, ब्राह्मण, सच्चिदानंद।
86. बल – सेना, शक्ति, बलराम।
87. बलि – उपहार, बलिदान, राजा बलि का नाम।
88. बाण – स्वर्ग, शर/तीर, निशाना, गाय का थन, पाँच की संख्या।
89. भव – शंकर, संसार, उत्पत्ति।
90. भूत – जीव, शव, प्रेत, प्राणी, पंचमहाभूत, बीता हुआ समय।
91. भगवती – देवी, सरस्वती, दुर्गा, गंगा।
92. भक्षक – भोजन करने वाला, स्वार्थ के लिए सर्वनाश करने वाला।
93. भेद – फूट, रहस्य, प्रकार।
94. भोग – खाना, प्रारब्ध, सुख-दुख का भाव।
95. भीम – शिव, विष्णु, बहुत बड़ा, भयानक, पंच पांडवों में से एक।
96. मित्र – सखा, दोस्त, साथी, सूरज।
97. मद – हर्ष, शहद, घमंड, शराब।
98. रक्त – खून, कुमकुम, कमल, सिंदूर, लाल-रंग, रँगा हुआ।
99. रंक – दरिद्र, कृपण, आलसी, भिक्षुक।
100. लाल – पुत्र, बच्चा, एक रत्न, श्री कृष्ण, लाल रंग।
101. वर्ण – अक्षर, जाति, रंग, चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र)।
102. वर – वरदान, दूल्हा, श्रेष्ठ, उत्तम, पति।
103. वंश – कुल, रीढ़, गन्ना, बाँसुरी, शहतीर।

104 स्नेह – एक राग का नाम, कोमलता, प्रेम, चिकना पदार्थ।
105. सूत – धागा, सारथी।
106. सोना – शयन, स्वर्ण।
107. संसार – जगत्, मृत्युलोक, आवागमन, मायाजाल।
108. हरि – सूर्य, इंद्र, सर्प, सिंह, घोड़ा, बंदर, विष्णु।
109. हर – शिव, हरण करना।
110. हंस – सूर्य, न्यायशील, एक पक्षी विशेष।
111. शिव – महादेव, कल्याणकारी, मंगल, भाग्यशाली।
112. शारदा– दुर्गा, सरस्वती, एक प्रकार की वीणा, एक प्राचीन लिपि।
113. श्री – लक्ष्मी, शोभा, चंदन, चमक, कुबेर, संपत्ति।
114. शिक्षा – पाठ, सबक, विद्या, उपदेश, एक वेदांग, परामर्श।

समझ की परख

क. रेखांकित शब्द को ध्यान से देखिए और उसकी जगह सही अर्थ का प्रयोग करके वाक्य पुनः लिखिए–

1. आजकल कनक बहुत महँगा हो गया है।

....

2. नीलिमा पीले अंबर पहनकर विद्यालय आई है।

....

3. अक्षर में बादल छाए हुए हैं।

....

4. मंदिर पर बने घड़े सूर्य की किरणों से चमक उठे थे।

....

5. रोता हुआ बच्चा माँ के अंक में आते ही शांत हो गया।

....

6. पक्षियों ने उड़ने के लिए अपने-अपने पत्र फैलाए।

....

7. पतंग उगते ही पक्षी अपने नीड़ से बाहर आकर दाने की तलाश में उड़ जाते हैं।

....

ख. दिए गए शब्दों के दो-दो अनेकार्थी लिखिए–

आकाश – ....
अलि – ....
खग – ....
तीर – ....
भूत – ....
पतंग – ....
गुरु – ....
आदि – ....

कर – ....
अक्षर – ....
जड़ – ....
थाती – ....
पंथ – ....
ध्रुव – ....
कर्ण – ....
कल – ....

ग. दिए गए शब्द समूहों में से उस शब्द को चुनकर (○) लगाइए, जिसका संबंध शब्द समूह से न हो–

1. तट, सेना, बाण, किनारा
2. लक्ष्मी, बिजली, सरस्वती, भगवती
3. जड़ , शरीर, पीठ, पृष्ठ।
4. गेहूँ, सोना, धतूरा, नभ
5. श्रेष्ठ, बड़ा, भारी, खग
6. शंकर, शिव, महादेव, उत्पत्ति
7. कपूर, बादल, जलद, पतंग

घ. सही उत्तर को सामने लिखिए–

1. सूत का एक अर्थ है–'धागा' और दूसरा है–
   अ. शयन ब. स्वर्ण स. साथी द. सारथी ....
2. 'नाक' के अनेकार्थी हैं–
   अ. स्वर्ग, नासिका, सम्मान ब. नासिक, घमंड, स्थिर ....
   स. स्वर्ग, सर्प, शर द. नाग, नग, नासिका
3. 'पय' शब्द के अनेकार्थी हैं–
   अ. पानी, मन, लक्ष्मी ब. दूध, पानी, अमृत ....
   स. दूध, जीव, पंख द. पीठ, बल, सेना
4. पृथ्वी, गाय, इंद्रियाँ किसके अनेकार्थी हैं–
   अ., गौ ब. घट स. नग द. कामधेनु ....
5. 'सर्प' तथा 'हाथी' किसके अनेकार्थी हैं?
   अ. नाग ब. नग स. दल द. तात ....

विपरीतार्थी अथवा विलोम शब्द

(Antonyms)

1. हे प्रभु! हमें अंधकार से प्रकाश की तरफ़ ले चलो।
2. समुद्र मंथन से अमृत तथा विष दोनों प्राप्त हुए।
3. आय से अधिक व्यय करने वाला सुखी नहीं रहता।

अ. उपर्युक्त वाक्यों के रेखांकित पदों को ध्यान से देखें और समझें।

ब. आपने देखा कि यहाँ एक पद दूसरे से विपरीत अर्थ प्रदान करता है।

शब्द के विपरीत अर्थ प्रदान करने वाले शब्द **विलोम** कहलाते हैं।

विशेष– विलोम शब्दों में तत्सम, तद्भव, देशज शब्दों का विलोम भी क्रमशः तत्सम, तद्भव, देशज ही होता है। हिंदी भाषा के कुछ विलोम शब्द-युग्म इस प्रकार हैं–

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अंदर	बाहर	उपकार	अपकार	प्राचीन	नवीन
अंधकार	प्रकाश	उपयोगी	अनुपयोगी	प्रवृत्ति	निवृत्ति
अनुराग	विराग	उचित	अनुचित	वादी	प्रतिवादी
अनिवार्य	ऐच्छिक	उन्नति	अवनति	पवित्र	अपवित्र
आदर	निरादर	उपयुक्त	अनुपयुक्त	बुराई	भलाई
आयात	निर्यात	उष्ण	शीत	भूत	भविष्य
आशा	निराशा	ऊँच	नीच	क्रय	विक्रय
आकाश	पाताल	ऋणी	उऋण	क्रिया	प्रतिक्रिया
आदान	प्रदान	एक	अनेक	क्षुद्र	महान
आय	व्यय	औचित्य	अनौचित्य	क्रूर	अक्रूर
आकर्षण	विकर्षण	सुंदर	कुरूप	कीर्ति	अपकीर्ति
अनुरक्ति	विरक्ति	कृपण	उदार	खंडन	मंडन
अपमान	सम्मान	पाप	पुण्य	गुण	अवगुण
अपव्यय	मितव्यय	पाश्चात्य	पौर्वात्य	गुप्त	प्रकट
अमीर	गरीब	प्रमुख	गौण	गरमी	सरदी

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
सुर	असुर	प्रत्यक्ष	परोक्ष	घर	बाहर
आसक्त	अनासक्त	प्रस्तुत	अप्रस्तुत	घृणा	प्रेम
आचार	अनाचार	परतंत्र	स्वतंत्र	चतुर	मूर्ख
अर्थ	अनर्थ	पक्ष	विपक्ष	चंचल	स्थिर
अपना	पराया	मिथ्या	सत्य	चेतन	जड़
अनुकूल	प्रतिकूल	मित्र	शत्रु	चल	अचल
अमृत	विष	मधुर	कटु	जंगम	स्थावर
आवरण	अनावरण	योगी	भोगी	जन्म	मृत्यु
आस्तिक	नास्तिक	यश	अपयश	जीवन	मरण
आस्था	अनास्था	रक्षक	भक्षक	जटिल	सरल
अतिवृष्टि	अनावृष्टि	राग	द्वेष	जल	थल
कपूत	सपूत	राजा	रंक	सृष्टि	प्रलय
कोमल	कठोर	लिप्त	निर्लिप्त	विष	अमृत
कुटिल	सरल	लौकिक	अलौकिक	शांत	अशांत
कृतज्ञ	कृतघ्न	वरदान	अभिशाप	शकुन	अपशकुन
आरंभ	अंत	वृद्धि	ह्रास	शिष्ट	अशिष्ट
आर्द्र	शुष्क	सुगंध	दुर्गंध	शुभ	अशुभ
आगत	अनागत	स्वर्ग	नरक	संयोग	वियोग
जीत	हार	स्थायी	अस्थायी	सक्रिय	निष्क्रिय
ज्ञानी	अज्ञानी	सगुण	निर्गुण	संधि	विग्रह
झूठ	सच	सम	विषम	सज्जन	दुर्जन
ठंडा	गरम	सार्थक	निरर्थक	सेवक	स्वामी
तम	प्रकाश	सुख	दुख	सदाचार	दुराचार
तीक्ष्ण	कुंठित	सुर	असुर	धर्म	अधर्म
देवता	राक्षस	स्वतंत्र	परतंत्र	ध्वंस	निर्माण
दयालु	निर्दय	हर्ष	शोक	निरक्षर	साक्षर
देव	दानव	हिंसा	अहिंसा	नीरस	सरस

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
दृश्य	अदृश्य	ह्रास	रुदन	निंदा	स्तुति
धनी	निर्धन	हित	अहित	निरर्थक	सार्थक
इष्ट	अनिष्ट	उत्तर	दक्षिण/प्रश्न	निरामिष	सामिष
उत्तम	अधम	उतार	चढ़ाव	अच्छा	बुरा

समझ की परख

क. दिए गए शब्दों के विलोम लिखिए–

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
दृश्य	....	नूतन	....
पक्ष	....	प्रमुख	....
भूत	....	यश	....
सुर	....	सार्थक	....
लौकिक	....	वृद्धि	....

ख. कॉलम 'क' तथा 'ख' को इस प्रकार मिलाइए कि विलोम शब्दों के सही जोड़े बन जाएँ–

क	ख
आस्था	अवनति
उन्नति	विराग
उत्तीर्ण	मंडन
खंडन	शोक
हर्ष	अनुत्तीर्ण
संधि	विग्रह
अनुराग	सरल
चंचल	उदार
जटिल	अनास्था
कृपण	स्थिर

ग. दिए गए शब्द के उचित विलोम शब्द पर गोला लगाइए–

1. चेतन–

अ. अपचेतन ब. अवचेतन स. जड़ द. तना

2. आर्द्र–

अ. शुष्क ब. नम स. पतन द. मुलायम

3. उदय–

अ. भय ब. अस्त स. अनुदार द. विशाल

4. आयात–

अ. सायात ब. यातायात स. निर्यात द. विख्यात

5. जीवन–

अ. मृत्यु ब. मरण स. अजीवन द. मरना

6. निरामिष–

अ. सामिष ब. आमिष स. अनिरामिष द. सरस

7. परतंत्र–

अ. स्वतंत्र ब. अपरतंत्र स. गुलाम द. आज़ाद

8. निंदा–

अ. अनिंदा ब. प्रशंसा स. स्तुति द. प्रेम

घ. महाकवि तुलसीदास जी की काव्य पंक्ति है–

"हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ।"

1. उपर्युक्त काव्य पंक्ति में कितने शब्द-युग्म हैं?
2. पंक्ति में से शब्द तथा उसका विलोम चुनकर लिखिए।

ङ. हिंदी के बहुत से शब्द ऐसे हैं, जो 'अ' उपसर्ग जोड़ देने से विपरीत अर्थ देने लगते हैं। आप कक्षा में उनका चार्ट नीचे दिए उदाहरण की तरह लगाइए–
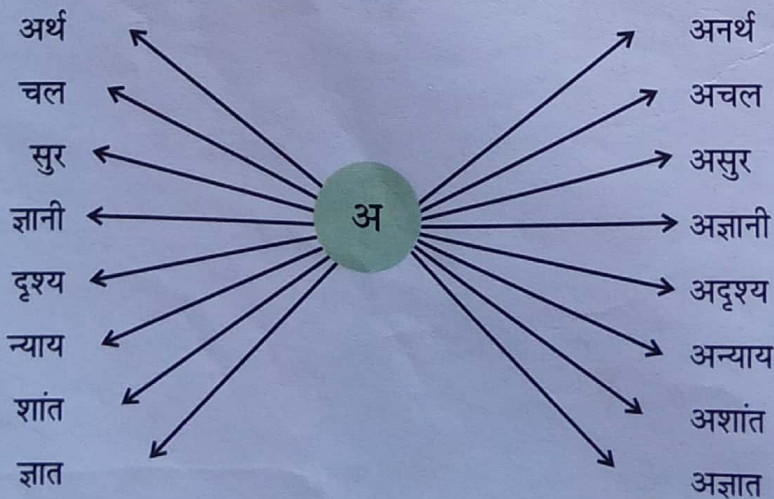
श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द

(Homophones)

ऐसे शब्द जो सुनने में एक समान लगें, परंतु अर्थ की दृष्टि से भिन्न हों, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द कहलाते हैं। इनकी पहचान उचित उच्चारण, वर्तनी एवं प्रयोग से होती है; जैसे–

'चीर' तथा 'चिर'–ये दोनों शब्द उच्चारण, वर्तनी एवं अर्थ की दृष्टि से भिन्न हैं, परंतु यदि कोई उचित उच्चारण न करे अथवा उचित स्थान पर उचित शब्द का प्रयोग न करे, तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। 'चीर' का अर्थ वस्त्र होता है तथा 'चिर' का अर्थ पुराना।

इसी प्रकार 'चिता' और 'चिंता' दो ऐसे श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द हैं, जो एकमात्र अनुस्वार की वजह से भिन्न हैं।

कुछ श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द तथा उनके अर्थ नीचे दिए गए हैं–

	शब्द	अर्थ
1.	अलि	भँवरा या भौंरा
	अली	सखी, मित्र
2.	अंक	गोद
	अंग	शरीर का हिस्सा
3.	अंतर	हृदय
	अंदर	भीतर
4.	अवधि	समय-सीमा
	अवधी	बोली
5.	कलि	कलयुग
	कली	अधखिला फूल
6.	आदि	आरंभ, शुरू
	आदी	आदत होना
7.	आधि	मानसिक रोग
	आधी	आधा हिस्सा
8.	अनल	आग
	अनिल	हवा
9.	अवश्य	ज़रूर
	अवश	लाचार, बेबस
10.	अन्य	दूसरा
	अन्न	अनाज

	शब्द	अर्थ
11.	लक्ष	लाख की संख्या
	लक्ष्य	उद्देश्य
12.	मूल्य	कीमत
	मूल	जड़
13.	तरणि	सूर्य
	तरणी	नाव
14.	निधन	मृत्यु
	निर्धन	गरीब
15.	भवन	घर
	भुवन	संसार
16.	शस्त्र	हथियार
	शास्त्र	कोई भी धार्मिक ग्रंथ
17.	शाल	एक वृक्ष, चादर
	साल	वर्ष
18.	कटक	सेना का समूह
	कंटक	काँटा
19.	परिमाण	माप-तौल, मात्रा
	परिणाम	नतीजा
20.	गुरु	आचार्य
	गुर	हुनर, उपाय

शब्द	अर्थ
21. कुल	वंश
कूल	किनारा
22. कर्म	काम
क्रम	सिलसिला
23. आकर	खान, भंडार
आकार	आकृति
24. समान	बराबर
सामान	वस्तु
25. द्रव	तरल पदार्थ
द्रव्य	धन-दौलत
26. दीप	दीपक, दीया
द्वीप	टापू
27. चालक	चलाने वाला (ड्राइवर)
चालाक	चतुर
28. चर्म	चमड़ा
चरम	अंतिम
29. प्रकार	भेद, ढंग
प्राकार	चहारदीवारी, खाई
30. ग्रह	नक्षत्र
गृह	घर
31. प्रसाद	कृपा
प्रासाद	महल
32. तुरंग	घोड़ा
तरंग	लहर
33. जरा	बुढ़ापा
ज़रा	थोड़ा-सा
34. नीड़	घोंसला
नीर	जल

शब्द	अर्थ
35. ओर	तरफ़/दिशा
और	तथा
36. आसन	बैठने के लिए बिछौना
आसन्न	निकट होना
37. अविराम	बिना रुके
अभिराम	सुंदर
38. उपयुक्त	ठीक, उचित
उपर्युक्त	ऊपर कहा गया
39. चपल	चंचल
चपला	बिजली
40. धान	चावल
धान्य	कोई भी अनाज
41. पानी	जल
पाणि	हाथ
42. बदन	शरीर
वदन	मुख
43. वसन	वस्त्र
व्यसन	आदत
44. प्रधान	मुख्य
प्रदान	देना
45. ख़ान	मुसलिम पठान
खान	खदान, भंडार
46. दीन	गरीब
दिन	दिवस
47. अंत	समाप्त
अंत्य	आखिरी
48. बात	वचन
वात	हवा

समझ की परख

क. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द छाँटकर खाली स्थान में भरिए–

1. .... ही धन के महत्व को समझ सकता है। (निधन, निर्धन)
2. दुर्योधन की सभा में द्रौपदी का .... हरण किया गया था। (चीर, चिर)
3. लंबी बीमारी ने रामू को मरण .... की स्थिति में पहुँचा दिया। (आसन, आसन्न)
4. मोची .... से जूते-चप्पल बनाता है। (चरम, चर्म)
5. कल अर्धवार्षिक परीक्षा के .... निकलेंगे। (परिमाण, परिणाम)
6. आज बहुत शीतल .... बह रही है। (अनिल, अनल)
7. पक्षी पेड़ों पर अपना .... बनाते हैं। (नीड़, नीर)

ख. निम्नलिखित श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दों के इस प्रकार वाक्य बनाइए कि उनके अर्थ स्पष्ट हो जाएँ–

1. कुल – ....
   कूल – ....
2. दीप – ....
   द्वीप – ....
3. लक्ष – ....
   लक्ष्य – ....
4. अंतर – ....
   अंदर – ....
5. धान – ....
   धान्य – ....

ग. निम्नलिखित शब्दों के अर्थों के उचित जोड़े को रेखांकित कीजिए–

1. आदी–आदि
   अ. अंत – आदत होना ब. आदत होना – आरंभ, शुरू
   स. आधी चीज़ – आरंभ द. आदत होना – गोद
2. आकर–आकार
   अ. जाना – आकृति ब. बराबर – आना
   स. खान, भंडार – आकृति द. खान – भंडार

एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द

(Words with Similar Meanings)

हिंदी भाषा में ऐसे अनेक शब्द हैं जो एक-दूसरे के समानार्थी (एक जैसा अर्थ देने वाले) प्रतीत होते हैं, परंतु उनमें सूक्ष्म अर्थ भेद होता है। ऐसे शब्दों के प्रयोग में प्राय: अशुद्धि हो जाती है; जैसे– 'गज' और 'गज़' शब्द सुनने में एक-से प्रतीत होते हैं किंतु इनका अर्थ सर्वथा अलग है। 'गज' का अर्थ–हाथी और 'गज़' का अर्थ है–एक माप।

1. **पाप** – धर्म के विरुद्ध कार्य करना
   अपराध – कानून विरोधी कार्य करना
2. **भिन्न** – अलग
   विपरीत – उलटा
3. **पुत्र** – अपना बेटा
   बालक – कोई भी बच्चा
4. **सेवा** – किसी को सुख या आराम पहुँचाने वाला कार्य
   सुश्रूषा – रोगी अथवा दीन-दुखी की सेवा
5. **वेदना** – पीड़ा (दुख की वास्तविक अनुभूति)
   व्यथा – आघात से होने वाली पीड़ा
6. **मूर्ख** – बुद्धिहीन
   अनभिज्ञ – जिसे पता न हो
7. **भ्रम** – धोखा होना
   संदेह – शक करना
8. **खेद** – मन का खिन्न होना
   शोक – मृत्यु आदि पर दुख प्रकट करना
9. **अभिमान** – सच्चा गर्व करना
   अहंकार – झूठा घमंड
10. **ईर्ष्या** – दूसरों की उन्नति से जलना
    द्वेष – वैरभाव
11. **कलंक** – भारी दोष लगना
    अपयश – अपकीर्ति

12. **शंका** – शक होना
    आशंका – खतरा
13. **स्त्री** – कोई नारी
    पत्नी – किसी की विवाहिता स्त्री
14. **अहि** – सर्प
    अहर – दिन
15. **अगम** – जहाँ पहुँचा ही न जा सके
    दुर्गम – जहाँ कठिनाई से पहुँचा जा सके
16. **अमूल्य** – जिस वस्तु का कोई निश्चित मूल्य न आँका जा सके
    बहुमूल्य – अत्यधिक मूल्य की वस्तु
17. **अस्त्र** – जो हथियार फेंककर चलाया जाए; जैसे–तीर
    शस्त्र – जो हथियार हाथ में लेकर चलाया जाए; जैसे–गदा
18. **आगामी** – आगे आने वाला
    भावी – भविष्य में होने वाला, जो निश्चित न हो
19. **ऋषि** – वेद-मंत्रों का ज्ञाता
    मुनि – धर्म तत्व का मौन भाव से मनन करने वाला
20. **कृपा** – किसी की सहायता
    दया – दीन-दुखी पर पिघलना
21. **कष्ट** – साधारण तकलीफ़
    दुख – तन-मन से दुखी होना

समझ की परख

क. नीचे दिए वाक्यों में अशुद्ध शब्दों का प्रयोग हुआ है। उन्हें शुद्ध करके लिखिए–

1. बालक माँ की गोद में आते ही चुप हो गया। ....
2. वह अहि-निश कठोर परिश्रम करता रहा। ....
3. हीरा अमूल्यवान वस्तु है। ....
4. हमें अपने देश पर अहंकार है। ....
5. वह अपने ग्रह में प्रवेश करेगा। ....

ख. दिए गए शब्दों का अर्थ लिखकर अंतर स्पष्ट कीजिए–

1. शंका – ....
   आशंका – ....
2. कृपा – ....
   दया – ....
3. भिन्न – ....
   विपरीत – ....
4. अभिमान – ....
   अहंकार – ....

ग. दिए गए शब्दों के वाक्य बनाकर अर्थगत अंतर समझाइए–

1. मूर्ख – ....
   अनभिज्ञ – ....
2. ईर्ष्या – ....
   द्वेष – ....
3. सेवा – ....
   सुश्रूषा – ....
4. पाप – ....
   अपराध – ....

11 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

(One Word Substitution)

ग्राम में रहने वाला (ग्रामीण)

जिसमें दया हो (दयालु)

ईश्वर को मानने वाला (आस्तिक)

आपने देखा कि हम अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द में भी बात कह सकते हैं। इससे भाषा में संक्षिप्तता, गंभीरता, तीव्रता और विशेषता आती है। वैसे भी आजकल की मशीनी ज़िंदगी में कम शब्दों में बात कहने की महत्ता बढ़ी है। आइए, कुछ उदाहरण नीचे देखें–

वाक्यांश	एक शब्द
1. जो मंत्री का सहायक हो	उपमंत्री
2. दोपहर से पूर्व का समय	पूर्वाह्न
3. जो अपने संप्रदाय का घोर पक्षपाती हो	सांप्रदायिक
4. व्याकरण शास्त्र का विद्वान	वैयाकरण
5. जो विश्वास के योग्य हो	विश्वसनीय
6. इतिहास से संबंधित	ऐतिहासिक
7. जिसके लक्षण विशिष्ट हों	विलक्षण

	वाक्यांश	एक शब्द
8.	जिसका कोई उद्देश्य न हो	निरुद्देश्य
9.	जो सदा से चला आ रहा हो	सनातन
10.	दूसरों का पोषण करने वाला	परपोषक
11.	जिसकी आशा न की गई हो	अप्रत्याशित
12.	जो टुकड़े-टुकड़े हो गया हो	खंडित
13.	जिसकी इच्छाएँ बहुत ऊँची हों	महत्वाकांक्षी
14.	दूसरों का शोषण करने वाला	शोषक
15.	प्राणों को दुख देने वाली	मर्मांतक
16.	वेतन के बिना काम करने वाला	अवैतनिक
17.	जिसका मूल्य न आँका जा सके	अमूल्य
18.	तीन मास में एक बार होने वाला	त्रैमासिक
19.	जिस स्त्री के नेत्र कमल जैसे हों	कमलाक्षी
20.	एक से दूसरे को लगने वाला रोग	संक्रामक
21.	तीनों लोकों की बात जानने वाला	त्रिकालदर्शी
22.	जिसे कुछ भी करना-धरना न सूझे	किंकर्तव्यविमूढ़
23.	जो संपत्ति दूसरों के पास रखी जाए	धरोहर
24.	जिसकी कल्पना भी न की जा सके	कल्पनातीत
25.	किसी काम में दूसरे से बढ़ने की इच्छा	स्पर्धा
26.	जिसके विषय में लिखना आवश्यक हो	उल्लेखनीय
27.	जिसका आकार न हो	निराकार
28.	तेज को धारण करने वाला	तेजस्वी
29.	वाणी संबंधी	वाचिक
30.	ईश्वर संबंधी	आध्यात्मिक
31.	सदा रहने वाला	शाश्वत
32.	बुरे चरित्र वाला	दुश्चरित्र
33.	आगे आने वाला	आगामी
34.	जानने की इच्छा	जिज्ञासा

	वाक्यांश	एक शब्द
35.	खोज करने वाला	अन्वेषक
36.	सत्य बोलने वाला	सत्यवादी
37.	जो देखने योग्य हो	दर्शनीय
38.	जिसका अंत न हो	अनंत
39.	ऋण चुकाने वाला	उऋण
40.	जिसमें संदेह न हो	असंदिग्ध/निस्संदेह
41.	ग्राम में रहने वाला	ग्रामीण
42.	ऊपर कही गई बात	उपर्युक्त
43.	जो उत्तर न दे सके	निरुत्तर
44.	कुछ पाने की इच्छा	लिप्सा
45.	दूर की सोचने वाला	दूरदर्शी
46.	जिसके संतान न हो	निस्संतान
47.	गोद लिया हुआ पुत्र	दत्तक
48.	जिसकी उपमा न हो	अनुपम
49.	जो कठिनाई से मिले	दुर्लभ
50.	जीने की प्रबल इच्छा	जिजीविषा
51.	कम खर्च करने वाला	अल्पव्ययी
52.	ऊँचे कुल से संबंधित	कुलीन
53.	जहाँ जाया न जा सके	अगम्य
54.	शिव को मानने वाला	शैव
55.	सब कुछ जानने वाला	सर्वज्ञ
56.	विष्णु को मानने वाला	वैष्णव
57.	जिसे करना कठिन हो	दुष्कर
58.	पत्तों की बनी कुटिया	पर्णकुटी
59.	प्रिय बोलने वाली स्त्री	प्रियंवदा
60.	जिसे जाना न जा सके	अज्ञेय
61.	बुराई के लिए प्रसिद्ध	कुख्यात

वाक्यांश		एक शब्द
62.	जिसकी बहुत चर्चा हो	बहुचर्चित
63.	जो दूसरों से ईर्ष्या करे	ईर्ष्यालु
64.	जो समाचार भेजता हो	संवाददाता
65.	जिसके पास धन न हो	निर्धन
66.	जहाँ पहुँचना कठिन हो	दुर्गम
67.	जो क्षमा करने योग्य हो	क्षम्य
68.	जो किसी का पक्ष न ले	निष्पक्ष
69.	जिसका कोई शत्रु न हो	अजातशत्रु
70.	ईश्वर को न मानने वाला	नास्तिक

समझ की परख

क. वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखिए–

1. जिसका मूल्य न आँका जा सके ....
2. तेज धारण करने वाला ....
3. जो काम से जी चुराए ....
4. जिसका कोई उद्देश्य न हो ....
5. जिसकी हज़ार भुजाएँ हों ....
6. जिसकी उपमा न हो ....
7. बुरे चरित्र वाला ....

ख. अनेक शब्दों के एक शब्द वर्ग पहेली में छिपे हैं। आप उचित शब्द पर गोला बनाकर उत्तर सही जगह लिखिए–

1. जो अपने समय का ज्ञानी हो ....
2. जिसका आकार न हो ....
3. जिसे जाना न जा सके ....
4. कम खर्च करने वाला ....
5. जिसका हृदय विशाल हो ....
6. सब कुछ जानने वाला ....
7. जो विश्वास के योग्य हो ....

वि	स	र्व	ज्ञ	अ
श	यु	अ	नि	ल
व	ग	ज्ञे	रा	प
स	द्र	य	का	ठ
नी	ष्टा	क	र	य
य	उ	दा	र	यी

ग. कॉलम 'क' तथा 'ख' को मिलाइए–

	क	ख
1.	जो क्षमा करने योग्य हो	दूरदर्शी
2.	जहाँ जाया न जा सके	सर्वज्ञ
3.	सब कुछ जानने वाला	अगम्य
4.	दूर की सोचने वाला	निरुत्तर
5.	जो उत्तर न दे सके	जिजीविषा
6.	गोद लिया हुआ पुत्र	क्षम्य
7.	जीने की प्रबल इच्छा	दत्तक

घ. वाक्यांश के लिए सही शब्द चुनकर सामने लिखिए–

1. शिव को मानने वाला–
   अ. वैष्णव ब. शैव स. शिवभक्त द. आस्तिक ....
2. बुराई के लिए प्रसिद्ध–
   अ. कुख्यात ब. सुख्यात स. विशेष द. बुरा व्यक्ति ....
3. आगे आने वाला–
   अ. आज ब. आगामी स. भविष्य द. अतीत ....
4. ऋण चुकाने वाला–
   अ. कर्ज़दार ब. सऋण स. उऋण द. अपव्ययी ....
5. खोज करने वाला–
   अ. खोजी ब. अन्वेषक स. कुलीन द. वैज्ञानिक ....
6. जिसमें दया हो–
   अ. दयालु ब. कृपालु स. सहृदय द. इनमें से कोई नहीं ....
7. जानने की इच्छा–
   अ. जिज्ञासा ब. जिजीविषा स. विशेषेच्छा द. शुभेच्छा ....
8. उपकार को मानने वाला–
   अ. कृतघ्न ब. अकृतज्ञ स. कृतज्ञ द. उपकारी ....
9. ईश्वर में विश्वास करने वाला–
   अ. आस्थावान ब. नास्तिक स. अनास्थावादी द. आस्तिक ....
10. सप्ताह में एक बार होने वाला–
   अ. दैनिक ब. त्रैमासिक स. साप्ताहिक द. पाक्षिक ....

शब्द-निर्माण : उपसर्ग

(Prefix)

सुपुत्र

कुपुत्र

सबल

दुर्बल

उपर्युक्त चित्रों के नीचे लिखे शब्दों पर ध्यान दीजिए। 'पुत्र' शब्द से सु जोड़कर 'सुपुत्र' तथा कु जोड़कर 'कुपुत्र' बना है। इसी प्रकार 'बल' शब्द में स जोड़कर 'सबल' तथा दुर् जोड़कर 'दुर्बल' बना है। कु और दुर् शब्दांश हैं। ये शब्दांश शब्द में जुड़कर विशेष अर्थ प्रकट करते हैं। ये उपसर्ग कहलाते हैं।

आओ जानें

वे शब्दांश जो शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।

हिंदी भाषा में पाँच प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग किया जाता है–

1. संस्कृत के उपसर्ग
2. संस्कृत के अव्ययों का उपसर्ग की भाँति प्रयोग
3. हिंदी के उपसर्ग
4. उर्दू के उपसर्ग
5. अंग्रेज़ी के उपसर्ग

हिंदी में प्रयोग किए जाने वाले उपसर्गों के उदाहरण–

1. **संस्कृत के उपसर्ग–** संस्कृत भाषा के निम्नलिखित उपसर्गों से हिंदी में शब्द-रचना होती है–

क्रम	उपसर्ग	अर्थ	नवीन शब्द
1.	अति	अधिक	अत्यंत, अतिशय, अतिरिक्त, अतिक्रमण, अत्याचार, अत्युत्तम, अत्यधिक
2.	अधि	ऊपर, श्रेष्ठ	अध्यक्ष, अधिपति, अधिकार, अधिनायक, अधिकरण, अध्यादेश, अध्ययन, अधिकृत

क्रम	उपसर्ग	अर्थ	नवीन शब्द
3.	अनु	पीछे, समान, गौण	अनुरोध, अनुभव, अनुराग, अनुसार, अनुरूप, अनुचर, अनुग्रह, अनुकरण
4.	अप	बुरा, हीन, अपूर्ण	अपकार, अपमान, अपशब्द, अपराध, अपयश, अपकीर्ति, अपशकुन, अपहरण
5.	अभि	सामने, पास, चारों ओर	अभिमान, अभिजय, अभिप्राय, अभिमुख, अभिशाप, अभिनव, अभिवादन
6.	अव	हीन, बुरा, नीचे	अवनति, अवसान, अवगुण, अवशेष, अवचेतन, अवकाश
7.	आ	तक, पूर्ण, समेत	आमरण, आजीवन, आगमन, आजन्म, आहार, आदान
8.	उत्	ऊपर, श्रेष्ठ	उत्तम, उत्पत्ति, उद्‌गम, उद्‌धार, उत्कर्ष, उत्साह, उत्पन्न, उद्‌धरण, उद्‌घाटन
9.	उप	निकट, गौण, सदृश	उपमान, उपकार, उपहार, उपभेद, उपग्रह, उपदेश, उपचार, उपसंहार
10.	दुस्	बुरा	दुश्चरित्र, दुस्साहस, दुश्शासन, दुष्प्रवृत्ति, दुष्कर्म
11.	दुर्	बुरा	दुर्दशा, दुर्गम, दुर्जन, दुर्दिन, दुर्भिक्ष, दुर्बल, दुर्भाग्य, दुराचार
12.	निस्	निषेध (नहीं)	निष्काम, निश्चय, निश्छल, निष्कपट, निस्संदेह
13.	निर्	बिना, रहित	निर्भय, निर्गुण, निर्दयी, निर्धन, निर्बल, निरादर, निराकार, निरपराध
14.	नि	अधिकता/अभाव	नियम, निवास, निवारण, नियोग, निपात, निषेध, निवेदन, निबंध, निकृष्ट
15.	परा	उलटा, पीछे, विपरीत	पराधीन, पराजय, परामर्श, पराक्रम, पराकाष्ठा
16.	परि	चारों ओर	परिपूर्ण, परिक्रमा, परिणाम, परिपक्व, परिवर्तन, परिकल्पना
17.	प्र	आगे, अधिक	प्रगति, प्रहर, प्रदान, प्रखर, प्रचल, प्रताप, प्रचार, प्रहार, प्रस्थान, प्रसिद्‌ध
18.	प्रति	हर एक, विरुद्‌ध, सामने	प्रत्येक, प्रतिक्षण, प्रत्यक्ष, प्रतिदिन, प्रत्युपकार, प्रतिहिंसा, प्रतिकूल
19.	वि	विशेषता, अभाव, भिन्नता	विजय, विदेश, विपक्ष, विनय, वियोग, विहार, विलाप, विराम, विशेष, विज्ञान

क्रम	उपसर्ग	अर्थ	नवीन शब्द
20.	सम्	अच्छा, पूर्ण, संयोग, सहित	संगम, संयोग, संवाद, संपत्ति, संस्कार, सम्मुख
21.	सु	अच्छा, शुभ, सहज, सरल	सुपुत्र, सुबोध, सुलभ, सुकर्म, सुनिश्चित, सुबुद्धि, सुरक्षित, स्वागत
22.	तत्	उनके जैसा	तत्पर, तत्काल, तदनुसार, तत्पश्चात

एक से अधिक उपसर्गों के मेल से शब्द-रचना–कई बार दो या तीन उपसर्ग मिलकर शब्दों से पूर्व जुड़ते हैं तथा नई शब्द रचना करते हैं–

उपसर्ग	शब्द	उदाहरण
प्र + आ	रूप	प्रारूप
सम् + आ	चार, लोचना	समाचार, समालोचना
प्रति + उप	कार	प्रत्युपकार
वि + आ	करण	व्याकरण
सु + सम	कृत	सुसंस्कृत
अ + प्रति	अक्ष	अप्रत्यक्ष

2. संस्कृत के अव्ययों का उपसर्ग की भाँति प्रयोग– संस्कृत भाषा के कुछ अव्यय ऐसे हैं, जो उपसर्ग के समान प्रयुक्त होते हैं–

क्रम	उपसर्ग	उपसर्ग का अर्थ	उदाहरण
1.	अधस्	नीचे	अधोगति, अध:पतन
2.	अंत:/अंतर्	भीतर	अंत:पुर, अंतर्मन, अंतर्मुखी, अंतरात्मा, अंतर्राष्ट्रीय
3.	पुर:/पुरस्	सामने	पुरस्कार, पुरोहित
4.	पुरा	पहले	पुरातन, पुरातत्व
5.	बहिर्	बाहर	बहिर्मुखी, बहिर्गमन
6.	सह	साथ	सहयोग, सहचर, सहपाठी, सहमति
7.	पुनर्	फिर	पुनर्विवाह, पुनर्जन्म, पुनर्निर्माण, पुनर्विचार, पुनरागमन, पुनरावृत्ति
8.	सत्	अच्छा	सज्जन, सत्पुरुष, सत्कार, सद्गति, सदाचार
9.	सम	समान	समकोण, समकालीन
10.	कु	बुरा	कुपुत्र, कुमार्ग, कुरूप, कुकर्म, कुविचार

3. **हिंदी के उपसर्ग**–हिंदी उपसर्गों के उदाहरण निम्नलिखित रूप में दिए जा सकते हैं–

क्रम	उपसर्ग	उपसर्ग का अर्थ	उदाहरण
1.	अ, अन	अभाव, निषेध	अमर, अछूत, अभेद, अथाह, अनमेल, अनपढ़, अनजान, अनसुनी, अनकहा
2.	अध	आधा	अधमरा, अधपका, अधखिला, अधकचरा
3.	पर	दूसरा	परवश, परदेश, परहित, परोपकार
4.	नि	रहित	निडर, निपुण, निपूता, निकम्मा, निठल्ला, निहत्था
5.	भर	पूरा	भरपेट, भरपूर, भरसक, भरपाई
6.	स/सु	साथ/अच्छा	सपूत, सफल, सप्रेम, सगुण, सुजान, सुनीति, सुविचार
7.	क/कु	बुरा	कपूत, कुसंग, कुटिल, कुरीति, कुमार्ग, कुबुद्धि, कुविचार
8.	उन	कम	उन्नीस, उनसठ, उनचास, उनतालीस

4. **उर्दू के उपसर्ग**–

क्रम	उपसर्ग	उपसर्ग का अर्थ	उदाहरण
1.	बे	बिना, रहित	बेबात, बेदाग, बेजोड़, बेवक्त, बेकार, बेजान, बेचारा, बेखटके, बेहिसाब
2.	बा, बद	सहित	बाअदब, बाइज़्ज़त, बाकायदा, बदकिस्मत, बदतमीज़
3.	दर	में	दरकार, दरअसल, दरमियान, दरगुज़र, दरहकीकत
4.	ना	नहीं, अभाव	नापसंद, नापाक, नासमझ, नामुराद, नादान, नाराज़, नालायक
5.	हम	साथ, समान	हमउम्र, हमराही, हमराज़, हमजोली, हमशक्ल
6.	हर	प्रति/प्रत्येक	हरदम, हरदिन, हरमास, हरसाल, हरवक्त, हरपल, हरघड़ी, हररोज़
7.	खुश	अच्छा	खुशखबरी, खुशनसीब, खुशामद, खुशमिज़ाज
8.	बद	बुरा	बदनाम, बदसूरत, बदनसीब, बदमिज़ाज, बदहज़मी, बदकिस्मत, बदहवास, बदचलन
9.	गैर	अनुचित	गैरहाज़िर, गैरकानूनी, गैरसरकारी, गैरज़िम्मेदारी
10.	ला	नहीं, बिना	लापता, लाचार, लाइलाज, लापरवाह, लावारिस
11.	कम	अल्प	कमउम्र, कमज़ोर, कमबख्त, कमअक्ल
12.	सर	प्रधान (मुख्य)	सरपंच, सरताज, सरकार, सरहद, सरपरस्त
13.	ऐन	ठीक	ऐनवक्त, ऐनमौका

5. अंग्रेज़ी के उपसर्ग–अंग्रेज़ी भाषा के हिंदी में प्रयोग आने वाले उपसर्ग हैं–

क्रम	उपसर्ग	उपसर्ग का अर्थ	उदाहरण
1.	डिप्टी (Deputy)	(उप)	डिप्टी कमिश्नर, डिप्टी इंस्पेक्टर
2.	सब (Sub)	(उप)	सब पोस्टमास्टर, सब पोस्ट ऑफ़िस, सब जज
3.	हेड (Head)	(उच्च)	हेड मास्टर, हेड नर्स, हेड ऑफ़िस, हेड क्लर्क
4.	हाफ़ (Half)	(आधा)	हाफ़ बाजू, हाफ़ कोट, हाफ़ पैंट, हाफ़ शर्ट
5.	चीफ़ (Chief)	(मुख्य)	चीफ़ मिनिस्टर, चीफ़ जज, चीफ़ सेक्रेटरी
6.	जनरल (General)	(साधारण)	जनरल स्टोर, जनरल वार्ड, जनरल अस्पताल
7.	असिस्टेंट (Assistant)	(सहायक)	असिस्टेंट रजिस्ट्रार, असिस्टेंट कमिश्नर, असिस्टेंट नर्स
8.	वाइस (Vice)	(उप)	वाइस चेयरमैन, वाइस प्रेसिडेंट, वाइस कैप्टन, वाइस चांसलर

मुख्य बातें–

- उपसर्ग शब्द के प्रारंभ में लगकर अर्थ में परिवर्तन या विशेषता लाते हैं।
- हिंदी भाषा में पाँच प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग किया जाता है–
  - अ. संस्कृत के उपसर्ग
  - ब. संस्कृत के अव्ययों का उपसर्ग की भाँति प्रयोग
  - स. हिंदी के उपसर्ग
  - द. उर्दू के उपसर्ग
  - न. अंग्रेज़ी के उपसर्ग

1 उपसर्ग की परिभाषा उदाहरण सहित।
2 उपसर्ग के प्रकार लिखिए 3 तथा प्रत्यय 5 उदाहरण। लिखिए

समझ की परख

क. सही वाक्य पर ✓ तथा गलत पर ✗ का चिह्न लगाइए–

1. 'व्याकरण' में दो उपसर्गों का प्रयोग हुआ है– वि + आ + करण
2. 'समकोण' में 'स' उपसर्ग लगा है।
3. 'संयोग' में मूल शब्द है–'योग'

4. उर्दू के उपसर्ग हैं–बे, गैर, बद, दर
5. हिंदी के उपसर्ग हैं–हेड, चीफ़, सब, वाइस
6. संस्कृत के उपसर्ग हैं–सम्, निस्, प्र, तत्

ख. यहाँ हिंदी, उर्दू, अंग्रेज़ी तथा संस्कृत के उपसर्ग मिल गए हैं। उन्हें अलग-अलग करके लिखिए–

अभि हेड उत् दर परि पर सु अन कम हाफ़ ऐन दुस् सम् सत् तत्
वाइस सु कु डिप्टी बद प्रति

संस्कृत – ....

हिंदी – ....

उर्दू – ....

अंग्रेज़ी – ....

ग. उपसर्ग तथा मूल शब्द जोड़कर शब्द बनाइए–

	उपसर्ग		मूल शब्द		
1.	दुर्	निर्	(गुण)	दुर्गुण	निर्गुण
2.	अभि	अप	(मान)	अभिमान	अपमान
3.	सु	कु	(कर्म)	सुकर्म	कुकर्म
4.	वि	अ	(ज्ञान)	विज्ञान	अज्ञान
5.	प्र	उप	(हार)	प्रहार	उपहार

घ. उपसर्ग तथा मूल शब्द अलग-अलग कीजिए–

		उपसर्ग	मूल शब्द
1.	अध्यक्ष –	अधि	अक्ष
2.	अवनति –	अव	नति
3.	दुश्शासन –	दुस्	शासन
4.	सुनीति –	सु	नीति
5.	नापाक –	ना	पाक
6.	पुरातन –	पुरा	तन
7.	कुटिल –	कु	टिल
8.	उनचास –	उन	चास

9. विज्ञान – ......वि...... ......ज्ञान......

10. तत्काल – ......तत्...... ......काल......

11. निष्काम – ......निस...... ......काम......

12. निबंध – ......नि...... ......बंध......

13. अमर – ......अ...... ......मर......

14. सद्गति – ......सत्...... ......गति......

15. सुबोध – ......सु...... ......बोध......

16. पुनर्जन्म – ......पुनर्...... ......जन्म......

17. अंतर्मन – ......अंतर...... ......मन......

ङ. निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्ग चुनकर सामने लिखिए–

1. संगम–

   अ. सं ब. सम् स. सम द. संग ....

2. नियम–

   अ. नि ब. निय स. नी द. न ....

3. अत्यंत–

   अ. अ ब. अति स. अती द. अं ....

4. दुश्चरित्र–

   अ. दुश ब. दुष स. दुस् द. दु ....

5. प्रत्येक–

   अ. प्र ब. प्रति स प्रत द. प्रा ....

च. निम्नलिखित वाक्यों में उपसर्ग युक्त शब्द रेखांकित कीजिए और उससे स्वयं एक वाक्य बना

1. कुसंग का ज्वर भयानक होता है।
2. आज का युग विज्ञान का युग है।
3. अनुशासन का मानव जीवन में बहुत महत्त्व है।
4. पराधीन भारत को स्वाधीन कराने के लिए देशभक्तों ने अपने प्राणों की बलि दी।

   ....

   ....

   ....

   ....

शब्द-निर्माण : प्रत्यय

(Suffix)

खिलौना टोपीवाला चुहिया

उपर्युक्त शब्दों के अंत में क्रमशः 'औना', 'वाला' तथा 'इया' का प्रयोग किया गया है। ये प्रत्यय कहलाते हैं। इन शब्दांशों के शब्द के अंत में जुड़ने से अर्थ में परिवर्तन आता है।

आओ जानें

जो शब्दांश शब्दों के अंत में लगकर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।

स्पष्ट है कि उपसर्ग शब्द के पहले लगकर उसमें अर्थ वैशिष्ट्य लाता है, तो प्रत्यय पीछे लगकर उसमें परिवर्तन या नवीनता उत्पन्न करता है।

प्रत्यय के दो भेद हैं–

(1) कृत् प्रत्यय

(2) तद्धित प्रत्यय

प्रत्यय के भेद

कृत् प्रत्यय | तद्धित प्रत्यय
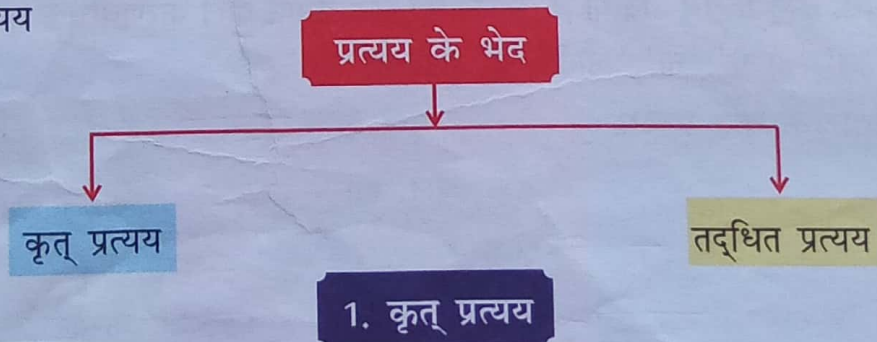
1. कृत् प्रत्यय

जो प्रत्यय धातुओं अथवा क्रिया शब्दों के अंत में लगकर संज्ञा, विशेषण आदि शब्द बनाते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहा जाता है। कृत प्रत्यय लगकर बनने वाले शब्द कृदंत कहलाते हैं; जैसे– दिखावट, झगड़ालू, मिलनसार आदि।

कृत् प्रत्यय के भेद–कृत् प्रत्यय के निम्नलिखित पाँच भेद हैं–

(i) कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय
(ii) कर्मवाचक कृत् प्रत्यय
(iii) करणवाचक कृत् प्रत्यय
(iv) भाववाचक कृत् प्रत्यय
(v) क्रियावाचक कृत् प्रत्यय

(i) **कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय**–क्रिया के कर्ता का बोध कराने वाले प्रत्यय कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं। ये धातुओं के अंत में 'आका', 'आलू', 'आऊ', 'इया', 'ओड़ा', 'अक्कड़', 'वैया', 'सार', 'वाला', 'हारा' लगाकर बनाए जाते हैं। ये इस प्रकार हैं–

कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय	मूल शब्द	निर्मित शब्द
आऊ	बिक, कमा, टिक	बिकाऊ, कमाऊ, टिकाऊ
इया	बढ़, घट, जड़	बढ़िया, घटिया, जड़िया
ओड़ा	भग	भगोड़ा
ऐत	लड़, लठ	लड़ैत, लठैत
ऊ	खा, कमा, चाल	खाऊ, कमाऊ, चालू
अक्कड़	घूम, भूल	घुमक्कड़, भुलक्कड़
आका, आकू	लड़	लड़ाका, लड़ाकू
आक	तैर, चाल	तैराक, चालाक

(ii) **कर्मवाचक कृत् प्रत्यय**–क्रिया के कर्म का बोध कराने वाले प्रत्यय कर्मवाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं। ये प्रत्यय 'औना', 'नी', 'ना' आदि हैं।

कर्मवाचक कृत् प्रत्यय	मूल शब्द	निर्मित शब्द
औना	बिछ, खेल	बिछौना, खिलौना
नी	ओढ़	ओढ़नी
ना	ओढ़, बचा, खिला	ओढ़ना, बचाना, खिलाना

(iii) **करणवाचक कृत् प्रत्यय**–क्रिया के साधन का ज्ञान कराने वाले करणवाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं। ये प्रत्यय 'आ', 'आनी', 'ना', 'औटी', 'ई' आदि हैं।

करणवाचक कृत् प्रत्यय	मूल शब्द	निर्मित शब्द
ना	ढक, चल, खा	ढकना, चलना, खाना
ऊ	झाड़	झाड़ू
औटी	कस	कसौटी
आ	झूल, घेर	झूला, घेरा
आनी	मथ	मथानी
ई	बोल, फाँस	बोली, फाँसी

(iv) **भाववाचक कृत् प्रत्यय**–भाववाचक संज्ञाएँ बनाने वाले प्रत्यय भाववाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं। ये प्रत्यय हैं–'आ', 'आई', 'आन', 'आप', 'आवट', 'आस', 'ई', 'औती' आदि। जैसे–

भाववाचक कृत् प्रत्यय	मूल शब्द	निर्मित शब्द
आवट	लिख, मिल	लिखावट, मिलावट
आस	पी	प्यास
ई	बोल	बोली
औती	कट	कटौती
आवा	बुला	बुलावा
आ	फेर	फेरा
आई	लड़, पढ़, कमा, लिख	लड़ाई, पढ़ाई, कमाई, लिखाई,
आन	मिल, लगा, उड़ा, उठा	मिलान, लगान, उड़ान, उठान
आप	मिल	मिलाप
आव	बह, कट, चढ़	बहाव, कटाव, चढ़ाव

(v) **क्रियावाचक कृत् प्रत्यय**–क्रियावाचक कृत् प्रत्यय वे हैं, जिनसे भूतकाल या वर्तमान काल को बताने वाले विशेषण अथवा अव्यय बनते हैं। ये प्रत्यय हैं–'आ', 'ता', 'या' आदि।

विशेष–'क्रियावाचक कृत् प्रत्यय' के विषय में कुछ विशेष बातें महत्वपूर्ण हैं–

(क) मूल धातु 'ता' लगाकर यदि उसके बाद 'हुआ' लगाया जाए, तो वर्तमान काल का विशेषण बन जाता है। जैसे–आना में 'ता' लगाकर बना 'आता', अब 'आता हुआ' विशेषण बन गया।

(ख) क्रियाद्योतक कृदंतों के अंतिम 'आ' यदि 'ए' कर दिया जाए, तो वह अव्यय बन जाता है; जैसे–वह खेलते-खेलते रो पड़ा।

क्रियावाचक कृत् प्रत्यय	मूल शब्द	निर्मित शब्द
आ	चल	चला
ता	बोल	बोलता
या	सो, रो	सोया, रोया
ते	हँस	हँसते

2. तद्धित प्रत्यय

वे प्रत्यय जो धातुओं को छोड़कर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा अव्यय शब्दों के अंत में जुड़कर उन शब्दों के अर्थ में विशेषता उत्पन्न करते हैं और उन्हें नया रूप देते हैं, वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

तद्धित प्रत्यय के भेद–तद्धित प्रत्यय के छह भेद हैं–

(i) अपत्यवाचक तद्धित प्रत्यय–शब्द के रूप में आंतरिक परिवर्तन लाने वाले प्रत्यय अपत्यवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

अपत्यवाचक तद्धित प्रत्यय	मूल शब्द	निर्मित शब्द
अण्	नर	नारायण
अ	पांडु	पांडव
इय	कुंती	कौंतेय
य	चणक	चाणक्य

(ii) कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय–जिन प्रत्ययों से करने वाले, बेचने वाले अथवा बनाने वाले का बोध होता है, उन्हें कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय	मूल शब्द	निर्मित शब्द
वाला	दूध, सब्ज़ी	दूधवाला, सब्ज़ीवाला
हारा	लकड़ी	लकड़हारा
आर	सोना, लोहा	सुनार, लुहार
एरा	साँप	सपेरा
ई	रोग, भोग	रोगी, भोगी

(iii) भाववाचक तद्धित प्रत्यय–जिन प्रत्ययों से संज्ञा या विशेषण शब्द किसी भाव विशेष का बोध कराते हों, उन्हें भाववाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

भाववाचक तद्धित प्रत्यय	मूल शब्द	निर्मित शब्द
त्व	देवता, मनुष्य	देवत्व, मनुष्यत्व
आस	मीठा, खट्टा	मिठास, खटास
आपा	बूढ़ा	बुढ़ापा
आ	आप	आपा
ता	सुंदर, लघु	सुंदरता, लघुता

(iv) गुणवाचक तद्धित प्रत्यय–जिन प्रत्ययों के प्रयोग से शब्द विशेषण रूप में बदल जाए, उन्हें गुणवाचक तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

गुणवाचक तद्धित प्रत्यय	मूल शब्द	निर्मित शब्द
मान	श्री, गति, बुद्धि	श्रीमान, गतिमान, बुद्धिमान
ईला	रंग, चमक	रंगीला, चमकीला
वी	माया, मेधा	मायावी, मेधावी

गुणवाचक तद्धित प्रत्यय	मूल शब्द	निर्मित शब्द
आलु	दया, कृपा	दयालु, कृपालु
इक	धर्म	धार्मिक
ईय	प्रांत, स्वर्ग	प्रांतीय, स्वर्गीय
इत	हर्ष, आनंद	हर्षित, आनंदित

(v) **ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय**–ऊन अर्थात लघुता का ज्ञान करवाने वाले प्रत्यय ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

ऊनतावाचक तद्धित प्रत्यय	मूल शब्द	निर्मित शब्द
इया	लोटा, खाट	लुटिया, खटिया
ई	रस्सा, ढोलक	रस्सी, ढोलकी
ड़ी	संदूक, पंख	संदूकड़ी, पंखुड़ी

(vi) **स्त्रीलिंगवाचक तद्धित प्रत्यय**–स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्दों का निर्माण करने वाले प्रत्यय स्त्रीलिंगवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

स्त्रीलिंगवाचक तद्धित प्रत्यय	मूल शब्द	निर्मित शब्द
आणी	इंद्र, रूद्र	इंद्राणी, रुद्राणी
ई	नाना, घोड़ा	नानी, घोड़ी
नी	मोर, भील	मोरनी, भीलनी
आ	छात्र, वृद्ध	छात्रा, वृद्धा
आनी	सेठ, देवर	सेठानी, देवरानी

मुख्य बातें–

- प्रत्यय शब्दों के अंत में लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन ले आते हैं।
- प्रत्यय के दो भेद हैं– अ. कृत् प्रत्यय ब. तद्धित प्रत्यय

समझ की परख

क. सही वाक्य पर ✓ तथा गलत पर ✗ का चिह्न लगाइए–

1. क्रिया के कर्म का बोध करवाने वाले प्रत्यय कर्मवाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।
2. 'उड़ान' में 'ड़ान' प्रत्यय है।

3. 'प्यास' में 'आस' प्रत्यय है।
4. 'श्रीमान' में 'मान' प्रत्यय है।
5. प्रत्यय शब्दों के आरंभ में लगकर अर्थ में विशेषता लाते हैं।
6. प्रत्यय जुड़ने से अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं आता।
7. भाववाचक संज्ञाएँ बनाने वाले प्रत्यय भाववाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

ख. मूल शब्द तथा प्रत्यय अलग-अलग कीजिए–

		मूल शब्द	प्रत्यय
1.	साहित्यिक –	....	....
2.	मायावी –	....	....
3.	मिलावट –	....	....
4.	कमाऊ –	....	....
5.	बचपन –	....	....
6.	देवत्व –	....	....
7.	प्रांतीय –	....	....
8.	गरीबी –	....	....
9.	भीलनी –	....	....

ग. शब्दों में उचित प्रत्यय जोड़िए और नए शब्द लिखिए–

1. सुंदर + ... = ...
2. रोग + ... = ...
3. धर्म + ... = ...
4. लघु + ... = ...
5. चमक + ... = ...
6. कृपा + ... = ...

घ. निम्नलिखित शब्दों में कौन-सा प्रत्यय जुड़ा है? सही उत्तर सामने खाली स्थान में लिखिए–

1. मनुष्यत्व–
   अ. त्व ब. यत्व स. व द. यत ....
2. रंगीला–
   अ. गीला ब. ईला स. ला द. इला ....
3. सामाजिक–
   अ. क ब. इक स. जिक द. ईक ....
4. लिखावट–
   अ. वट ब. खावट स. आवट द. ट ....
5. आनंदित–
   अ. दिन ब. त स. नंदित द. इत ....

ङ. नीचे मूल शब्द तथा प्रत्यय दिए गए हैं। आप सही जोड़े को पहचानकर सामने लिखिए–

1. पढ़ाई–

   अ. पढ़ + ई ब. पढ़ + आई ....

   स. पढ़ा + ई द. प + ढ़ाई

2. भारतीय–

   अ. भारत + इय ब. भारती + य ....

   स. भारत + ईय द. भारति + इय

3. लुहार–

   अ. लोहा + र ब. लोहा + आर ....

   स. लु + हार द. ल + उहार

4. हर्षित–

   अ. हर्ष + इत ब. हर्ष + ईत ....

   स. हर्ष + स द. हर्ष + ई + त

5. खटिया–

   अ. ख + टिया ब. खाट + इया ....

   स. खट + या द. खटि + इया

शब्द-निर्माण : समास

(Compound)

गिरि को धारण करने वाला है जो (श्री कृष्ण)

दही में डूबा हुआ बड़ा

वन का वासी

ऊपर दिए गए शब्द समूहों को ध्यान से देखिए। हम उनका संक्षेपीकरण करके ऐसे नए शब्द बना सकते हैं, जिनका अर्थ पूर्ववत ही रहेगा; जैसे–

गिरि को धारण करने वाला है जो (श्री कृष्ण) = गिरिधर

दही में डूबा हुआ बड़ा = दहीबड़ा

वन का वासी = वनवासी

परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक पदों का मेल ही समास कहलाता है।

समास का अर्थ है–संक्षिप्त करना, अर्थात परस्पर संबंध रखने वाले शब्दों के मेल से नए शब्द बनाने की क्रिया 'समास' है। इस विधि से संक्षिप्त किए गए शब्द 'समस्तपद' कहलाते हैं; जैसे–

नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव–नीलकंठ। यहाँ 'नीलकंठ' समस्तपद है।

विशेष–

1. उपसर्ग तथा प्रत्यय की तरह समास भी यौगिक शब्द बनाने की एक विधि है।
2. समास के लिए दो पद होने आवश्यक हैं।
3. समस्तपद के प्रथम पद को 'पूर्व पद' तथा द्वितीय पद को 'उत्तर पद' कहा जाता है।
4. समस्तपद बनाते समय दोनों पदों के बीच की विभक्तियाँ, अन्य शब्द या योजक आदि का लोप हो जाता है।

समास-विग्रह–

समस्तपदों को पुनः पृथक करने की प्रक्रिया समास-विग्रह कहलाती है।

सामासिक शब्द		विग्रह
त्रिलोक	=	तीन लोकों का समूह
चौराहा	=	चार राहों का समूह
शताब्दी	=	सौ वर्षों का समूह
कमलनयन	=	कमल जैसे नयन
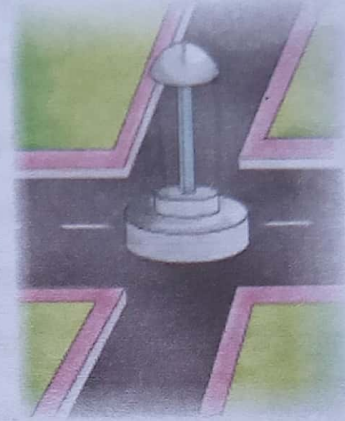
समास के भेद– समास के मुख्यतः चार भेद हैं–

1. **अव्ययीभाव समास** – पूर्व पद प्रधान
2. **तत्पुरुष समास** – उत्तर पद प्रधान
3. **द्वंद्व समास** – उभय पद प्रधान
4. **बहुव्रीहि समास** – अन्य पद प्रधान
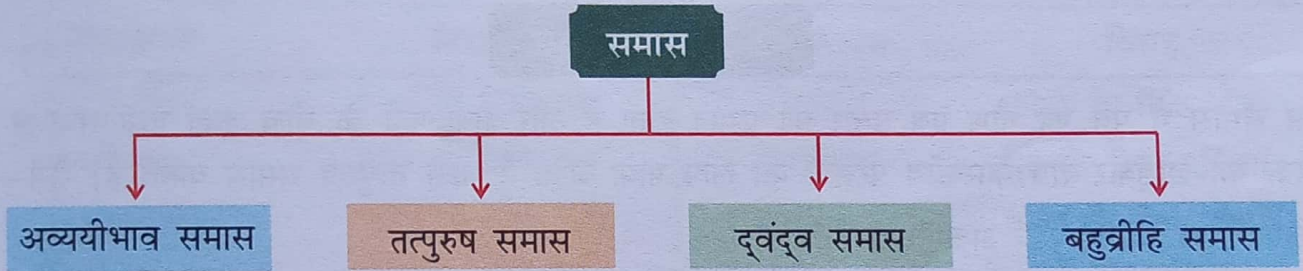
1. अव्ययीभाव समास

जिस समस्तपद का पूर्व पद प्रधान तथा अव्यय हो, अव्ययीभाव समास कहलाता है। इस प्रक्रिया से बना सामासिक पद भी अव्यय की भाँति कार्य करता है।

1. इसमें पूर्व पद अव्यय तथा प्रधान होता है, किंतु हिंदी समासों में अपवादस्वरूप कई बार पूर्व पद संज्ञा या विशेषण भी हो सकता है; जैसे–घर-घर (घर संज्ञा है।)
2. 'यथा', 'प्रति', 'भर', 'आ' यदि पूर्व में हों, तो अव्ययीभाव ही बनता है; जैसे–यथाविधि, प्रतिदिन, भरपेट, आजन्म

उदाहरण–

समस्तपद	विग्रह
प्रतिदिन –	दिन-दिन
प्रत्येक –	एक-एक
प्रतिमास –	हर मास

समस्तपद	विग्रह
यथाशक्ति –	शक्ति के अनुसार
यथानियम –	नियम के अनुसार
यथामति –	मति के अनुसार

समस्तपद		विग्रह
प्रतिवर्ष	–	हर वर्ष
बेकाम	–	बिना काम के
बेशक	–	बिना संदेह
बाकायदा	–	कायदे के अनुसार
आमरण	–	मरण तक
आजन्म	–	जन्म से लेकर
आजीवन	–	जीवन-पर्यंत
प्रत्यक्ष	–	आँखों के सामने
प्रतिक्षण	–	प्रत्येक क्षण

समस्तपद		विग्रह
यथावसर	–	अवसर के अनुसार
यथासमय	–	समय के अनुसार
हररोज़	–	रोज़-रोज़
बेफ़ायदा	–	फ़ायदे के बिना
दिनोंदिन	–	दिन ही दिन में
रातोंरात	–	रात ही रात में
कानोंकान	–	कान ही कान में
हाथोंहाथ	–	हाथ ही हाथ में
भरपेट	–	पेट भर के

2. तत्पुरुष समास

जिस समास में पूर्व पद गौण एवं उत्तर पद प्रधान होता है और दोनों पदों के बीच कर्ता तथा संबोधन कारक को छोड़कर शेष कारकीय परसर्गों का लोप पाया जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं; जैसे–

अकालपीड़ित	अकाल से पीड़ित
वनवास	वन में वास
धनहीन	धन से हीन

स्पष्ट है कि यहाँ समस्तपदों में क्रमशः 'से', 'में', 'से' विभक्तियों का लोप हुआ है। साथ ही 'पीड़ित', 'वास' तथा 'हीन' पद की प्रधानता है।

(क) **तत्पुरुष समास के सामान्य भेद**–कारकीय परसर्गों के लोप के आधार पर तत्पुरुष समास के निम्नलिखित भेद हैं–

1. **कर्म तत्पुरुष**–इसमें कर्मकारक की विभक्ति 'को' का लोप होता है; जैसे–

समस्तपद		विग्रह
पदप्राप्त	–	पद को प्राप्त
आशातीत	–	आशा को लाँघकर गया हुआ
गृहागत	–	गृह को आगत
ग्रंथकार	–	ग्रंथ को करने वाला
ग्रामगत	–	ग्राम को गया हुआ

समस्तपद		विग्रह
परलोकगमन	–	परलोक को गमन
रथचालक	–	रथ को चलाने वाला
यशप्राप्त	–	यश को प्राप्त
विदेशगत	–	विदेश को गया हुआ
स्वर्गप्राप्त	–	स्वर्ग को प्राप्त

2. **करण तत्पुरुष**—इसमें करण कारक की विभक्ति 'से' का लोप होता है; जैसे—

समस्तपद		विग्रह
गुरुदत्त	–	गुरु द्वारा दत्त
तुलसीकृत	–	तुलसी द्वारा कृत
दयार्द्र	–	दया से आर्द्र
प्रेमातुर	–	प्रेम से आतुर
धनसंपन्न	–	धन से संपन्न
अकालपीड़ित	–	अकाल से पीड़ित
अनुभवजन्य	–	अनुभव से जन्य
ईशप्रदत्त	–	ईश द्वारा प्रदत्त

समस्तपद		विग्रह
भुखमरा	–	भूख से मरा
मदांध	–	मद से अंधा
मनमाना	–	मन से माना
रेखांकित	–	रेखा से अंकित
रोगमुक्त	–	रोग से मुक्त
बाणहित	–	बाण से हत
भयाकुल	–	भय से आकुल
शोकाकुल	–	शोक से आकुल

3. **संप्रदान तत्पुरुष**—इसमें संप्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' का लोप होता है; जैसे—

समस्तपद		विग्रह
डाकघर	–	डाक के लिए घर
बलिपशु	–	बलि के लिए पशु
युद्धभूमि	–	युद्ध के लिए भूमि
यज्ञशाला	–	यज्ञ के लिए शाला
पाठशाला	–	पठन के लिए शाला
हथकड़ी	–	हाथों के लिए कड़ी
आरामकुरसी	–	आराम के लिए कुरसी
हवनसामग्री	–	हवन के लिए सामग्री
मालगोदाम	–	माल के लिए गोदाम

समस्तपद		विग्रह
क्रीड़ाक्षेत्र	–	क्रीड़ा के लिए क्षेत्र
गुरुदक्षिणा	–	गुरु के लिए दक्षिणा
कृष्णार्पण	–	कृष्ण के लिए अर्पण
गौशाला	–	गौ के लिए शाला
देशभक्ति	–	देश के लिए भक्ति
देवबलि	–	देव के लिए बलि
रणनिमंत्रण	–	रण के लिए निमंत्रण
राहखर्च	–	राह के लिए खर्च
रसोईघर	–	रसोई के लिए घर

4. **अपादान तत्पुरुष**—इसमें अपादान कारक की विभक्ति 'से' का लोप होता है; जैसे—

समस्तपद		विग्रह
पथभ्रष्ट	–	पथ से भ्रष्ट
गुणहीन	–	गुण से हीन
भयभीत	–	भय से भीत
आकाशवाणी	–	आकाश से आगत वाणी
ईश्वरविमुख	–	ईश्वर से विमुख

समस्तपद		विग्रह
ऋणमुक्त	–	ऋण से मुक्त
पदच्युत	–	पद से च्युत
जन्मांध	–	जन्म से अंधा
सर्वोत्तम	–	सभी में उत्तम
धर्मभ्रष्ट	–	धर्म से भ्रष्ट

5 **संबंध तत्पुरुष**–इसमें संबंधकारक की विभक्ति 'का/के/की' लोप होता है; जैसे–

समस्तपद		विग्रह
गृहस्वामिनी	–	गृह की स्वामिनी
घुड़दौड़	–	घोड़ों की दौड़
पराधीन	–	पर के अधीन
देवालय	–	देव का आलय
लक्ष्मीपति	–	लक्ष्मी का पति
लखपति	–	लाखों (रुपयों) का पति
आज्ञानुसार	–	आज्ञा के अनुसार
अछूतोद्धार	–	अछूतों का उद्धार
उद्योगपति	–	उद्योग का पति
कामचोर	–	काम करने का चोर
गंगातट	–	गंगा का तट

समस्तपद		विग्रह
देवमूर्ति	–	देवता की मूर्ति
अमचूर	–	आम का चूरा
गुरुभाई	–	गुरु के संबंध से भाई
रामानुज	–	राम का अनुज
कुंतीपुत्र	–	कुंती का पुत्र
प्रसंगानुसार	–	प्रसंग के अनुसार
राजपुत्र	–	राजा का पुत्र
सूतपुत्र	–	सूत का पुत्र
राष्ट्रपति	–	राष्ट्र का पति
राजमाता	–	राजा की माता
रामभक्त	–	राम का भक्त

6. **अधिकरण तत्पुरुष**–इसमें अधिकरण कारक की 'में/पर' विभक्ति का लोप होता है; जैसे–

समस्तपद		विग्रह
कविशिरोमणि	–	कवियों में शिरोमणि
कानाफूसी	–	कानों में फुसफुसाहट
गृहप्रवेश	–	गृह में प्रवेश
आपबीती	–	आप पर बीती
आत्मविश्वास	–	आत्म (स्वयं) पर विश्वास
आनंदमग्न	–	आनंद में मग्न
कलाप्रवीण	–	कला में प्रवीण

समस्तपद		विग्रह
दानवीर	–	दान देने में वीर
पुरुषोत्तम	–	पुरुषों में उत्तम
युद्धवीर	–	युद्ध में वीर
शोकमग्न	–	शोक में मग्न
घुड़सवार	–	घोड़े पर सवार
देशाटन	–	देश में अटन (भ्रमण)
शरणागत	–	शरण में आगत

(ख) तत्पुरुष समास के अन्य भेद–तत्पुरुष समास के अन्य भेद निम्नलिखित हैं– (i) कर्मधारय समास (ii) द्विगु समास

(i) **कर्मधारय समास**–जहाँ पूर्व पद तथा उत्तर पद के बीच उपमेय-उपमान या विशेष्य-विशेषण का संबंध हो, वहाँ कर्मधारय समास होता है। इस समास को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है–

1. विशेषण-विशेष्य संबंध से कर्मधारय
2. उपमेय-उपमान संबंध से कर्मधारय

1. **विशेषण-विशेष्य संबंध से कर्मधारय–**

समस्तपद	विग्रह
नीलकमल –	नीला है जो कमल
लालमिर्च –	लाल है जो मिर्च
कृष्णसर्प –	कृष्ण है जो सर्प
महादेव –	महान है जो देव
नीलगाय –	नीली है जो गाय

समस्तपद	विग्रह
श्वेतांबर –	श्वेत है जो अंबर
नीलकंठ –	नीला है जो कंठ
सज्जन –	सत् है जो जन
नीलगगन –	नीला है जो गगन
पीतांबर –	पीत है जो अंबर

2. **उपमेय-उपमान संबंध से कर्मधारय–**

समस्तपद	विग्रह
स्त्रीरत्न –	स्त्री रूपी रत्न
गुरुदेव –	गुरु रूपी देव
प्राणप्रिय –	प्राणों के समान प्रिय
विद्याधन –	विद्या रूपी धन
घनश्याम –	घन के समान श्याम

समस्तपद	विग्रह
पुरुषरत्न –	पुरुषों में है जो रत्न
मृगलोचन –	मृग के समान लोचन
कनकलता –	कनक के समान लता
क्रोधाग्नि –	क्रोध रूपी अग्नि
चंद्रमुख –	चंद्र के समान मुख

(ii) **द्विगु समास**–जहाँ पूर्व पद संख्यावाचक हो तथा समस्तपद समूह अथवा समाहार का ज्ञान करवाए, वहाँ द्विगु समास होता है। द्विगु अर्थात दो गौओं का समूह। इस प्रकार यह शब्द स्वयं अपना उदाहरण बन जाता है; जैसे–

समस्तपद	विग्रह
चवन्नी –	चार आनों का समूह
पंचवटी –	पाँच वटों का समूह
पंजाब –	पाँच आबों का समूह
शताब्दी –	सौ वर्षों का समूह
नवग्रह –	नव ग्रहों का समाहार
पंचतंत्र –	पाँच तंत्रों का समूह
अष्टसिद्धि –	आठ सिद्धियों का समाहार
सप्ताह –	सात अहों (दिनों) का समूह
सप्तर्षि –	सात ऋषियों का समूह
चौमासा –	चार मासों का समूह

समस्तपद	विग्रह
सतसई –	सात सौ दोहों का समूह
चौराहा –	चार राहों का समूह
चातुर्वर्ण्य –	चार वर्णों का समूह
सप्तद्वीप –	सात द्वीपों का समूह
अष्टाध्यायी –	अष्ट (आठ) अध्यायों का समूह
दोपहर –	दो पहरों का समूह
अठन्नी –	आठ आनों का समूह
नवरत्न –	नौ रत्नों का समूह
तिरंगा –	तीन रंगों का समाहार
त्रिवेणी –	तीन वेणियों का समूह

3. द्वंद्व समास

समस्तपद में पूर्व तथा उत्तर दोनों ही पद समान होने की स्थिति को द्वंद्व समास कहते हैं। इसमें समस्तपद बनाते समय 'और', 'तथा' अथवा 'या' का लोप हो जाता है; जैसे–

समस्तपद		विग्रह
अपना-पराया	–	अपना और पराया
आटा-दाल	–	आटा और दाल
आशा-निराशा	–	आशा और निराशा
ऊँच-नीच	–	ऊँचा या नीचा
अन्न-जल	–	अन्न और जल
पाप-पुण्य	–	पाप या पुण्य
रात-दिन	–	रात और दिन
धूप-दीप	–	धूप और दीप
हानि-लाभ	–	हानि या लाभ
राजा-रंक	–	राजा और रंक

समस्तपद		विग्रह
भला-बुरा	–	भला और बुरा
माँ-बाप	–	माँ और बाप
नर-नारी	–	नर और नारी
देवासुर	–	देव और असुर
गुण-दोष	–	गुण और दोष
दूध-दही	–	दूध और दही
भीमार्जुन	–	भीम और अर्जुन
न्यूनाधिक	–	न्यून और अधिक
जन्म-मरण	–	जन्म और मरण
राधा-कृष्ण	–	राधा और कृष्ण
रुपया-पैसा	–	रुपया और पैसा

4. बहुव्रीहि समास

जहाँ पूर्व तथा उत्तर दोनों ही पदों में से किसी की भी प्रधानता नहीं होती, वरन किसी अन्य पद की प्रधानता होती है, वहाँ बहुव्रीहि समास होता है; जैसे–लंबोदर–लंबा है उदर जिसका अर्थात गणेश। स्पष्ट है कि यहाँ 'लंबा' तथा 'उदर' में से कोई पद प्रधान नहीं है, बल्कि ये दोनों तीसरे पद 'गणेश जी' के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

कुछ अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं–

समस्तपद		विग्रह
त्रिनेत्र	–	तीन नेत्र हैं जिसके अर्थात शिव
जितेंद्रिय	–	जीत ली हैं इंद्रियाँ जिसने अर्थात कोई व्यक्ति
तीव्रबुद्धि	–	तीव्र है बुद्धि जिसकी अर्थात व्यक्ति विशेष
अंशुमाली	–	अंशु है माला जिनकी अर्थात सूर्य
अनाथ	–	जिसका कोई नाथ न हो अर्थात कोई बालक
चक्रधर	–	चक्र धारण करने वाला अर्थात कृष्ण
चतुर्मुख	–	चार हैं मुख जिसके अर्थात ब्रह्मा
चतुर्भुज	–	चार हैं भुजाएँ जिसकी अर्थात विष्णु
चक्रपाणि	–	चक्र है पाणि (हाथ में) जिसके अर्थात विष्णु

समस्तपद		विग्रह
निशाचर	–	निशा में विचरण करने वाला अर्थात राक्षस
चंद्रशेखर	–	चंद्र हैं शेखर (मस्तक) पर जिसके अर्थात शिव
अजातशत्रु	–	अजात अर्थात नहीं पैदा हुआ है शत्रु जिसका
मृत्युंजय	–	मृत्यु को भी जीत लिया है जिसने अर्थात शिव
मेघनाद	–	मेघ के समान नाद है जिसका अर्थात रावण पुत्र मेघनाद
चंद्रमौलि	–	चंद्र है मौलि में जिसके अर्थात शिव
अनमोल	–	जिसका कोई मोल न हो अर्थात कोई वस्तु विशेष
घनश्याम	–	घन के समान श्याम अर्थात कृष्ण
परशुधर	–	परशु धारण करने वाला है जो अर्थात परशुराम
रत्नगर्भा	–	रत्न हैं गर्भ में जिसके अर्थात पृथ्वी
गिरिधर	–	गिरि को धारण करने वाले हैं जो अर्थात कृष्ण
दशानन	–	दश हैं आनन जिसके अर्थात रावण
गजानन	–	गज के आनन के समान आनन है जिसका अर्थात गणेश
महात्मा	–	महान है आत्मा जिसकी
नीलकंठ	–	नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव
पतिव्रता	–	पति ही है व्रत जिसका
पीतांबर	–	पीत (पीले) हैं अंबर जिसके अर्थात कृष्ण
मुरलीधर	–	मुरली को धारण करने वाले हैं जो अर्थात कृष्ण

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर

कर्मधारय समास के दोनों पदों में उपमेय-उपमान अथवा विशेषण-विशेष्य का संबंध होता है, जबकि बहुव्रीहि समास के दोनों पद अप्रधान होते हुए किसी तीसरे अथवा विशेष अर्थ की ओर संकेत करते हैं; जैसे–

महात्मा	=	महान	+	आत्मा	=	महान है जो आत्मा
		(विशेषण)	+	(विशेष्य)		(कर्मधारय समास)
चरणकमल	=	चरण	+	कमल	=	कमल के समान चरण
		(उपमेय)	+	(उपमान)		(कर्मधारय समास)

* उपमेय अर्थात प्रस्तुत यानी जिसके विषय में वर्णन किया जा रहा है।

उपमान अर्थात अप्रस्तुत यानी जिसके द्वारा प्रस्तुत (उपमेय) के विषय में बताया जा रहा है।

महात्मा = महान है आत्मा जिसकी अर्थात विशेष व्यक्ति अथवा महात्मा गांधी (बहुव्रीहि समास)

चरणकमल = चरण हैं कमल के समान जिसके अर्थात श्रीकृष्ण

अथवा

कमल के समान हैं चरण जिसके अर्थात श्रीकृष्ण (बहुव्रीहि समास)

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास की भाँति द्विगु समास भी कई बार भ्रमित करता है; जैसे–'दशानन' समस्तपद को हम कर्मधारय समास भी मान सकते हैं, बहुव्रीहि समास भी और द्विगु समास भी। आइए जानें, कैसे–

दस हैं जिसके आनन – दशानन – दस + आनन – (कर्मधारय)

(विशेषण) + (विशेष्य)

दस आनन हैं जिसके अर्थात रावण (बहुव्रीहि)

दस आननों का समूह (द्विगु)

अत: यह निर्भर करता है कि समस्तपद का समास-विग्रह किस प्रकार किया जा रहा है। यदि उसका विग्रह संख्या और समूह के रूप में किया जा रहा है, तो वहाँ द्विगु समास होगा और यदि विशेषण-विशेष्य अथवा उपमेय-उपमान के रूप में किया जा रहा है, तो कर्मधारय समास होगा, अन्यथा बहुव्रीहि समास होगा।

संधि और समास में अंतर

संधि और समास में निम्नलिखित अंतर होते हैं–

1. संधि वर्णों के मेल को कहते हैं। समास शब्दों के मेल को कहते हैं।
2. वर्णों के मेल से संधि में वर्ण-परिवर्तन होता है जबकि समास में प्राय: ऐसा नहीं होता।
3. समास में समस्त पदों के मध्य में आने वाली विभक्तियाँ या समुच्चयबोधक लोप हो जाता है अर्थात प्रयुक्त नहीं होता। उदाहरण–

पाकशाला = पाक के लिए शाला। यहाँ 'के लिए' विभक्ति का लोप हुआ है। कई शब्दों में संधि और समास दोनों के उदाहरण मिल जाते हैं; जैसे–

हिमालय	हिम का आलय	तत्पुरुष समास
	हिम + आलय	दीर्घ संधि

मुख्य बातें–

- परस्पर संबंध रखने वाले दो शब्दों का मेल समास कहलाता है।
- समास के लिए दो पदों का होना आवश्यक है।
- समस्तपद में प्रथम पद को पूर्व पद तथा द्वितीय पद को उत्तर पद कहते हैं।
- समस्तपदों को पृथक करने की प्रक्रिया 'समास-विग्रह' कहलाती है।
- समास के मुख्यत: चार भेद हैं– अ. अव्ययीभाव समास ब. तत्पुरुष समास स. द्वंद्व समास द. बहुव्रीहि समास
- तत्पुरुष के उपभेद हैं– अ. कर्मधारय ब. द्विगु

समझ की परख

क. दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. समास किसे कहते हैं?
2. अव्ययीभाव समास की परिभाषा दीजिए।
3. तत्पुरुष समास किसे कहते हैं? दो उदाहरण दीजिए।
4. कर्मधारय समास से आप क्या समझते हैं?
5. बहुव्रीहि समास के बारे में आप क्या जानते हैं?
6. उदाहरण देकर कर्मधारय तथा बहुव्रीहि समास में अंतर स्पष्ट कीजिए।

ख. विग्रह करके समास भेद लिखिए–

	समस्त पद		विग्रह	भेद
1.	देवालय	–	....	....
2.	रोगमुक्त	–	....	....
3.	गृहप्रवेश	–	....	....
4.	युधिष्ठिर	–	....	....
5.	आज्ञानुसार	–	....	....
6.	नीलकमल	–	....	....
7.	रातोंरात	–	....	....
8.	आशातीत	–	....	....
9.	पाठशाला	–	....	....
10.	आजीवन	–	....	....

ग. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. जहाँ पूर्व तथा उत्तर दोनों पदों को छोड़कर कोई अन्य पद प्रधान होता है, उसे .... समास कहते हैं।
2. जहाँ पूर्व पद संख्यावाचक हो तथा समस्त पद समूह का कार्य करे, उसे .... समास कहते हैं।
3. जहाँ पूर्व तथा उत्तर पद में उपमेय-उपमान या विशेष्य-विशेषण का संबंध हो उसे .... समास कहते हैं।
4. जिस समस्त पद का पूर्व पद प्रधान हो, उसे .... समास कहते हैं।

घ. कॉलम 'क' तथा 'ख' में समस्तपद को सही समास भेद से मिलाइए–

	क	ख
1.	स्त्रीधन	बहुव्रीहि समास
2.	नवग्रह	द्वंद्व समास
3.	अंशुमाली	द्विगु समास
4.	आशा-निराशा	कर्मधारय समास
5.	आजन्म	तत्पुरुष समास
6.	गंगाजल	अव्ययीभाव समास

ङ. दिए गए वाक्यों में सही पर ✓ तथा गलत पर ✗ का चिह्न लगाइए–

1. सप्तर्षि का विग्रह है–'सप्त हो जो ऋषि'
2. 'राजा-रंक' द्विगु समास का उदाहरण है।
3. 'गुरु-दक्षिणा' का विग्रह है–'गुरु के लिए दक्षिणा।'
4. 'वनवास' तत्पुरुष समास का उदाहरण है।
5. द्विगु समास में पूर्वपद संख्यावाचक नहीं होता।

च. समस्त पद के भेद के सही उत्तर को सामने लिखिए–

1. आमरण
   अ. द्वंद्व समास ब. अव्ययीभाव समास स. तत्पुरुष समास द. कर्मधारय समास ....
2. अकाल पीड़ित
   अ. तत्पुरुष ब. द्वंद्व स. बहुव्रीहि द. कर्मधारय ....
3. नीलगाय
   अ. कर्मधारय ब. द्विगु स. तत्पुरुष द. बहुव्रीहि ....
4. सप्ताह
   अ. द्वंद्व ब. बहुव्रीहि स. द्विगु द. कर्मधारय ....
5. त्रिनेत्र
   अ. तत्पुरुष ब. द्वंद्व स. बहुव्रीहि द. कर्मधारय ....
6. दहीबड़ा
   अ. कर्मधारय ब. तत्पुरुष स. द्वंद्व द. द्विगु ....

छ. निम्नलिखित समस्त पदों का निर्देशानुसार विग्रह कीजिए–

नीलकंठ – कर्मधारय – ....
बहुव्रीहि – ....

दशानन – कर्मधारय – ....
बहुव्रीहि – ....

पदक्रम तथा अन्वय

(Concord)

शुद्ध वाक्य रचना दो बातों पर निर्भर करती है–

1. पदक्रम 2. अन्वय

पदक्रम

माली है लगाता पौधा।

ऊपर लिखे वाक्य को पढ़ने पर हमें इसका वांछित अर्थ नहीं मिलता क्योंकि वाक्य में प्रयुक्त पद व्यवस्थित और क्रमानुसार नहीं हैं।

वाक्य का सही अर्थ जानने के लिए आवश्यक है कि पदों को उपयुक्त क्रम में प्रयुक्त करें; जैसे–

माली पौधा लगाता है।

वाक्य के अर्थ तथा पदों के पारस्परिक संबंध को जानने के लिए शब्दों को क्रमानुसार रखना ही पदक्रम कहलाता है।

पदक्रम संबंधी नियम–पदक्रम संबंधी नियम निम्नलिखित हैं–

1. वाक्य में कर्ता का स्थान आरंभ में होता है; जैसे–

   नेता जी ने बाढ़ग्रस्त इलाके का दौरा किया।

   संबोधन का प्रयोग कर्ता से भी पहले होता है; जैसे–

   अ. **वाह**! नेता जी ने बाढ़ग्रस्त इलाके का दौरा किया।

   ब. **अरे मोहिनी**! तुम कब आईं?

2. कर्म कर्ता के बाद और क्रिया से पहले आता है। द्विकर्मक क्रिया होने पर पहले गौण कर्म और बाद में मुख्य कर्म आता है; जैसे–

   अ. वह **फल** खाता है। ('फल'–कर्म) कर्ता और क्रिया के बीच में

   ब. मोहित कक्षा का **मॉनीटर** है। ('मॉनीटर'–पूरक) कर्ता और क्रिया के बीच

   स. माँ **बच्चे को दाल** खिलाती है। ('बच्चे को'–गौण कर्म, 'दाल'–मुख्य कर्म) पहले गौण कर्म फिर मुख्य कर्म

3. कर्ता का विस्तार कर्ता पद से पूर्व आता है तथा विधेय का विस्तार भी विधेय से पूर्व ही आता है; जैसे–

   भला व्यक्ति सदैव आदरणीय होता है।

   उपर्युक्त वाक्य में 'भला' व्यक्ति कर्ता का विस्तार है। 'सदैव आदरणीय होता है' विधेय का विस्तार है।

4. संबंधकारक अपने संबंधित पद से पहले आता है; जैसे–

   मोहन की बहन गा रही है।

   वाक्य में करण, संप्रदान, अपादान तथा अधिकरण कारक एक साथ आने पर इनका क्रम उलट जाता है।

   जैसे–नीरज ने बगीचे में लगे पेड़ से अपने लिए आम तोड़े।

   अधिकरण / अपादान / संप्रदान / कर्म

5. पूर्वकालिक क्रिया मुख्य क्रिया से पहले आती है; जैसे–

   अ. वह खाकर विद्यालय गया।

   ब. नीलम हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रही थी।

6. वाक्य में 'मत' और 'नहीं' का प्रयोग क्रिया से पहले होता है; जैसे–

   अ. मैं गाना नहीं गाऊँगा।

   ब. आप यहाँ मत बैठिए।

7. प्रश्नसूचक शब्द उनसे पहले आते हैं, जिनके बारे में प्रश्न पूछा गया हो; जैसे–

   अ. बाहर कौन आया है?

   ब. तुम्हें क्या चाहिए?

8. व्यवसायसूचक शब्द या पदवी का प्रयोग विशेष्य से पूर्व होता है; जैसे–

   पं० दीनानाथ जी ने धर्म की व्याख्या की।

   उपनाम या उपाधि विशेष्य के बाद में आती है।

   जैसे–सूर्यक्रांत त्रिपाठी 'निराला' ने भिक्षुक कविता लिखी।

9. विशेषण विशेष्य से पहले और बाद में भी आ सकता है; जैसे–

   अ. उमेश ने लाल कोट पहना है। (विशेष्य से पहले विशेषण)

   ब. उमेश का कोट लाल है। (विशेष्य के बाद विशेषण)

10. 'भी', 'तो' आदि पद उन पदों के बाद आते हैं, जिस पर बल देना होता है; जैसे–

    अ. वह दिन भर पढ़ता रहा।

    ब. उसे भी बुला लीजिए।

अन्वय

हिंदी में यह अन्वय (मेल) निम्नलिखित रूप में देखा जाता है–

1. क्रिया का कर्ता व कर्म से
2. संज्ञा का सर्वनाम से
3. संबंधकारक का संबंधी से
4. विशेषण का विशेष्य से

वाक्य में आए शब्दों का परस्पर लिंग, वचन, पुरुष तथा काल आदि के अनुसार जो संबंध होता है, उसे अन्वय कहते हैं।

अन्वय संबंधी नियम–

(क) क्रिया और कर्ता का अन्वय–

1. कर्ता के विभक्ति रहित होने पर क्रिया कर्ता के अनुरूप होगी; जैसे–

   अ. फूल खिलता है।

   ब. नचिकेता अपने पिता के पास गया।

2. एक से अधिक कर्ता होने पर अथवा 'और' योजक से जुड़ने पर क्रिया बहुवचन में आती है; जैसे–

   अ. वे पत्र लिखते हैं।

   ब. लक्ष्मी और प्रियांशी गीत गाती हैं।

   अपवाद–अनेक शब्द यदि एक ही अर्थ का बोध करवाते हैं, तो क्रिया एकवचन में आती है; जैसे–

   लड़की का रंग-रूप सुंदर है।

3. एक से अधिक कर्ता-पद के लिंग भिन्न-भिन्न होने पर तथा 'और' योजक से जुड़ने पर क्रिया पुल्लिंग बहुवचन में आती है; जैसे–

   गाँव में पंचलाइट आते ही स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े, लड़के-लड़कियाँ एक-दूसरे को बधाई देने लगे।

4. कर्ता का लिंग ज्ञात न होने पर क्रिया पुल्लिंग में आती है; जैसे–

   इतनी बारिश में कौन आया है?

5. यदि किसी वाक्य में उत्तम, मध्यम तथा अन्य पुरुष एक साथ आते हैं, तो दो बातों का ध्यान रखना चाहिए–

   अ. ऐसे वाक्यों में सर्वप्रथम मध्यम पुरुष, बीच में अन्य पुरुष तथा अंत में उत्तम पुरुष आता है।

ब. वाक्य में क्रिया अंतिम कर्ता के लिंग के अनुसार बहुवचन में होगी; जैसे– तुम, वह और हम घूमने चलेंगे।

6. आदर के लिए क्रिया बहुवचन रूप में आती है; जैसे–

अ. मेरे बड़े भाई विदेश में रहते हैं।

ब. रामकृष्ण परमहंस महान थे।

7. विभक्ति रहित कर्ता पद 'या' से जुड़ते हैं, तो उनकी क्रिया अंतिम कर्ता के अनुसार होती है; जैसे–

वाद-विवाद प्रतियोगिता में दीपक या दीपिका जाएगी।

(ख) कर्म और क्रिया का अन्वय–

1. वाक्य में कर्ता पदों के साथ 'ने' विभक्ति आने पर क्रिया कर्म के अनुसार होती है; जैसे– शालिनी ने फल काटे। (क्रिया कर्म के अनुसार)
2. वाक्य में कर्ता और कर्म दोनों विभक्ति सहित होते हैं, तो क्रिया पुल्लिंग एकवचन में होती है; जैसे- मालिक ने नौकर को समझाया।
3. यदि कर्ता विभक्ति सहित है, लेकिन कर्म विभक्ति रहित है, तो (सामान्य भूत में) क्रिया कर्म के अनुरूप आती है; जैसे– नीरज ने चॉकलेट खाई।
4. वाक्य में 'भावे प्रयोग' की स्थिति में क्रिया सदैव पुल्लिंग, एकवचन और अन्य पुरुष में आती है; जैसे– हमसे बैठा नहीं जाता।
5. 'कर्मणि प्रयोग' में क्रिया कर्म के अनुरूप ही आती है।

(ग) संज्ञा और सर्वनाम का अन्वय–

सर्वनाम के लिंग, वचन उसी संज्ञा के लिंग, वचन के अनुसार होते हैं जिसके स्थान पर वह आता है; जैसे–

गुरु जी ने कहा– "मैं कल व्याकरण पढ़ाऊँगा।"

(घ) संबंध और संबंधी का अन्वय–

1. संबंध कारक का लिंग, वाक्य में उसके संबंधी के लिंग के अनुसार होता है; जैसे–

   अनीता का हार सुंदर है।

   यहाँ 'हार' संबंधी शब्द है। इसी के अनुसार क्रिया के लिंग, वचन होंगे।

2. वाक्य में कर्ता भिन्न-भिन्न लिंग के हों तथा 'और' योजक से जुड़े हों, तो उनका संबंध कारक से पहले संबंधी के अनुरूप होगा।

   जैसे– मेरा भाई और बहन मेले में जाएँगे।

(ङ.) विशेष्य और विशेषण का अन्वय–

1. विशेषण के लिंग, वचन अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं; जैसे–
   नीली साड़ी, नीला आकाश।

2. विशेषण एक और विशेष्य अनेक होने पर विशेषण के लिंग-वचन उसके निकटतम विशेष्य के अनुसार होते हैं।
   जैसे– ग्रामीण स्त्री और पुरुष आ रहे हैं।

अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करना

(क) शब्द प्रयोग संबंधी अशुद्धियाँ–

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. सभा में अनेकों लोग पधारे।	1. सभा में अनेक लोग पधारे।
2. सैनिक कमर कसा बैठा है।	2. सैनिक कमर कसे बैठा है।
3. प्रत्येकों को एक-एक कंबल दे दो।	3. प्रत्येक को एक-एक कंबल दे दो।
4. बुरा से बुरा व्यक्ति भी इज़्ज़त चाहता है।	4. बुरे से बुरा व्यक्ति भी इज़्ज़त चाहता है।

(ख) विकारी शब्द प्रयोग संबंधी अशुद्धियाँ–

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. लड़कियाँ ने गीत गाया।	1. लड़कियों ने गीत गाया।
2. उसने हस्ताक्षर कर दिया।	2. उसने हस्ताक्षर कर दिए।
3. काम हो जाने पर उसने संतोष का साँस लिया।	3. काम हो जाने पर उसने संतोष की साँस ली।
4. सभा में उपस्थित हर एक सदस्यों का यही मत था।	4. सभा में उपस्थित हर एक सदस्य का यही मत था।

(ग) कारक संबंधी अशुद्धियाँ–

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. छत में चारपाई बिछा दो।	1. छत पर चारपाई बिछा दो।
2. तेरे को पिता जी ने बुलाया है।	2. तुझे पिता जी ने बुलाया है।
3. यह काम तुम्हारे से नहीं होगा।	3. यह काम तुमसे नहीं होगा।
4. उनके माता जी हरिद्वार गई हैं।	4. उनकी माता जी हरिद्वार गई हैं।

(घ) पदक्रम संबंधी अशुद्धियाँ–

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. यह पुरानी दवाइयों की दुकान है।	1. यह दवाइयों की पुरानी दुकान है।
2. खरगोश को काटकर गाजर खिलाओ।	2. खरगोश को गाजर काटकर खिलाओ।
3. महात्मा गांधी का देश सदा आभारी रहेगा।	3. देश महात्मा गांधी का सदा आभारी रहेगा।
4. बच्चों को उबालकर काले चने खिलाओ।	4. बच्चों को काले चने उबालकर खिलाओ।

(ङ) अन्वय (कर्ता, कर्म और क्रिया) संबंधी अशुद्धियाँ–

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. गुरु जी पढ़ाता है।	1. गुरु जी पढ़ाते हैं।
2. वे भी खाना खाए हैं।	2. उन्होंने भी खाना खाया है।
3. मैं तुम और वह खेलेंगे।	3. तुम, वह और मैं खेलेंगे।
4. मैं मेरा चित्र दिखाता हूँ।	4. मैं अपना चित्र दिखाता हूँ।
5. क्या आप खाना खाए हैं?	5. क्या आपने खाना खाया है?
6. द्वार कौन खटखटा रही है?	6. द्वार कौन खटखटा रहा है?
7. तुमको, मुझको और राहुल को व्यायाम करना चाहिए।	7. तुम्हें, राहुल और मुझे व्यायाम करना चाहिए।

(च) वाच्य प्रयोग संबंधी अशुद्धियाँ–

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. पेड़ में आम लगे हैं।	1. पेड़ पर आम लगे हैं।
2. मैं दूध पिया गया।	2. मुझसे दूध पिया गया।
3. नरेंद्र पुस्तक पढ़ी गई।	3. नरेंद्र द्वारा पुस्तक पढ़ी गई।
4. कलाकार द्वारा प्रदर्शनी लगाई।	4. कलाकार ने प्रदर्शनी लगाई।

(छ) पुनरुक्ति संबंधी अशुद्धियाँ–

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. रीमा सबसे सुंदरतम है।	1. रीमा सबसे सुंदर है।
2. वह बेफ़िज़ूल की बातें करता है।	2. वह फ़िज़ूल की बातें करता है।
3. मुझे केवल मात्र दस रुपए ही चाहिए।	3. मुझे केवल दस रुपए ही चाहिए।
4. चौराहे पर भारी भरकम भीड़ जमा थी।	4. चौराहे पर भारी भीड़ जमा थी।

(ज) शब्दों के अर्थ के विषय में अज्ञानता संबंधी अशुद्धियाँ–

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. वे खाना करते हैं।	1. वे खाना खाते हैं।
2. वहाँ अनेकों भीड़ आएगी।	2. वहाँ अनेक लोग आएँगे।
3. नौकर आटा पिसवाता है।	3. नौकर गेहूँ पिसवाता है।
4. ईश्वर पर श्रद्धा करें।	4. ईश्वर पर श्रद्धा रखें।

मुख्य बातें–

- शुद्ध वाक्य रचना पदक्रम और अन्वय पर निर्भर करती है।
- वाक्य के अर्थ तथा पदों के आपसी संबंध को जानने के लिए शब्दों को क्रमानुसार रखना ही पदक्रम कहलाता है।
- वाक्य में कर्म कर्ता के बाद और क्रिया से पहले आता है।
- वाक्य में आए शब्दों का परस्पर लिंग, वचन, पुरुष तथा काल आदि के अनुसार जो संबंध होता है, उसे अन्वय कहते हैं।

समझ की परख

क. सही वाक्यों पर ✓ तथा गलत पर ✗ का चिह्न लगाइए–

1. मेरा बड़ा भाई विदेश में रहता है।
2. मुझे केवल मात्र दस रुपए ही चाहिए।
3. मैं आपकी श्रद्धा करता हूँ।
4. कश्मीर में अनेकों दर्शनीय स्थल हैं।
5. सारा कपड़ा हाथों-हाथ बिक गया।
6. उसके हाथों में बेड़ियाँ हैं।
7. वे चर्म रोग से पीड़ित थे।
8. प्रह्लाद पक्के ईश्वर भक्त थे।
9. गुड़िया की फ्राक फट गया।
10. पिता जी लौट आ गए हैं।
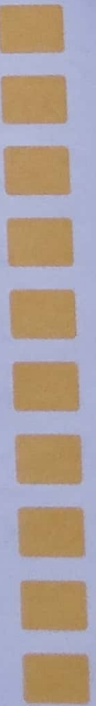
ख. वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए–

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. महादेवी वर्मा बहुत विद्वान थी।	....
2. गाय का ताकतवर दूध होता है।	....
3. तेरे पिता जी बुला रहे हैं।	....
4. मुझसे जान-बूझकर भूल हो गई।	....
5. वह पढ़ते हैं।	....
6. प्रधानमंत्री भाषण देता है।	....
7. तुम तुम्हारा काम करो।	....
8. उसने एक फूलों की माला बनाई।	....
9. मैं गुनगुने गरम पानी से नहाता हूँ।	....
10. मैं आपका दर्शन करना चाहता हूँ।	....
11. उसका प्राण-पखेरू उड़ गया।	....
12. हम यह फिल्म देखे थे।	....
13. मैंने गृहकार्य करना है।	....
14. उसके दो चाचे हैं।	....
15. उस पर घड़ा पानी पड़ गया।	....

ग. वाक्यों को पढ़िए और अशुद्ध प्रयोग वाले स्थान पर गोला (◯) लगाइए–

1. राम, लक्ष्मण और सीता वन को गई।
2. कृपया मुझे दो दीन का अवकाश देने की कृपा करें।
3. उसकी पिता जी दिल्ली में रहते हैं।
4. दिल्ली में अनेक दर्शनीय स्थल देखने योग्य हैं।
5. शायद संभवत! आज वर्षा होगी।
6. सज्जन लोग सबका भला चाहते हैं।
7. मैं आपकी इज़्ज़त रखता हूँ।
8. पुस्तक में मत लिखें।

विराम-चिह्न

(Punctuation)

1. मछली पकड़ो, मत छोड़ो। 2. मछली पकड़ो मत, छोड़ो।

ऊपर दो वाक्य लिखे गए हैं। वाक्य एक ही है, लेकिन विराम-चिह्न (,) के प्रयोग से इनका अर्थ अलग-अलग हो जाता है। विराम का अर्थ है—रुकना या विश्राम।

भाषा के मौखिक और लिखित प्रयोग में हम बीच-बीच में कभी कम या कभी ज़्यादा रुकते हैं। कभी हम कथन सुनकर आश्चर्यचकित होते हैं, तो कभी दूसरों से प्रश्न पूछते हैं, कभी साँस लेकर फिर से बात कहते हैं।

लिखित भाषा में विश्राम की प्रक्रिया को कुछ संकेत-चिह्नों द्वारा प्रकट किया जाता है, जिन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।

नीचे कुछ प्रमुख विराम-चिह्न दिए जा रहे हैं—

क्र.	नाम	चिह्न
1.	अल्पविराम	(,)
2.	अर्धविराम	(;)
3.	पूर्णविराम	(।)
4.	विस्मयादिबोधक चिह्न	(!)
5.	प्रश्नसूचक चिह्न	(?)
6.	योजक चिह्न	(-)
7.	निर्देशक चिह्न	(–)
8.	कोष्ठक	( ), [ ], { }
9.	उद्धरण चिह्न	(' ' " ")
10.	हंसपद चिह्न या विस्मरण चिह्न	(‸)
11.	लाघव चिह्न	(०)
12.	लोप चिह्न	(......)

1. **अल्पविराम (,)**– अल्पविराम के प्रयोग संबंधी नियम इस प्रकार हैं–

क. वाक्य में आए समान शब्दों तथा वाक्यों को अलग करने के लिए; जैसे–

अ. रश्मि, गरिमा, गिरिजा और गोपाल पढ़ रहे हैं।

ब. आत्मा अमर है, अजर है लेकिन शरीर मरता है।

ख. युग्म शब्दों को अलग करने के लिए; जैसे–

हानि-लाभ, जीवन-मरण, सुख-दुख विधि के हाथ में है।

ग. वाक्य में आए उपवाक्यों को अलग करने हेतु; जैसे–

जो परिश्रम करता है, सफलता उसी के चरण चूमती है।

घ. हाँ या नहीं के बाद; जैसे–

अ. हाँ, मैं यह पाठ पढ़ लूँगा।

ब. नहीं, मैं इतना नहीं खा सकता।

ङ. उपाधियों को अलग-अलग करने के लिए; जैसे–

बी० ए०, बी० एड०, एम० ए०

च. तब, यह, वह, तो आदि के स्थान पर; जैसे–(‘तब’ के स्थान पर) (‘वह’ के स्थान पर)

अ. जब मैं तुम्हारे घर पहुँचा, तुम खाना खा रहे थे।

ब. जो पुस्तक आपने भेजी थी, मुझे मिल गई है।

छ. संबोधन के पश्चात; जैसे–

बच्चो, देर तक टी० वी० मत देखो।

2. **अर्धविराम (;)**– अर्धविराम के प्रयोग संबंधी नियम इस प्रकार हैं–

क. अल्पविराम से अधिक तथा पूर्ण विराम से कम समय तक रुकने की स्थिति में ‘अर्धविराम’ का प्रयोग किया जाता है; जैसे– अभी तैयार होना है; यह कैसे संभव है?

ख. विरोधार्थी कथनों को अलग-अलग करने हेतु इसका प्रयोग किया जाता है; जैसे–

जो उसे बुरा-भला कहते हैं; वह उन्हीं को मित्र बनाना चाहता है।

3. **पूर्णविराम (।)**–पूर्णविराम के प्रयोग संबंधी नियम इस प्रकार हैं–

क. किसी कथन के पूर्ण होने पर पूर्णविराम का प्रयोग होता है; जैसे–

अ. नदी बहती है।

ब. श्रीमती शारदा सुब्रह्मण्यम को वीर जननी का पुरस्कार मिला।

ख. अप्रत्यक्ष प्रश्नों के अंत में पूर्णविराम का प्रयोग होता है।

जैसे– हमें क्या पता कि तुम आज शाम को ही लौट आओगी।

4. **विस्मयादिबोधक चिह्न (!)–**

क. मन के भावों (आश्चर्य, घृणा, हर्ष, शोक, भय आदि) को प्रकट करने के लिए इस चिह्न का प्रयोग होता है। कभी विस्मयादि शब्द के बाद तो कभी वाक्य में अंत में इसे प्रयुक्त किया जाता है; जैसे–

अ. अरे! बादल घिरने लगे!

ब. हाय! सुनामी लहरों ने भयंकर तबाही मचा दी।

ख. संबोधन के लिए भी इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे–

मीतू! अपना काम ध्यान से करो।

5. **प्रश्नसूचक चिह्न (?)–** प्रश्नसूचक वाक्यों के अंत में प्रश्नसूचक चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे–

क. बगीचे से फूल किसने तोड़े हैं?

ख. मैं सोच रहा था कि कमरे में बंद चिड़िया को मुक्त कैसे करूँ?

6. **योजक चिह्न (-)–** योजक चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है–

क. समास (द्वंद्व तथा तत्पुरुष समास) में इस चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे– रात-दिन, पाप-पुण्य।

ख. तुलना के लिए 'से', 'सी', 'सा' आदि का प्रयोग करने से पहले भी इस चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे– राम-से, कमल-सी, हम-सा।

ग. इनके अतिरिक्त द्विरुक्त शब्दों में भी योजक चिह्न प्रयोग में लाया जाता है; जैसे– कभी-कभी, रोज़-रोज़, गिरते-गिरते, चलते-चलते।

7. **निर्देशक चिह्न (–)–** निर्देशक चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है–

क. वाक्य में आगे आने वाले विवरण का संकेत देने के लिए; जैसे–विशेषण के चार भेद हैं–

ख. नाटक में किसी पात्र का कथन प्रकट करने के लिए; जैसे– माता–मीना यहाँ आओ।

ग. वाक्य में ही आगे आने वाली संज्ञा का संकेत देने के लिए; जैसे–

आधुनिक युग की मीरा–महादेवी वर्मा के काव्य में बहुत दर्द था।

8. **कोष्ठक (( ),[ ],{ })–** कोष्ठक चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है–

क. किसी पद अथवा वाक्यांश का अर्थबोध करवाने हेतु; जैसे–

रामचरितमानस तुलसीदास (हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कवि) का महान ग्रंथ है।

ख. नाटक में अभिनेताओं के मनोभावों को प्रकट करने के लिए; जैसे–

मोहिनी– (रोते हुए) यह क्या हो गया!

ग. किसी वाक्य को और अधिक स्पष्ट करने के लिए अतिरिक्त जानकारी को कोष्ठक में रखा जा सकता है; जैसे– सकर्मक क्रिया के दोनों भेदों (एककर्मक और द्विकर्मक) के उदाहरण नीचे प्रस्तुत हैं–

9. उद्धरण चिह्न–उद्धरण चिह्न दो प्रकार के हैं–

- इकहरे उद्धरण चिह्न (' ')
- दोहरे उद्धरण चिह्न (" ")

अ. व्यक्ति का नाम, उपनाम, पुस्तकों के नाम तथा कहावतों में इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे–

उपनाम में–रामधारी सिंह '**दिनकर**'

पुस्तक के नाम में– क. मैथिलीशरण गुप्त ने 'साकेत' महाकाव्य लिखा है।

ख. प्रेमचंद का 'गोदान' उपन्यास अत्यंत प्रसिद्ध है।

कहावतों में–'जैसा करोगे, वैसा भरोगे' इसलिए कहते हैं 'बोए पेड़ बबूल का, तो आम कहाँ से होए।'

ब. किसी व्यक्ति के कथन को मूलरूप से लिखने पर दोहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है–

जैसे– नेताजी ने कहा, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।"

10. हंसपद चिह्न (‸)–लिखते समय यदि कोई शब्द या वाक्य छूट जाए, तो हंसपद चिह्न या विस्मरण चिह्न लगाकर वाक्य के ऊपर वह छूटा हुआ अंश लिखा जाता है; जैसे–

मैंने देखा कि असरानी साहब के घर ‸(में) एक चिड़िया बंद थी।

11. लाघव चिह्न (०)–शब्दों का संक्षिप्त रूप लिखने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। इसके लिए बड़े शब्द का पहला अक्षर लिखकर उसके आगे शून्य (०) लगाया जाता है; जैसे–

डॉ० = डॉक्टर पं० = पंडित म० प्र० = मध्य प्रदेश

12. लोप चिह्न (...)–वाक्य में जहाँ कुछ कहना शेष रह जाता है, वहाँ लोप चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे– मैं अवश्य आता किंतु...

मुख्य बातें–

- लिखित भाषा में रुकने की प्रक्रिया को जिन संकेत चिह्नों द्वारा प्रकट किया जाता है, वे विराम-चिह्न कहलाते हैं।
- विराम-चिह्नों के प्रयोग से अभिव्यक्ति में स्पष्टता आती है।
- किसी कथन के पूर्ण होने पर पूर्णविराम का प्रयोग होता है।
- प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में हमेशा प्रश्नसूचक चिह्न (?) का प्रयोग होता है।

समझ की परख

क. रिक्त स्थानों में निर्देशानुसार विराम-चिह्न भरिए–

1. लाघव चिह्न – ....
2. प्रश्नवाचक चिह्न – ....
3. अल्पविराम – ....
4. विस्मयादिबोधक चिह्न – ....
5. उद्धरण चिह्न – ....

ख. वाक्यों में सही विराम-चिह्नों वाले वाक्यों पर ✓ तथा गलत पर ✗ का चिह्न लगाइए–

1. मोहन? ज़रा बात तो सुनते जाओ।
2. रोहिणी, नीलम; नमीशा बाज़ार जाएँगीं।
3. क्या? ठीक से बोलो, मुझे सुनाई नहीं दे रहा!
4. चातक बोला, "बेटा, अभी तुम नासमझ हो!"
5. पिता जी की बात सुने बिना ही वह बोल उठा, "मैं गंगाजल ग्रहण करूँगा।"
6. "मेरा सोना तो एक-एक ज़मीन में बिछा है।"
7. बूढ़े ने कहा, "मैं तीस मील से पैदल चलकर आ रहा हूँ, इसलिए मुझे देर हो गई।"

ग. निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम-चिह्न लगाइए–

1. नचिकेता बार-बार पूछता आप मुझे किसको दक्षिणा में दे रहे हैं
2. बूढ़ा बोला मैं चल नहीं पा रहा हूँ
3. मेरे मन निराश होने की ज़रूरत नहीं है
4. अरे तुम कब आए
5. खाना वाना हो गया उन्होंने पूछा
6. वह खीझकर बोला क्यों हट जाऊँ सड़क सिर्फ़ तुम्हारी ही नहीं है
7. मैडम आप तो लिखती हैं मेरी कविताएँ देखिए कुछ दम है क्या इनमें
8. पत्नी बोली तुम्हारी बुद्धि घास चरने गई है

अलंकार
(Decoration)

अलंकार शब्द अलम् + कार की संधि है। इसका शाब्दिक अर्थ है–आभूषण। सुंदरता बढ़ाने के लिए अनेक प्रकार के कृत्रिम प्रसाधनों को प्रयोग में लाया जाता है। स्त्रियाँ अपने सौंदर्य को बढ़ाने हेतु आभूषण धारण करती हैं, तो कविता रूपी कामिनी की शोभा को बढ़ाने के लिए अलंकारों से उसका श्रृंगार किया जाता है। अलंकारों के प्रयोग से कविता का सौंदर्य बढ़ता है, कथन प्रभावशाली हो उठता है; जैसे–

'सुंदर नेत्रों वाली' के स्थान पर 'मृगलोचनी' कहें, तो कथन अत्यंत सरस तथा प्रभावोत्पादक बनेगा।

शब्दों अथवा अर्थों के चमत्कारपूर्ण आकर्षक प्रयोग को अलंकार कहते हैं।

वास्तव में अलंकारों का प्रयोग काव्य में शब्दों और अर्थों में चमत्कार उत्पन्न करने के लिए किया जाता है।

अलंकार भेद

अलंकार के दो भेद होते हैं–

1. शब्दालंकार
2. अर्थालंकार

1. **शब्दालंकार**–जिन अलंकारों में शब्दों के चमत्कार पर बल दिया जाता है, उन्हें शब्दालंकार कहते हैं; जैसे–**रघुपति राघव राजाराम।**

   उपर्युक्त उदाहरण में 'र' तथा 'घ' की आवृत्ति एक से अधिक बार हुई है, जिससे कविता में चमत्कार उत्पन्न हुआ है।

   शब्दालंकार के भेद–शब्दालंकार के मुख्य रूप से तीन भेद हैं–(क) अनुप्रास (ख) यमक (ग) श्लेष

2. **अर्थालंकार**–जिन अलंकारों में अर्थगत सुंदरता एवं चमत्कार बढ़ाने पर बल दिया जाता है, उन्हें अर्थालंकार कहते हैं।

   जैसे– **चरण कमल** बंदौ हरिराई। यहाँ ईश्वर के 'चरण कमल' की वंदना करने की बात कहकर चरण कमल में अर्थगत सौंदर्य आया है।

   अर्थालंकार के भेद–अर्थालंकार के मुख्य रूप से निम्नलिखित भेद हैं–

   (क) उपमा (ख) रूपक (ग) उत्प्रेक्षा (घ) अतिशयोक्ति

नीचे कुछ प्रमुख अलंकारों का वर्णन किया जा रहा है–

(क) **अनुप्रास अलंकार**–अनुप्रास अर्थात 'बार-बार पास में रखना'।

काव्य में एक ही वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार होने पर वहाँ 'अनुप्रास अलंकार' होता है।

जैसे–

1. तरनि-तनूजा-तट तमाल तरुवर बहु छाए।
2. मुदित महीपति मंदिर आए।
3. कूकै लगीं कोइलें कदंबन पै बैठि फेरि।

(ख) **यमक अलंकार**–काव्य में जहाँ कोई शब्द एक से अधिक बार आए, लेकिन हर बार उसका अर्थ भिन्न हो, वहाँ 'यमक अलंकार' होता है।

काव्य में जहाँ एक ही शब्द भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है, वहाँ यमक अलंकार होता है।

जैसे–

अ. **कनक-कनक** ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
यह खाए बौराय जग, वा पाए बौराय।।

उपर्युक्त उदाहरण में **कनक** शब्द दो बार प्रयुक्त हुआ है। लेकिन हर बार अर्थ में भिन्न है। एक बार कनक का अर्थ है-सोना तथा दूसरा है धतूरा।

ब. माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर।
कर का **मनका** डारि दे, **मन का** मनका फेर।।

इस उदाहरण में मनका शब्द विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त हुआ है–

1. **मनका**– माला का दाना
2. **मन का**– (हृदय का)

(ग) **श्लेष अलंकार**–श्लेष का अर्थ है-चिपका हुआ।

काव्य में जहाँ कोई शब्द एक ही बार प्रयुक्त हो, लेकिन वह एक से अधिक अर्थ दे, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

जैसे–

1. रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुस, चून।।

उपर्युक्त उदाहरण में 'पानी' शब्द के तीन अर्थ हैं–

1. मोती के अर्थ में – चमक
2. मनुष्य के अर्थ में – इज़्ज़त
3. चून के अर्थ में – आटा या चूर्ण

2. जो 'रहीम' गति दीप की, कुल कपूत की सोय।
   बारे उजियारो करै, बढ़े अँधेरो होय।।
   यहाँ 'बारे' और 'बढ़े' के दो अर्थ हैं–
   1. बारे – जलना (दीपक के अर्थ में), बचपन – (पुत्र के अर्थ में)
   2. बढ़े – बुझना (दीपक के अर्थ में), बड़ा होना – (पुत्र के अर्थ में)

(घ) उपमा अलंकार–उपमा का अर्थ है– तुलना करना।

अत्यधिक समानता के कारण जहाँ किसी भी व्यक्ति अथवा वस्तु की तुलना किसी दूसरे प्रसिद्ध व्यक्ति अथवा वस्तु से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है।

जैसे–

1. **संत हृदय** नवनीत समाना।
2. **पीपर पात** सरिस मन डोला।

पहले उदाहरण में संत हृदय को नवनीत (मक्खन) के समान बताया है कि संतजन का हृदय अत्यंत कोमल तथा विनम्र होता है। दूसरे उदाहरण में पीपल के पत्ते के समान मन के डोलने का वर्णन किया गया है।

उपमा अलंकार के चार अंग होते हैं–

(क) उपमेय (ख) उपमान (ग) वाचक (घ) साधारण धर्म

(क) उपमेय–जिस व्यक्ति अथवा वस्तु का वर्णन हो अर्थात जिस वस्तु की समानता की जाए, उसे उपमेय कहते हैं; जैसे– संत हृदय, मन।

(ख) उपमान–जिस वस्तु या व्यक्ति से समानता की जाए, उसे उपमान कहते हैं; जैसे– नवनीत, पीपर पात।

(ग) वाचक शब्द–जिस शब्द विशेष से समानता या उपमा का बोध हो, उसे वाचक शब्द कहते हैं; जैसे– समाना, सरिस।

(घ) साधारण धर्म– जिस गुण विशेष के कारण तुलना हो, उसे साधारण धर्म कहते हैं; जैसे– दूसरे उदाहरण में 'डोला'।

अन्य उदाहरण–

1. हाय! फूल-सी कोमल बच्ची, हुई राख की थी ढेरी।
2. मखमल के झूले पड़े हाथी-सा टीला।

(ङ) रूपक अलंकार–रूपक का अर्थ है–रूप धारण करना।

काव्य में जहाँ अत्यधिक समानता के कारण उपमेय में उपमान को आरोपित किया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

जैसे– "मैया मैं तो **चंद्र-खिलौना** लैहों।"

उपर्युक्त उदाहरण में चंद्रमा जैसा खिलौना नहीं, बल्कि चंद्रमा रूपी खिलौना लेने की ज़िद की गई है। अतः 'चंद्र-खिलौना' में रूपक अलंकार है।

कुछ अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं–

1. **चरण-कमल** बंदौ हरिराई।
2. भजु मन **चरण-कँवल** अविनासी।
3. आए **महंत बसंत**।
4. पायो जी मैंने **राम-रतन** धन पायो।

(च) उत्प्रेक्षा अलंकार–जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना प्रकट की जाए, वहाँ 'उत्प्रेक्षा अलंकार' होता है।

काव्य में जहाँ उपमेय और उपमान में भिन्नता होने के बाद भी समानता की संभावना की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

जैसे– हरि मुख **मानो** मधुर मयंक

उपर्युक्त उदाहरण में हरि के मुख में चंद्रमा की संभावना की गई है। अतः उत्प्रेक्षा अलंकार है।

विशेष–उत्प्रेक्षा अलंकार के बोधक शब्द हैं–मनु, मानो, मनहुँ, जानो आदि।

1. कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
   हिम के कणों से पूर्ण, **मानो** हो गए पंकज नए।
2. सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।
   मनहुँ नीलमणि सैल पर, आतप पर्‍यौ प्रभात।

(छ) अतिशयोक्ति अलंकार–अतिशयोक्ति शब्द अतिशय + उक्ति के मेल से बना है, जिसका अर्थ है–बहुत अधिक (बढ़ा-चढ़ाकर) कही गई उक्ति अर्थात कथन।

काव्य में जहाँ किसी वर्णन को इतना बढ़ा-चढ़ाकर किया जाता है कि वह लोक-मर्यादाओं का उल्लंघन कर जाता है, तो वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

जैसे–

हनुमान की पूँछ में, लग न पाई आग।
लंका सिगरी जल गई, गए निसाचर भाग।

स्वाभाविक सच्चाई यह है कि आग लगने पर ही वस्तु जलेगी, लेकिन उपर्युक्त उदाहरण में पूँछ में आग लगने से पहले ही लंका जलने की बात कहकर अतिशयोक्ति अलंकार प्रस्तुत किया है।

अन्य उदाहरण–

1. देख लो साकेत नगरी है यही,
   स्वर्ग से मिलने गगन को जा रही।
2. आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार,
   राणा ने सोचा इस पार, तब तक था चेतक उस पार।

मुख्य बातें–

- शब्दों/अर्थों के चमत्कार पूर्ण आकर्षक प्रयोग को 'अलंकार' कहते हैं।
- अलंकारों से कविता के सौंदर्य में अभिवृद्धि होती है।
- अलंकार के दो भेद हैं– शब्दालंकार, अर्थालंकार।
- काव्य में एक ही वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार होने पर वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।
- काव्य में एक शब्द भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होने पर यमक अलंकार होता है।
- उपमा अलंकार के चार अंग हैं– 1. उपमेय 2. उपमान 3. वाचक 4. साधारण धर्म
- उपमेय में उपमान की संभावना होने पर उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

समझ की परख

क. दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. अलंकार किसे कहते हैं?
2. अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण दें।
3. श्लेष अलंकार किसे कहते हैं?
4. उपमा अलंकार की परिभाषा तथा एक उदाहरण दें और उसके अंगों का संक्षिप्त परिचय दें।
5. रूपक और उत्प्रेक्षा में अंतर स्पष्ट करते हुए उदाहरण दें।

ख. निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों के अलंकार-भेद लिखिए–

1. माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर।
   कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।। ....
2. सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।
   मनहुँ नीलमणि सैल पर, आतप पर्‌यौ प्रभात।। ....
3. झरने जब झर-झर झरते हैं। ....
4. तीन बेर खाती थीं, वे तीन बेर खाती हैं। ....
5. पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून। ....

6. वह ज़िंदगी क्या ज़िंदगी जो सिर्फ़ पानी-सी बही। ....
7. कहै कवि बेनी बेनी ब्याल की चुराई लीनी। ....
8. मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोइ। ....
   जा तन की झाईं परै, स्याम हरित दुति होइ।।
9. सुरभित सुंदर सुखद सुमन, ...
   तुझ पर खिलते हैं।

ग. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर गोला (◯) लगाइए–

1. जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की जाए, वहाँ अलंकार है–
   अ. उपमा ब. रूपक स. उत्प्रेक्षा द. अतिशयोक्ति
2. जब उपमेय उपमान का रूप धारण कर ले, तो अलंकार है–
   अ. उपमा ब. रूपक स. अनुप्रास द. यमक
3. निम्नलिखित में से उपमा अलंकार का अंग नहीं है–
   अ. उपमेय ब. उपमान स. वाचक द. वस्तु
4. काव्य में एक शब्द के एक से ज़्यादा बार होने तथा हर बार भिन्न अर्थ होने पर अलंकार है–
   अ. अतिशयोक्ति ब. रूपक स. अनुप्रास द. यमक
5. कविता में जहाँ एक ही शब्द में एक से अधिक अर्थ छिपे हों, वहाँ कौन-सा अलंकार है?
   अ. श्लेष ब. रूपक स. अनुप्रास द. उत्प्रेक्षा

मुहावरे, लोकोक्तियाँ तथा सूक्तियाँ

(Idioms and Proverbs)

1. रोहन, तुम तो ईद का चाँद हो गए हो।
2. क्यों आसमान सिर पर उठा रखा है?

पहले उदाहरण से स्पष्ट है कि रोहन आजकल बहुत कम दिखाई देता है। उसका मित्र उसे प्रेमपूर्ण उलाहना देते हुए यह कहता–'तुम आजकल कम दिखाई देते हो' तो कथन प्रभावशाली नहीं लगता। अतः कथन को विशिष्टता प्रदान करने के लिए वह कहता है–"रोहन, तुम तो ईद का चाँद हो गए हो।"

दूसरे उदाहरण में कक्षा में शोर होने पर अध्यापिका सीधा कथन न कहकर 'क्यों आसमान सिर पर उठा रखा है?' कहती हैं ताकि विद्यार्थी उनके व्यंग्यार्थ को समझकर शोर करना बंद कर दें।

इस प्रकार स्पष्ट है कि विशेष परिस्थितियों में मानवीय भावों एवं विचारों की सशक्त अभिव्यक्ति में मुहावरे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मुहावरों की तरह ही लोकोक्तियाँ तथा सूक्तियाँ भी कथन को प्रभावोत्पादक, रोचक एवं रंजक बनाती हैं।

मुहावरे

वाक्य अथवा वाक्यांश द्वारा साधारण अर्थ छोड़कर विशिष्ट अर्थ प्रकट करना मुहावरा कहलाता है।

हिंदी के कुछ महत्वपूर्ण मुहावरे अपने वाक्य–प्रयोग के साथ नीचे प्रस्तुत हैं–

1. **टेढ़ी खीर**–(कठिन कार्य)–समाचार–पत्रों में रचनाएँ प्रकाशित करवाना टेढ़ी खीर है, किंतु परिश्रम से क्या नहीं किया जा सकता।
2. **टालमटोल करना**–(बहाने बनाना)–दिनेश ने व्यापार में हमेशा महेश की मदद की थी, परंतु जब आज उसने महेश से कुछ रुपए माँगे, तो वह टालमटोल करने लगा।
3. **टोपी उछालना**–(अपमानित करना)–बरात दरवाज़े पर लाकर दहेज की माँग करना और न मिलने पर बिना बहू के बरात वापस ले जाने की धमकी देना लड़की के पिता की टोपी उछालना ही है।
4. **ठोकरें खाना**–(मुसीबतें झेलना)–पिता जी कितना समझाते थे कि पढ़ लो, किंतु तुमने उनकी बातें कब मानीं, अब ठोकरें खाते फिरते हो। मगर गया समय कभी हाथ नहीं आता है।
5. **डींगें हाँकना**–(अपनी प्रशंसा स्वयं करते जाना)–डींगें हाँकने वाला व्यक्ति कर्मवीर नहीं हो सकता, क्योंकि कर्मवीर तो कर्म पर ही आस्था तथा विश्वास रखता है।

6. **डंके की चोट पर कहना**–(निडरतापूर्वक कहना)–मुझे किसी से डरकर बात छिपाने की आवश्यकता नहीं है, मैं तो जो कुछ कहूँगा डंके की चोट पर कहूँगा।
7. **ढोल पीटना**–(प्रसिद्धि करना)–अनाथ आश्रम को चंदा देकर और समाचार-पत्रों में खबर छपवाकर क्या दान देने का ढोल पीटना चाहते हो?
8. **तिल का ताड़ बनाना**–(छोटी-सी बात को बढ़ा-चढ़ाकर बताना)–घर में छोटे-छोटे झगड़ों को टालना परिवार के हित में ही होता है, वरना तिल का ताड़ बनाने से आपसी कलह ही बढ़ती है।
9. **तूती बोलना**–(अत्यधिक प्रभाव होना)–जब से वह नगर-पार्षद बना है, शहर में उसकी तूती बोलने लगी है।
10. **तितर-बितर होना**–(बिखरकर भागना)–पुलिस द्वारा लाठीचार्ज से शेष भीड़ तो तितर-बितर हो गई, मगर लाला करोड़ीमल बुरी तरह घायल हो गए।
11. **थूककर चाटना**–(अपनी बात से पलट जाना)–जब नौकरी से त्यागपत्र दे दिया है, तो उसे वापस लेने की बातें सोचना थूककर चाटना है।
12. **थाली का बैंगन होना**–(सिद्धांतरहित व्यक्ति)–जो नेता अपने निजी स्वार्थ के लिए एक पार्टी छोड़ दूसरी पार्टी में चला जाता है, ऐसे थाली के बैंगन से राष्ट्रहित की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए।
13. **दाँत खट्टे करना**–(बुरी तरह पराजित करना)–भारत-पाक क्रिकेट मैच में भारतीय क्रिकेट खिलाड़ियों ने पाकिस्तानी खिलाड़ियों के दाँत खट्टे कर दिए।
14. **दर-दर की ठोकरें खाना**–(मारे-मारे फिरना / बुरी दशा में होना)–आजकल डिग्रियाँ हाथ में लेकर शिक्षित युवा नौकरियों की तलाश में दर-दर की ठोकरें खाते फिरते हैं, परंतु नौकरी नहीं मिलती।
15. **दो टूक जवाब देना**–(साफ़ इनकार करना)–पिछले पाँच वर्षों तक मैंने रमेश की बहुत मदद की थी, परंतु मुझे ज़रूरत पड़ी तो उसने दो टूक जवाब दे दिया।
16. **पैरों तले से ज़मीन खिसकना**–(स्तब्ध रह जाना)–पुत्र के दुर्घटनाग्रस्त होने के समाचार से माता-पिता के पैरों तले से ज़मीन खिसक गई।
17. **पेट काटना**–(खर्च में कटौती करके ज़रूरतों हेतु जोड़ना)–मध्यमवर्गीय परिवार बढ़ती महँगाई में पेट काटकर ही अपने बच्चों को पढ़ा पाता है।
18. **पगड़ी उछालना**–(बेइज़्ज़ती करना)–गरीब की आह पत्थर का कलेजा भी फाड़ देती है, उनकी पगड़ी उछालने वाला कभी सुखी नहीं रहता।
19. **पत्थर की लकीर होना**–(पक्की बात)–संतों के वचन पत्थर की लकीर होते हैं।
20. **पीठ दिखाना**–(पराजित होकर भाग जाना)–युद्ध में पीठ दिखाना शूरवीरों की नहीं, बल्कि कायरों की निशानी है।
21. **पानी-पानी होना**–(लज्जित होना)–परीक्षा भवन में नकल करते पकड़े जाने पर वह पानी-पानी हो गया।
22. **पहाड़ टूटना**–(भारी संकट आ पड़ना)–पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर अजय पर तो पहाड़ ही टूट पड़ा।

23. **नौ-दो ग्यारह होना**–(भाग जाना)–चोर पुलिस को आता देखकर नौ-दो ग्यारह हो गया।
24. **निन्यानवे के फेर में पड़ना**–(धन एकत्र करने में पड़े रहना)–मनुष्य निन्यानवे के फेर में पड़कर ही परमात्मा को भूल रहा है।
25. **नज़रों से गिरना**–(पसंद न करना)–चरित्रहीन व्यक्ति सभी की नज़रों से गिर जाता है।
26. **नाक रगड़ना**–(अपनी गलती मानना)–जीवन में ऐसे काम करने से सदैव बचें, जिनको करने के बाद नाक रगड़ना पड़े।
27. **नानी याद आना**–(संकट देखते ही घबराना)–परीक्षा में गणित का प्रश्न-पत्र देखते ही रोहिणी को नानी याद आ गई।
28. **नाक में दम करना**–(परेशान करना)–तुम बच्चों की शरारतों ने घरवालों की नाक में दम कर रखा है।
29. **नाक कटना**–(इज़्ज़त जाना)–कक्षा में चोरी करते पकड़े जाने पर उमेश की नाक कट गई।
30. **धाक जमाना**–(प्रभाव जमाना)–प्रधानमंत्री ने जब ग्रामीण इलाकों का दौरा किया, तो उन्होंने गाँव के भोले लोगों पर अपने सरल व्यवहार तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व से धाक जमा ली।
31. **धज्जियाँ उड़ाना**–(नष्ट-भ्रष्ट करना / निंदा अथवा बेइज़्ज़त करना)–संसद भवन में सत्तारूढ़ तथा विरोधी दल राष्ट्रीय समस्याओं पर कम तथा एक-दूसरे दल की धज्जियाँ उड़ाने पर अधिक ध्यान देते हैं।
32. **दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करना**–(लगातार तरक्की करना)–यह प्रणव के दिन-रात परिश्रम का ही परिणाम है कि उसका व्यापार दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है।
33. **दिन फिरना**–(भाग्य बदलना)–श्रीकृष्ण की अपार कृपा से सुदामा के दिन फिर गए।
34. **दुम दबाकर भागना**–(डरकर भाग जाना)–तुम तो स्वयं को बहादुर कहते थे, मगर जग्गू दादा के आते ही दुम दबाकर भाग खड़े हुए।
35. **रंग उड़ना**–(घबरा जाना)–परीक्षा में नकल करते हुए पकड़े जाने पर रमा का रंग उड़ गया।
36. **रंगा सियार होना**–(धूर्त होना)–सुरेश रंगा सियार है, यदि उसकी बातों में आ गए तो पछताओगे।
37. **रंग में भंग पड़ना**–(आनंद में बाधा पड़ना)–विद्यालय का वार्षिकोत्सव बहुत अच्छे ढंग से चल रहा था कि अचानक शामियाने में आग लग जाने से लोग उठकर भागने लगे और रंग में भंग पड़ गया।
38. **बाँछें खिलना**–(प्रसन्न होना)–पुत्र को कक्षा में प्रथम स्थान पर आया देखकर पिता की बाँछें खिल गईं।
39. **बुढ़ापे की लाठी**–(एकमात्र सहारा)–पुत्र माता-पिता के बुढापे की लाठी होता है।
40. **बाल भी बाँका न होना**–(कुछ भी न बिगड़ना)–रेल दुर्घटना में सैकड़ों लोग मारे गए, परंतु श्रुति का बाल भी बाँका न हुआ।
41. **बाग-बाग होना**–(अत्यधिक प्रसन्न होना)–स्वामी हरिदास का संगीत सुनकर सम्राट अकबर का दिल बाग-बाग हो उठा।
42. **फूला न समाना**–(बहुत प्रसन्न होना)–बोर्ड परीक्षा में नरेंद्र को प्रथम स्थान पर आया देखकर माता-पिता फूले न समाए।

43. **फूटी आँख न सुहाना**–(पसंद न करना)–उद्दंड विद्यार्थी हमारे अध्यापक जी को फूटी आँख नहीं सुहाते हैं।

44. **प्राणों की बाज़ी लगाना**–(अपनी जान तक दे देना)–देशभक्त देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाज़ी तक लगा देते हैं।

45. **मुँहतोड़ जवाब देना**–(करारा जवाब देना)–भारत अपने विरोधियों को युद्ध में मुँहतोड़ जवाब देना जानता है।

46. **सिर पर चढ़ाना**–(अधिक छूट देना)–आजकल बच्चों के बिगड़ने का एक कारण यह भी है कि माता-पिता उन्हें सिर पर चढ़ाकर रखते हैं।

47. **सिर पर कफ़न बाँधना**–(प्राणों का मोह न रखना)–एक सिपाही सिर पर कफ़न बाँधकर शत्रुओं का सामना करता है, तभी राष्ट्र की आज़ादी की सुरक्षा की जा सकती है।

48. **सिर आँखों पर बिठाना**–(मान-सम्मान देना)–देशवासी भगत सिंह के बलिदान को कभी नहीं भूल सकते। आज भी उन्हें सिर आँखों पर बिठाते हैं।

49. **सिर ओखली में देना**–(स्वयं मुसीबत मोल लेना)–खेत जोतना तो मुश्किल कार्य है, महेश का खेत जोतने की 'हाँ' करके मैंने स्वयं ही सिर ओखली में दे दिया।

50. **सिर उठाना**–(विद्रोह करना)–सरकार को चाहिए कि उग्रवादियों को सिर उठाने का मौका ही न दे, क्योंकि यह राष्ट्रहित में नहीं है।

51. **शहीद होना**–(संघर्ष करते हुए मरना)–उन सिपाहियों को श्रद्धांजलि देना हमारा धर्म है, जो देश की रक्षा हेतु शहीद होना अपना कर्तव्य समझते हैं।

52. **श्री गणेश करना**–(कार्य का शुभारंभ करना)–भारतीय संस्कृति के अनुसार किसी भी कार्य का श्री गणेश करने से पूर्व ईश्वर स्मरण अवश्य करना चाहिए।

53. **लोहे के चने चबाना**–(अत्यधिक संघर्ष करना)–तात्या टोपे स्वतंत्रता–संग्राम के ऐसे सेनानी थे, जिन्होंने अंग्रेज़ों को लोहे के चने चबवा दिए।

54. **लोहा मानना**–(दूसरों का प्रभाव स्वीकार करना)–यदि द्रोणाचार्य ने एकलव्य का अँगूठा न माँगा होता, तो शायद अर्जुन को भी एक दिन धनुर्विद्या में एकलव्य का लोहा मानना ही पड़ता।

55. **लुटिया डुबोना**–(काम बिगाड़ देना)–राकेश ने अपने पिता का व्यापार तो सँभाला, मगर दो-तीन महीनों में ही अपनी नासमझी से व्यापार की लुटिया डुबो दी।

56. **लाल-पीला होना**–(बहुत क्रोधित होना)–युद्ध के मैदान में जब भीष्म पितामह ने पांडवों को 'विजयी भव' का शुभाशीष दिया, तो उसे सुनकर दुर्योधन लाल-पीला होने लगा।

57. **हाथ-पाँव मारना**–(कोशिश करना)–राम ने क्लर्क की नौकरी पाने के लिए खूब हाथ-पाँव मारे लेकिन उसे नौकरी नही मिली।

58. **हवाई किले बनाना**–(झूठी कल्पनाएँ करना)–कर्मवीर कर्म करते हैं। हवाई किले बनाने जैसे व्यर्थ के प्रयास नहीं करते।

59. **हवा से बातें करना**–(बहुत तेज़ दौड़ना)–साहिल साइकिल पर सवार होकर गया। कुछ ही देर में उसकी साइकिल हवा से बातें करने लगी।
60. **हथेली पर सरसों जमाना**–(असंभव कार्य करना)–तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि क्रिकेट मैच में विश्व कप जीतना भारतीय क्रिकेट टीम के लिए हथेली पर सरसों जमाना है।
61. **हाथ बँटाना**–(कार्य में सहयोग देना)–संतान का दायित्व है कि वह माता के कार्यों में उनका हाथ बटाएँ।
62. **हवा लगना**–(संगत या वातावरण का असर होना)–आजकल दीपक के उठने-बैठने, बोलने-चालने का ढंग ही बदल गया है। नए-नए मित्रों के साथ जो रहने लगा है। लगता है, उसे हवा लगने लगी है।
63. **हथियार डालना**–(हार मानना)–युद्ध में हथियार डालना कायरों का काम है।
64. **अँगूठा दिखाना**–(इनकार करना अथवा साफ़ मना करना)–मुझे लगा था मोहित मेरा सच्चा मित्र है मगर संकट के इन क्षणों में उसने मुझे अँगूठा दिखा दिया।
65. **अक्ल पर पत्थर पड़ना**–(बुद्धि भ्रष्ट होना)–दुर्योधन ने आधा राज्य तो दूर, सुई की नोंक के बराबर भूमि भी पांडवों को देने से इनकार कर दिया था। इसका कारण यह था कि उसकी अक्ल पर पत्थर पड़ गए थे।
66. **अक्ल का दुश्मन**–(मूर्ख व्यक्ति)–तुमने कैसे सोचा कि रोहित बुद्धिमानीपूर्वक समस्या को हल कर सकेगा। वह तो अक्ल का दुश्मन है।
67. **अंधे की लाठी**–(एकमात्र सहारा)–रामप्यारी के पति की मृत्यु हो गई। बेचारी गरीब विधवा का इकलौता पुत्र ही अब उसके लिए अंधे की लाठी है।
68. **कमर टूटना**–(हिम्मत टूटना)–व्यापार में हानि से मोहनदास की कमर ही टूट गई है।
69. **कलेजा छलनी होना**–(बहुत दुखी होना)–सोहन पर जब रिश्वत का झूठा आरोप लगाया गया, तब उसका कलेजा छलनी हो गया।
70. **कमर कसना**–(तैयार होना)–पड़ोसी देश यदि भारत में आतंकवादी गतिविधियाँ बढ़ाता रहा, तो युद्ध कभी भी हो सकता है, अतः भारतीय सैनिक कमर कस ही लें।
71. **एड़ी–चोटी का ज़ोर लगाना**–(कठोर परिश्रम करना)–यदि बोर्ड परीक्षा में प्रथम स्थान पाना चाहते हो, तो एड़ी–चोटी का ज़ोर लगाना ही होगा।
72. **एक और एक ग्यारह होना**(संगठन में शक्ति होना)–हमारे पूर्वजों ने मिलकर रहने की सीख इसलिए दी है, क्योंकि एक और एक ग्यारह होते हैं।
73. **उलटी गंगा बहाना**–(विपरीत कार्य करना)–लोग निर्धनों की मदद करते हैं। तुम उन्हीं से चंदा माँगकर क्यों उलटी गंगा बहा रहे हो?
74. **ईंट का जवाब पत्थर से देना**–(आक्रमण का उत्तर ज़ोरदार तैयारी अथवा आक्रमण से देना)–कारगिल युद्ध में पाकिस्तान के आक्रमण करने पर भारत ने ईंट का जवाब पत्थर से दिया।

75. **आपे से बाहर होना**–(बहुत क्रोधित होना)–पुत्र को परीक्षा में अनुत्तीर्ण देखकर पिता आपे से बाहर हो गए।
76. **आग-बबूला होना**–(बहुत गुस्सा होना)–नौकर को चोरी करते देख मालिक आग-बबूला हो गए।
77. **अपना उल्लू सीधा करना**–(स्वार्थ सिद्ध करना)–नेता देश और जनता की चिंता कब करते हैं! बस अपना उल्लू सीधा करने में ही लगे रहते हैं।
78. **अगर-मगर करना**–(टाल-मटोल करना)–उधार माँगने पर रमेश अगर-मगर करने लगा।
79. **घुटने टेकना**–(पराजय स्वीकार कर लेना)–बीरबल की चतुराई के आगे बड़े-बड़े विद्वान भी घुटने टेक देते थे।
80. **जले पर नमक छिड़कना**–(दुखी को अधिक सताना)–पुत्र के घर छोड़कर चले जाने से श्यामलाल पहले ही बहुत बहुत दुखी हैं, तुम उन्हें दोषी ठहराकर क्यों जले पर नमक छिड़क रहे हो?
81. **गागर में सागर भरना**–(थोड़े में बहुत कह देना)–कवि बिहारी के दोहे गागर में सागर भरने की महत्वपूर्ण विशेषता लिए हुए हैं।
82. **गुड़-गोबर करना**–(बना-बनाया काम बिगाड़ देना)–हमारा काम करने के लिए वह मान चुका था, मगर तुम्हारे क्रोध ने सब गुड़-गोबर कर दिया।
83. **गुदड़ी का लाल**–(गरीबी में जन्मा गुणी व्यक्ति)–अब्राहम लिंकन ने राष्ट्रपति पद प्राप्त करके यह सिद्ध कर दिया कि वे गुदड़ी के लाल थे।
84. **गरदन झुकना**–(लज्जित होना)–बेटा! यदि छात्रावास में जाकर कुसंगति में पड़ जाओगे, तो माता-पिता की गरदन झुक जाएगी। अतः परिवार के संस्कार कभी न भूलना।
85. **खयाली पुलाव पकाना**–(कल्पनाओं के लोक में विचरण करना)–कर्मवीर व्यक्ति कर्मनिष्ठ होता है, वह खयाली पुलाव पकाने में विश्वास नहीं रखता।
86. **खाक में मिलाना**–(बुरी तरह खत्म करना)–अमेरिका ने सद्दाम की सत्ता को खाक में मिला दिया।
87. **कोल्हू का बैल**–(हर समय ही कार्य करते रहना)–मज़दूर दिन भर कोल्हू का बैल बना रहता है, फिर भी दो समय की रोटी नहीं जुटा पाता।
88. **कीचड़ उछालना**–(बदनामी करना)–सज्जन व्यक्ति पर कीचड़ उछालना घोर पाप करना है।
89. **काम-तमाम करना**–(मार देना)–शिकारी ने एक ही गोली में शेर का काम-तमाम कर दिया।
90. **काँटे बिछाना**–(राह में संकट अथवा बाधा उत्पन्न करना)–किसी के लिए काँटे बिछाने वाला स्वयं सुखी नहीं रह सकता।
91. **ज़मीन पर पैर न पड़ना**–(अहंकार होना)–जब से पति अफ़सर बना है, रमा के तो पैर ही ज़मीन पर नहीं पड़ते।
92. **जान पर खेलना**–(ज़िंदगी जोखिम में डालकर कार्य करना)–हमें इस सत्य को कभी नहीं भूलना चाहिए कि एक सिपाही अपनी जान पर खेलकर देश की आज़ादी सुरक्षित रखता है।

93. **जी चुराना**–(परिश्रम से भागना)–पढ़ाई से जी चुराने वाले व्यक्ति के हाथ सफलता कभी नहीं लगती।

94. **छुपा रुस्तम होना**–(सामान्य-सा दिखने वाला लेकिन वास्तव में विशेष)–कक्षा में आया नया विद्यार्थी दिखने में साधारण था, मगर बोर्ड परीक्षा में प्रथम आकर उसने सिद्ध कर दिया कि वह छुपा रुस्तम था।

95. **छक्के छुड़ाना**–(बुरी तरह पराजित करना)–कारगिल युद्ध में भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तानी सैनिकों के छक्के छुड़ा दिए।

96. **चिकनी-चुपड़ी बातें करना**–(खुशामद करना)–प्रत्येक कार्यालय में कुछ ऐसे कर्मचारी अवश्य होते हैं, जो काम नहीं करते। फिर भी चिकनी-चुपड़ी बातें करके अफ़सर को प्रसन्न रखते हैं।

97. **चोली-दामन का साथ होना**–(अटूट संबंध होना)–जिस मित्र के साथ चोली-दामन का साथ हो, उसे भूलना आसान काम नहीं होता।

98. **चैन की बंसी बजाना**–(आनंदमग्न रहना)–काश! आज भारत में रामराज्य होता, तो लोग चैन की बंसी बजाते नज़र आते।

99. **चाँदी होना**–(बहुत लाभ होना)–जब से वह मुंबई जाकर गायिका बनी है, तब से उसकी चाँदी हो गई है।

100. **चिकना घड़ा**–(असर न होना)–वह रोज़ कक्षा में पिटता है, मगर फिर भी नहीं पढ़ता, लगता है चिकना घड़ा है।

101. **घड़ों पानी पड़ना**–(अपमानित होना)–सरेआम रिश्वत लेते पकड़े जाने से कमल पर घड़ों पानी पड़ गया।

102. **घोड़े बेचकर सोना**–(निश्चिंत होना)–बरात के विदा होने पर वधू पक्ष के लोग घोड़े बेचकर सो गए।

103. **टाँग अड़ाना**–(हस्तक्षेप करना)–यदि तुम किसी के काम नहीं आ सकते, तो बनते काम में टाँग अड़ाने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है।

लोकोक्तियाँ

लोकोक्ति लोक + उक्ति से मिलकर बना है जिसका अर्थ है लोक में प्रचलित उक्ति। वास्तव में लोकोक्ति पूरा वाक्य होती है। इसके प्रयोग से भाषा का सौंदर्य प्रभावशाली एवं विलक्षण हो जाता है।

मुहावरे और लोकोक्ति में अंतर–

1. 'मुहावरा' वाक्य का एक अंश होता है, जबकि 'लोकोक्ति' उपवाक्य या पूर्ण वाक्य होती है।
2. 'मुहावरे' में वाक्य के अनुसार परिवर्तन हो जाता है, जबकि 'लोकोक्ति' को ज्यों का त्यों लिखा जाता है।
3. 'मुहावरा' वाक्य में चमत्कार उत्पन्न कर उसे प्रभावशाली बनाता है, जबकि 'लोकोक्ति' का प्रयोग वाक्य के अंत में किया जाता है।

लोगों द्वारा अनुभव के आधार पर कही गई उक्तियाँ या कहावतें लोकोक्तियाँ कहलाती हैं।

1. **जैसा देश वैसा भेष**–(जिस स्थान पर रहो, वैसे ही रिवाज़ों का पालन करो)–गाँव में रहकर विदेशी रंग-ढंग अपनाओगे, तो निंदा के पात्र बनोगे, क्योंकि उचित यही है–जैसा देश वैसा भेष।
2. **होनहार बिरवान के होत चीकने पात**–(योग्य व्यक्तियों की योग्यता का परिचय बचपन में ही नज़र आ जाता है)–चंद्रशेखर आज़ाद ने बचपन में ही विदेशी सत्ता का विरोध कर देशप्रेम का परिचय दे दिया था। सच है–होनहार बिरवान के होत चीकने पात।
3. **हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और**–(कथनी और करनी में अंतर होना)–यह व्यक्ति जो कहता है, करता उसके विरुद्ध है। बस-यही समझ लो, हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और हैं।
4. **हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा होय**–(बिना किसी खर्च के श्रेष्ठ काम होना)–दीनदयाल जी के तो भाग्य ही खुल गए। लड़के वाले बेटी को देखने आए और अँगूठी पहना साथ ही ले गए। न विवाह का खर्च, न बरात की आवभगत करनी पड़ी। इसे कहते हैं–हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा।
5. **अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग**–(अपनी ही बात कहना)–महिला अधिकारों पर हुई सभा में कोई निर्णय न हो सका, क्योंकि सभी महिलाएँ अपनी-अपनी डफली अपना-अपना राग अलापती रहीं।
6. **ढाक के तीन पात**–(स्थिति का पहले जैसा ही बुरा होना)–पिता ने सौरभ को मेहनत करने के लिए खूब समझाया। मगर हालात पर नज़र डालिए, तो वही ढाक के तीन पात।
7. **अधजल गगरी छलकत जाए**–(कम ज्ञानी अधिक अहंकारी होता है)–मोहनलाल दसवीं फ़ेल है, किंतु टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में गिट-पिट करके रोब जमाना चाहता है। सच ही कहा गया है, अधजल गगरी छलकत जाए।
8. **आए थे हरिभजन को ओटन लगे कपास**–(लक्ष्य छोड़ व्यर्थ के कार्यों में उलझना)–मैं दिल्ली पढ़ने आया था, मगर साथियों को रोज़ तीन-चार घंटे क्रिकेट खेलते देखकर पढ़ाई छोड़ दी और स्वयं भी रोज़ क्रिकेट खेलने लगा। यह तो वही बात हुई–आए थे हरिभजन को ओटन लगे कपास।
9. **ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डर**–(यदि चुनौती स्वीकार कर ली, तो मुसीबतों से क्या डरना)–जब सोच लिया कि समाज सेवा करनी है, तो संकटों व लोगों के व्यंग्य बाणों को तो सहना ही पड़ेगा क्योंकि ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डरना।
10. **एक तो चोरी ऊपर से सीना जोरी**–(अपराधी होकर भी अकड़ना)–दुकानदार ने सौदा कम तौला, पर पैसे पूरे माँगने लगा। पिता जी ने समझाना चाहा, तो अकड़ने लगा। इसे कहते हैं, एक तो चोरी ऊपर से सीना जोरी।
11. **एक पंथ दो काज**–(एक कार्य से दोहरा लाभ)–इस काम में पैसा भी है और यश भी, सचमुच यह एक पंथ दो काज वाली बात है।
12. **ऊँची दुकान फीका पकवान**–(अधिक दिखावा करना, मगर वास्तविकता कम)–दीपावली पर 'अनुपमा' दुकान से मिठाई लाई। सोचा था इतना नाम है, तो मिठाई बहुत अच्छी होगी। मगर बिलकुल बेकार थी। सच कहा है–ऊँची दुकान फीका पकवान।

13. **ऊँट के मुँह में जीरा**–(जरूरत की अपेक्षा बहुत कम मिलना)–मिल मालिक रामचरण से 8-9 घंटे काम लेता है, मगर मज़दूरी इतनी कम कि उसे रोटी-कपड़ा जुटाने में भी मुश्किल होती है। क्या यह ऊँट के मुँह में जीरा नहीं हुआ ?
14. **आम के आम गुठलियों के दाम**–(दोहरा लाभ होना)–अध्ययन करते रहने से समय भी कटता है तथा ज्ञान भी बढ़ता है। आम के आम गुठलियों के दाम इसी को तो कहते हैं।
15. **आप भले तो जग भला**–(अच्छे व्यक्ति को संसार का प्रत्येक व्यक्ति ही अच्छा लगता है)–सोमा बुआ को मुहल्ले भर के लोगों में से किसी में बुराई नज़र नहीं आती, चाहे कोई कितना भी दुष्ट क्यों न हो। सच कहा गया है–आप भले तो जग भला।
16. **अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत**–(अवसर निकलने के बाद पश्चाताप से क्या लाभ)–तुम साल भर तो पढ़े नहीं, अब परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने पर रो रहे हो। भाई, अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।
17. **एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है**–(एक बुरा व्यक्ति सारे समाज को बदनाम कर देता है)–दिनेश का चाल–चलन ठीक नहीं था, उसकी संगति में केशव भी बिगड़ गया। सही कहते हैं, एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।
18. **अंधा बाँटे रेवड़ी, फिर-फिर अपनों को दे**–(अपने ही लोगों को लाभ पहुँचाते रहना)–जनता से वायदे कर वोट माँगकर नेता ने पद पाया, मगर पदासीन होते ही लाभ अपने सगे-संबंधियों को पहुँचाना शुरू कर दिया। सच कहा गया है–अंधा बाँटे रेवड़ी, फिर-फिर अपनों को दे।
19. **अंधी पीसे कुत्ता खाए**–(कमाई कोई करे, मगर लाभ दूसरा उठाए)–फ़ैक्ट्री में दिन–रात काम मज़दूर करता है, जिसे भरपेट रोटी लायक पैसा भी नहीं मिलता। मगर मिल मालिक मज़दूरों की मेहनत के बल पर लाखों-करोड़ों जोड़ता है। यह तो वही बात हुई, अंधी पीसे कुत्ता खाए।
20. **अंधा क्या चाहे दो आँखें**–(अभिलाषा पूर्ति का इच्छुक)–अरुण के लेखों से समाचार-पत्र के संपादक इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने घर बैठे ही उसे नौकरी का निमंत्रण दे डाला। इसे कहते हैं–अंधा क्या चाहे दो आँखें।
21. **जैसी करनी वैसी भरनी**–(कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है)–रिश्वत लेकर लाखों रुपया जोड़कर भाई ऐश करते रहे। अब पकड़े गए, तो जेल में सड़ना ही होगा। कहते हैं–जैसी करनी वैसी भरनी।
22. **जिसकी लाठी उसकी भैंस**–(शक्तिशाली की ही जीत होती है)–हमारे मास्टर जी भला गाँव के ज़मींदार के सामने क्या चुनाव जीतेंगे? सुना नहीं है आपने–जिसकी लाठी उसकी भैंस।
23. **जल में रहकर मगर से बैर**–(समाज में रहते हुए शक्तिशाली लोगों से शत्रुता रखना नुकसानदायक ही है)–इस इलाके में फ़ैक्ट्री लगानी है, तो पहले सरकारी अफ़सरों से झगड़ा छोड़ कर मेल–जोल बढ़ाओ, क्योंकि जल में रहकर मगर से बैर नहीं रखा जा सकता ।
24. **घर का भेदी लंका ढाए**–(आपसी फूट से हानि होती है)–यदि तात्या टोपे का मित्र मानसिंह अंग्रेज़ों को उनके छिपने का स्थान ना बताता, तो अंग्रेज़ वीर तात्या टोपे को कभी न पकड़ पाते। सच ही कहा है–घर का भेदी लंका ढाए।

25. **गंगा गए तो गंगादास, जमुना गए तो जमुनादास**–(अस्थिर चित्त का वह व्यक्ति, जो परिस्थिति देखकर अपनी राय बदल ले)–आजकल नेता व्यक्तिगत लाभ आगे आते ही बहाना बना पार्टी बदल लेते हैं। इन जैसों के लिए ही कहा गया है–गंगा गए तो गंगादास, जमुना गए तो जमुनादास।

26. **गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है**–(दोषी के साथ निर्दोष का फँसना)–अपने मालिक के घर चोरी करनेवाले अमित के साथ उसका निर्दोष मित्र विकास भी पकड़ा गया। सच ही कहा है–गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है।

27. **खरबूज़े को देख खरबूज़ा रंग बदलता है**–(संगति का प्रभाव व्यक्ति पर अवश्य पड़ता है)–जब से श्रुति मुंबई पढ़ने गई है, उसके पहनने-ओढ़ने का ढंग ही बदल गया है। सही कहा है– खरबूज़े को देख खरबूज़ा रंग बदलता है।

28. **खोदा पहाड़ निकली चुहिया**–(परिश्रम अधिक, लाभ कम)–हमने व्यापार में लाखों रुपए यह सोचकर लगा दिए कि हर महीने अच्छा लाभ कमाएँगे, पर मुश्किल से तीन-चार हज़ार रुपया ही कमा पाते हैं। यह तो खोदा पहाड़ निकली चुहिया वाली कहावत हो गई।

29. **कंगाली में आटा गीला**–(दुखी पर अधिक विपत्तियाँ आना)–मोहन को दो महीने से वेतन नहीं मिला है, उस पर घर में मेहमान आ गए हैं। यह तो कंगाली में आटा गीला वाली बात हो गई।

30. **काठ की हाँड़ी बार-बार नहीं चढ़ती**–(बेईमानी बार-बार नहीं फलती)–रामनाथ रिश्वत लेकर काम करता था, मगर आज पकड़ा गया। कहते हैं न! काठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती।

31. **काला अक्षर भैंस बराबर**–(बिलकुल अनपढ़)–डाकिया दादी माँ को चिट्ठी पकड़ा गया। वे बेचारी उसे उलट-पलटकर पढ़ने की असफल कोशिश कर रही हैं जबकि उनके लिए काला अक्षर भैंस बराबर है।

32. **हाथ कंगन को आरसी क्या**–(प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं)–महात्मा जी के उपदेशों में अनमोल ज्ञान है, विश्वास न हो तो सुनकर देखिए। हाथ कंगन को आरसी क्या।

33. **सेवा करै सो मेवा पावै**–(सेवा का फल हमेशा अच्छा होता है)–यश की तरक्की का एक कारण यह भी है कि उसके साथ माता-पिता का आशीर्वाद हमेशा रहा है, क्योंकि वह उनका सम्मान करता है, दिन-रात देखभाल करता है, इसीलिए कहते हैं–सेवा करै सो मेवा पावै।

34. **सीधी उँगली से घी नहीं निकलता**–(ज़्यादा सीधापन भी किसी काम का नहीं होता)–व्यापार में तरक्की चाहिए तो चालाकी तथा चौकसी दोनों ही कलाएँ सीखनी होंगी। यहाँ सीधी उँगली से घी नहीं निकलता।

35. **सहज पके सो मीठा होय**–(धीरे-धीरे सहज-स्वाभाविक रूप से किए गए कार्य में ही मिठास होती है)–दीनानाथ जी बहुत निर्धन थे, मगर उन्होंने कठोर परिश्रम से एक-एक पैसा जोड़ा, व्यापार शुरू किया। अब व्यापार में मुनाफ़ा आने लगा है। ठीक ही कहा है–सहज पके सो मीठा होय।

36. **साँच को आँच नहीं**–(सच्चाई की राह पर चलने वाले को डरने की ज़रूरत नहीं)–सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र ने कितने कष्ट सहे, मगर सच की राह न छोड़ी। अंततः विजयश्री उन्हें ही मिली। सच ही कहा है–साँच को आँच नहीं।

37. **रस्सी जल गई, मगर ऐंठन न गई**–(कुछ भी न बचा, मगर अकड़ अब भी वही)–रामलाल की ज़मीन और मकान की सरकारी नीलामी तक हो गई, मगर अकड़ अब भी इतनी कि अपने आगे किसी को कुछ समझता ही नहीं, इसे कहते हैं, रस्सी जल गई मगर ऐंठन न गई।

38. **न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी**–(समस्या को जड़ से समाप्त करना)–जिस दौलत को लेकर दोनों भाई झगड़ते रहते थे, सेठ जी ने उसे एक अनाथाश्रम के नाम कर दिया। अब तो झगड़ा खत्म हो ही जाएगा, क्योंकि न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

39. **तेते पाँव पसारिए, जेती लाँबी सौर**–(सामर्थ्य के अनुसार खर्च करना)–पुत्री के विवाह पर अपनी शक्ति अनुसार ही खर्च करना। कर्ज़ लेकर खर्च करोगे, तो उम्र भर उसे ही चुकाते रहोगे। कहते हैं कि तेते पाँव पसारिए, जेती लाँबी सौर।

सूक्तियाँ

'सूक्ति' शब्द सु + उक्ति के मेल से बना है, जिसका अर्थ है–सुंदर उक्ति या कथन। सूक्तियों के प्रयोग से भाषा का सौंदर्य बढ़ जाता है।

विचार मंथन के बाद सारगर्भित शब्दावली में कहे गए, किसी सुगठित कथन को सूक्ति कहते हैं।

1. **मन के हारे हार है, मन के जीते जीत**–(मन की विजय से ही सफलता संभव है)–इस डर को निकाल दो कि तुम परीक्षा में प्रथम स्थान नहीं पा सकते, बल्कि दृढ़चित्त होकर परिश्रम करो कि तुम्हें सफलता पानी ही है, क्योंकि मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।

2. **पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं**–(परतंत्र व्यक्ति कभी सुखी नहीं रह सकता)–अंग्रेजी सत्ता से मुक्ति हेतु देशभक्तों ने प्राणों की बाज़ी लगा दी, क्योंकि वे जानते थे–पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।

3. **जहाँ सुमति तहाँ संपत्ति नाना**–(सद्बुद्धि से समस्त सुलभ हो सकता है)–धृतराष्ट्र ने दुर्योधन के कहने में आकर पांडवों को खांडवप्रस्थ दिया, जो कि बीहड़ वन था, किंतु पांडवों ने सुमति से उसे इंद्रप्रस्थ में बदल दिया। सच ही कहा गया है–जहाँ सुमति तहाँ संपत्ति नाना।

4. **दैव-दैव आलसी पुकारा**–(काम से जी चुराने वाला ही भाग्य की दुहाई देता है)–कर्मवीर सफलता की सीढ़ी चढ़ता जाता है, मगर आलसी भाग्य पर भरोसा कर बैठा रहता है और समय निकलने पर पछताता है। ऐसे ही लोगों के लिए कहा जाता है–दैव-दैव आलसी पुकारा।

5. **करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान**–(निरंतर परिश्रम करने से मूर्ख भी विद्वान बन सकता है)–नितिन कभी कक्षा में पास भी मुश्किल से होता था, किंतु उसने दिन–रात एक करके परिश्रम किया तथा कक्षा दस की बोर्ड परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सच ही कहते हैं–करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।

6. **सबै दिन होत न एक समान**–(सदा एक-सा नहीं रहता)–राघव, दुख के इन क्षणों में आत्मविश्वास मत खोना, क्योंकि अच्छा समय शीघ्र ही आएगा। कहते हैं–सबै दिन होत न एक समान।
7. **परहित सरिस धरम नहिं भाई**–(परोपकार सर्वोच्च धर्म है)–सज्जन पुरुष धन का संग्रह मात्र इसीलिए करते हैं, ताकि आवश्यकता पड़ने पर उसे परोपकार में लगाया जाए, क्योंकि वे इस कथन के मर्म से पूर्णतः परिचित होते हैं–परहित सरिस धरम नहिं भाई।

मुख्य बातें–
- साधारण अर्थ छोड़कर विशिष्ट अर्थ प्रकट करने वाले वाक्यांश मुहावरे कहलाते हैं।
- लोगों के अनुभव के आधार पर कही गई उक्तियाँ लोकोक्ति कहलाती हैं।
- मुहावरा वाक्य का अंश होता है जबकि लोकोक्ति पूरा वाक्य होती है।
- विचार मंथन के बाद सारगर्भित शब्दावली में कहे गए किसी सुगठित कथन को सूक्ति कहते हैं।

समझ की परख

क. दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. मुहावरे तथा लोकोक्ति में दो अंतर लिखिए।
2. सूक्ति क्या है?

ख. वाक्यों को मुहावरों तथा लोकोक्तियों द्वारा पूरा कीजिए–

1. सरकारी कार्यालयों में काम करवाना टेढ़ी .... है लेकिन धैर्य से सब कुछ किया जा सकता है।
2. विश्व कप क्रिकेट मैच में इंग्लैंड से भारत की टीम को मुँह ....।
3. युद्ध में पीठ .... कायरों का काम है।
4. मिठाई देखते ही बच्चों के मुँह ....।
5. पिता जी ने मेरे अंक देखे तो लाल ....।
6. नौकर अंग्रेज़ी अख़बार उठाकर उसे पढ़ने की कोशिश में जुटा है, पर उस बेचारे के लिए तो काला ....।
7. पुलिस को गली में घुसता देख चोर नौ- ....।
8. राष्ट्र की सुरक्षा के लिए यह आवश्यक है कि हम सब प्राणों ....
9. वह आठवीं फ़ेल है, किंतु पुस्तकीय ज्ञान की बड़ी-बड़ी बातें करता है। इसे कहते हैं अधजल ....।

ग. कॉलम 'क' तथा 'ख' को मिलाइए–

क	ख
चाँदी होना	बदनामी करना
गले का हार	टाल-मटोल करना
अंधे की लकड़ी	अत्यंत प्रिय
अगर-मगर करना	एकमात्र सहारा
कीचड़ उछालना	बहुत लाभ होना

घ. मुहावरों, लोकोक्तियों तथा सूक्तियों के अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए–

1. दैव-दैव आलसी पुकारा ....
2. आप भले तो जग भला ....
3. पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं ....
4 उलटी गंगा बहाना ....
5. जैसी करनी वैसी भरनी ....
6. घोड़े बेचकर सोना ....
7. पत्थर की लकीर होना ....

ङ. (i) मुहावरों के सही अर्थ को रेखांकित कीजिए–

1. निन्यानवे के फेर में पड़ना–
   अ. गिनती गिनना ब. धन एकत्र करने में पड़े रहना
   स. मुसीबत में आना द. भारी संकट आ पड़ना
2. छुपा रुस्तम–
   अ. विशेष व्यक्ति ब. सामान्य व्यक्ति
   स. सामान्य-सा दिखने वाला वास्तव में विशेष द. दिखने में विशेष किंतु साधारण
3. घाव हरे होना–
   अ. दुखों को याद करना ब. दुखों का बढ़ना
   स. बीते दुख याद आना द. घाव ताज़ा होना
4. हवा लगना–
   अ. सरदी लगना ब. बिगड़ना
   स. संगत का असर होना द. तेज़ होना

(ii) सही उत्तर सामने लिखिए–

1. न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी– लोकोक्ति का अर्थ है–

अ. समस्या खड़ी करना | ब. समस्या को जड़ से खत्म करना | ....

स. बाँस की बाँसुरी बनाना | द. काम बिगड़ जाना

2. समय सदा एक-सा नहीं रहता– अर्थ वाला लोकोक्ति है–

अ. आँखें खुलना | ब. काल्ह करै सो आज कर | ....

स. सबै दिन होत न एक समान | द. होश आना

3. सामर्थ्य के अनुसार खर्च करना– लोकोक्ति का अर्थ है–

अ. आमदनी अठन्नी खर्चा रुपया | ब. धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का | ....

स. तेते पाँव पसारिए जेती लांबी सौर | द. डूबते को तिनके का सहारा

4. कथनी और करनी में अंतर होना– लोकोक्ति का अर्थ है–

अ. साँच को आँच नहीं | ब. काला अक्षर भैंस बराबर | ....

स. जिसकी लाठी उसकी भैंस | द. हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और

5. अपराधी होकर भी अकड़ना– लोकोक्ति का अर्थ है–

अ. अंधी पीसे कुत्ता खाए | ब. एक तो चोरी ऊपर से सीनाज़ोरी | ....

स. घर का भेदी लंका ढाए | द. उपर्युक्त में से कोई नहीं।